अग्रबन्धु

संगठन का (प्रस्ताविक) प्रतीक

'संगठन ही शक्ति है'

विशेषांक सम्पादिका

डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल पी. एच-डी.
जबलपुर

प्रधान सम्पादक

With best Compliments from :

Narmada Industries

Quality Manufacturers of all Aluminium & Steel Reinforced Conductors.

Saraswati Sadan, 3, Shamla Road

Bhopal 462002

WORKS :

6/1 Industrial Estate

Govindpura, BHOPAL

Phone : Factory 61661, Office : 5915, 3838

अ० भा० एवं प्रान्तीय अग्रवाल सम्मेलन

के इन्दौर अधिवेशन पर

हार्दिक अभिनंदन

भारत पिक्चर्स लि. भोपाल

डिस्ट्रिब्यूटर एवं एक्जीबीटर्स

भारत टाकीज & भोपाल टाकीज

भोपाल

आगामी आकर्षण :—चरस, वैराग, हेरा फेरी, ड्रीम गर्ल
चम्बल की कसम, संग्राम, नौकरी, दीवानगी,
शंकरदादा, संकोच, दो मुसाफिर आदि

दूरभाष :

भारत टाकीज : ३०३२

भोपाल टाकीज : ३१५२ तार : **रघुनन्दन अग्रवाल**

मुख्य कार्यालय : ३६०९ भारतटाक मैनेजिंग डायरेक्टर

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन एवं मध्य प्रदेश
अग्रवाल महासभा के संयुक्त अधिवेशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

जनता के विशेष आग्रह पर
तीन इक्का ब्रान्ड

तुवर दाल

ग्राम - तीन इक्का

अब ५० किलो के पेकिंग में उपलब्ध

निर्माता : महादेव लक्ष्मीनारायण
सयोगितागंज, इन्दौर फोन फेक्ट्री: ७०७२-७९७० ऑ. ३३८३३

सामाजिक विचार-प्रेरक मासिक

अग्रबन्धु

वर्ष १६] मई १९७६ [अङ्क ८

अग्रबन्धु मासिक कार्यालय
प्रयाग नरायन मार्ग, (रावतपाड़ा), आगरा
फोन : ६३६०६ पी० पी०

वार्षिक १०) एकप्रति १)

मू० पू० प्रधान संरक्षक
सेठ बिशम्भर नाथ 'भगत'
कुन्ज बिहारीलाल अग्रवाल

प्रधान संरक्षक
आदिराम सिंघल
भू० पू० सदस्य विधान सभा, आगरा

मुख्य संरक्षक
बद्रीप्रसाद अग्रवाल, जबलपुर
श्रीभगवान अग्रवाल, आगरा

विशेषांक सम्पादिका
श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल
पी० एच-डी०, जबलपुर

सम्पादक मण्डल
डा० भगवतशरण अग्रवाल
पी-एच-डी०, अहमदाबाद
त्रिलोक गोयल, अजमेर
द्वारिका प्रसाद गर्ग, कलकत्ता
नरेन्द्रमोहन अग्रवाल 'पागल', नागपुर
दुलीचन्द अग्रवाल 'शशि', हैदराबाद
घनश्याम दास गुप्ता, भोपाल
राजकुमार अग्रवाल, आगरा

घर-घर की ज्योति सम्पादिका
श्रीमती अलका गोयल एम० ए०

नन्ने-मुन्ने सम्पादक
सुनिल भैय्या बी० एस-सी०

प्र० सम्पादक प्रकाश बंसल 'बन्धु'

व्यवस्थापक
दीनानाथ गर्ग, फिरोजाबाद
विमल बंसल, अनिल बंसल

सम्पादकीय

सहृदय पाठकों !

भाई प्रकाशचंद जी की उदारता एवं स्नेह का प्रतीक यह विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। इसमें सब कुछ तो उन्हीं का है, बस नाम वह मेरा रख देते हैं। ये है संगठन का प्रसाद जो एक भाई बहन को प्रदान करने में गर्व का अनुभव करता है।

भाइयों ! संगठन ही शक्ति है इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता। असंगठित समाज के फलस्वरूप ही हमारा समाज कुरीतियों, दहेज, ईर्ष्या, द्वेष, आपसी कलह जैसी गन्दगी में फंसकर छटपटा कर, तड़प कर, कराहते हुए अपने जीवन की भिक्षा मांग रहा है। उसकी दशा उस हरिण के समान हो रही है जो आंशिक रूप से घायल दवा की खोज में भागता चला जा रहा है। शिकारी उसके पीछे लगे हैं अतः कंटीली झाड़ियों में ही वह अपना जीवन बचाने को आतुर, कांटों के बीच स्वयं को छोड़ देता है। समाज भी आज इसी प्रकार अपने ही बनाए कंटीले जालों में फसता हुआ, घायल, उत्पीड़ित होकर कराह तो रहा है, परन्तु बचने का कोई अन्य साधन न ढूंढ़ कर, व्यक्तिगत प्रलोभन और स्वार्थ रूपी कांटो में उलझता चला जा रहा है।

यह संभव नहीं कि समाज अपनी इस दुर्दशा के प्रति सावधान न हो, परन्तु सब कुछ जानते हुए भी वह अकेला कुछ करने में असमर्थ है। इसलिये चुप बैठा रहा। कहा भी है, "अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा ?" अतः संगठन के रूप में जब एक मंच पर खड़े होने का आह्वान अखिल भारतीय सम्मेलन ने किया, तो भटकते हुए, कुछ कर दिखाने की इच्छा रखते हुए लोगों ने इसे ईश्वर का वरदान समझकर इसका हृदय से स्वागत किया। उनके अंधेरे जीवन में संगठन ने मानो चेतना की नई लहर उत्पन्न कर दी, और वे नयी आशा, नई दिशादृष्टि लेकर इसकी ओर बड़ी उम्मीद से आगे बढ़ रहे हैं।

अपवाद सदा से रहते आए हैं और रहेंगे। इसी प्रकार 'असंतुष्ट' भी सदा रहते हैं, बने रहेंगे। परिणामस्वरूप बहुत सी, सभाएं जो अपने व्यक्तिगत संगठन को ही अधिक अहमियत देना चाहती हैं, जिनके लिए अपना सीमित दायरा ही सब कुछ, सर्वाधिक श्रेष्ठ है, वह अभी भी इस संगठन को भुलावा, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का साधन मात्र प्रचार कर रहे हैं, किन्तु समय उन्हें बता देगा कि सम्मेलन क्या है, और उसकी क्या सामर्थ्य है ? प्यारे भाइयों हम अपने घरौंदे में तो सदा से अकेले रहते

आए हैं आज एक होने का मौका मिला है तो क्यों न यह खेल खेल कर भी देख लें ? एक इम्तहान ही सही, फेल हों या पास इससे कोई समाज का अहित तो नहीं होने वाला है ? अतः आपसे अनुरोध है कि हमारे कदम जिस उत्साह में उठे हैं उसमें आपके दो शब्दों के सहारे की आवश्यकता है। विश्वास मानिए हम वह सब कर दिखाएंगे जिसका हमने वादा किया है।

संगठन कभी निष्फल नहीं होता बशर्ते उसके उद्देश्य स्वच्छ हों, कार्यकर्ता सबल हों। आज समस्त अग्रवालों की आंखें सम्मेलन एवं संगठन पर आशा भरी दृष्टि से लगी हुई हैं। किन्तु यह संगठन तभी सफल हो सकता है जब आप सबका सहयोग हमें मिलता रहे तन, मन, धन से। सुधार आप भी चाहते हैं, हम भी चाहते हैं, फिर देरी क्यों, झिझक क्यों, हिचकिचाहट क्यों ? एक कदम बढ़ाइए और लक्ष्मण रेखा पार। किसी शायर ने कहा है—

शहरे अलम से शहरे तरब तक, एक कदम की दूरी है।
फिर भी दूरी तय नहीं होती, हाय ! ये क्या मजबूरी है।।
हमसे जाया न गया उनसे आया न गया।
फासला प्यार का दोनों से मिटाया न गया।।

बहुत थोड़ा सा फासला हमारे आपके बीच में है, केवल विचारों का, और मंजिल की तरफ बढने वाली राहों का। बाकी उद्देश्य एक ही है खुदा के दर्शन का याने कुरीतियों से लड़ने का। फिर क्यों न हम एक बार अपने सभी व्यक्तिगत राग द्वेषों से ऊपर उठकर एक जुट होकर इन बुराइयों को जड़-मूल से ऐसा उखाड़ फेंकने की कोशिश करें कि हमारी आने वाली पीढ़ी यह गर्व से कह सके—

ऐ सितारों कल तक थे तुम बुलन्द।
आज मेरे हौसले तुमसे भी ऊंचे हो गए।।

हमारे कदम अविरल गति से आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। कोई सन्देह नहीं कि मंजिल नहीं मिले। इस राहे वफा में आपसे अनुरोध है कि सिर्फ इतना करम करें कि राह के रोड़े न बनें, कार्य करने दें। भूलें हों तो उन्हें क्षमा कर उत्साहित करते रहें तो वह दिन भी सामने आ जायगा जब आप स्वयं ये गर्व से कहते पाए जाएंगे—

ये मंजिल से कह दो मुझे अब न ढूंढ़े।
मेरी रहबरी खुद जुनू कर रहा है।।

भाई प्रकाशचन्द जी के सहयोग से इस अंक को अधिक से अधिक सुन्दर बनाने का प्रयास किया गया है। फिर भी इसमें कुछ कमी रह गई हो तो वह मेरा अपना दोष है, उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं। इसमें जो आपको अच्छा लगे वह भाई प्रकाशजी, लेखक बन्धु तथा सम्पादक मण्डल का परिश्रम है, इसके लिए वह सभी बधाई के पात्र हैं।

--स्वराज्यमणि

संगठन के प्रेरणा स्रोत
आदि पितामह अग्रसेन

— बृजलाल चौधरी, मद्रास
कोषाध्यक्ष अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

भारत में अग्रवालों की संख्या दो करोड़ से भी ऊपर ही बताई जाती है। यह संख्या नारवे, डेनमार्क तथा स्वीडन इन तीनों राष्ट्रों की सम्मिलित जनसंख्या के बराबर है। अग्रवाल जाति के लोग भारत में चारों तरफ फैले हुए हैं व इनमें से बहुत से तो व्यापार-धन्धों में लगे हुए है व कई उच्च सरकारी नौकरियों पर पदस्थ हैं। कई अग्रवाल घराने बड़े-बड़े उद्योगों, कारखानों के मालिक हैं तथा देश के उत्पादन व श्रीवृद्धि में हाथ बटा रहे हैं तथा अन्य अग्रवाल वकील, डाक्टर, केमिस्ट तथा तकनीकी क्षेत्रों की शोभा बढ़ा रहे हैं। इसी अग्रवाल समाज ने देश को लाला लाजपतराय, सर शादीलाल, श्री जमनालाल बजाज, भारेतन्दु हरिशचन्द्र, श्री श्रीप्रकाश, श्री वासुदेवशरण अग्रवाल जैसे कर्मठ व विद्वान नेता व अन्य महान् व्यक्तित्व प्रदान किये हैं जिन्होंने भारतीय आकाश को अपने उत्कर्ष व आभा से आलोकित किया है तथा कई अब भी आलोकित कर रहे हैं। अग्रवाल समाज के लोग हिन्दुस्तान में इधर-उधर चारों दिशाओं में बिखरे हुए हैं व देश के कोने कोने में छाये हुए हैं। वे जहां व जिस प्रान्त में जाकर बस गये हैं उसी प्रान्त को अपना घर मानकर उस प्रान्त की व समूचे देश की उन्नति की साधना में लगे हुए हैं फिर भी देखने में यह आता है कि समस्त अग्रवाल जाति में चाहे वे देश के किसी भी कोने में बसे हुए क्यों न हों, विवाहादि व अन्य सामाजिक रीतिरिवाज की एक ही अन्तरंग धारा बहती है जिसे देखकर बरबस यह भान होता है कि ये सारे अग्रवाल एक ही पिता की सन्तान हैं। एक ही वृक्ष की दर-दर फैली शाखायें हैं। उदाहरण के लिये इस जाति के विवाहोत्सव पर होने वाली प्रथा-परम्पराओं का अगर अध्ययन किया जाय तो दो-चार बातें हर अग्रवाल परिवार में इस तरह अनिवार्य प्रतीत होती है जैसे चन्द्रमा के पीछे चांदनी।

प्रथम तो यह कि कोई भी अग्रवाल युवक जब वर के रूप में वधू के घर तोरण मारने जाता है तो वह राजसी वेष-भूषा में जाता है व उसके सिर पर छत्र व सामने चंवर डुलाया जाता है।

द्वितीय अनिवार्य प्रथा इस समाज में यह पायी जाती है कि विवाह मण्डप में बैठते वक्त कन्या के लिए ननिहाल या मामा के घर से आई हुई चीर (सफेद लहगा) तथा चूनड़ी पहनाये जाते हैं जिसका रंग सर्प की कांचली के समान होता है। इस

प्रथा से इस बात की पुष्टि होती है कि वधु हमेशा नागकन्या के रूप में ही विवाह मण्डप में उपस्थित होती है। इतना ही नहीं बल्कि विवाह स्नान व कर्णच्छेदन संस्कार के समय जो मांगलिक स्नान वधू को कराया जाता है उसमें भी वधू के जूड़े को सिर पर केंचुली मारकर बैठे हुए सर्प की भाँति ही संवारा जाता है।

तृतीय यह भी देखने में आया है कि विवाह के समय वर-वधू घरवा पूजा अवश्य करते हैं। यह घरवा सर्प की बांबी के आकार का बना होता है। वधू जब प्रथम बार पति गृह के लिए बिदा होती है तब यह घरवा (जो अधिकतर मिट्टी का बना होता है व जिसके भीतर फणि-मणि के चिन्ह स्वरूप एक दीपक जलता रहता है) कन्या को दहेज के रूप में अवश्य दिया जाता है। यह प्रथा करोड़पति अग्रवाल से लेकर गरीब से गरीब अग्रवाल घराने में भी मानी जाती है। हजारों वर्षों से हर अग्रवाल परिवार में ये प्रथाएं मान्य हैं व श्रद्धापूर्वक हर जगह निबाही जाती हैं इससे यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि इन प्रथाओं का मूल श्रोत व कारण क्या है। इन बातों को जानने के लिये हमें अग्रवंश की उत्पत्ति व विकास की ओर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है।

खेद का विषय है कि अग्रवाल जाति का आज जो विस्तृत व समृद्धिशाली रूप हमारी आँखों के सामने है उस शक्तिशाली व वैभवशील समाज के अतीत का इतिहास आज भी विस्मृति या अज्ञानता के गहरे-गह्वर में दबा हुआ है। इस जाति के जन्म-उत्थान या पतन के विषय में वर्तमान में अधिकृत रूप से कोई कुछ भी नहीं बता सकता। आज तक न तो सरकारी तौर पर और न अग्रवाल जाति की तरफ से ही इस वंश का कोई प्रामाणिक इतिहास जनता के सामने पेश किया गया है। यद्यपि हमारी सरकार ने समय-समय पर आदिवासी, डोंग, नागा, सन्थाल व अन्य जातियों के विषय में छानबीन करके उन जातियों का प्रमाणिक इतिहास व्यक्त किया है। फिर भी देश की इतनी बड़ी व सम्पन्न जाति के असली इतिहास के बारे में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई।

महाराज अग्रसेन एक महान योद्धा, मेधावी राजा, उत्कृष्ट कला प्रेमी, उच्च कोटि के प्रबन्धक व निर्माणकर्ता तथा एक सच्चे कर्मयोगी थे। कहा जाता है कि उन्होंने जो अठारह यज्ञ किये उनमें उन्हें चक्रवती राजा का पद प्राप्त करने के लिये भीषण नरसंहार करना पड़ा व असंख्य पशुओं की बलि देनी पड़ी। इसकी उनकी आत्मा पर बहुत तीव्र प्रतिक्रिया हुई व मानव कल्याण को चाहने वाला उनका हृदय इन हिंसात्मक कार्यों के प्रति विद्रोह कर उठा। उन्होंने अठारहवें यज्ञ को बीच में ही बन्द करा दिया व जब ऋषि मुनियों ने तथा भाई-बन्धुओं ने यह प्रश्न उठाया कि क्षत्रिय जाति में रहते हुए वे अगर हिंसा से विमुख हो जायेंगे तो यह बढ़ती हुई क्षत्रियों की बेल किसकी व कौन सी भूमि पर छा सकेगी तथा अग्रवंशी क्षत्रिय क्या खाकर जीवन यापन करेंगे।

महाराज अग्रसेन ने तुरन्त ही सारी की सारी अग्रेय जाति को वेश्य-वर्ण अपनाने का आदेश दिया व तलवार की नोक से जीवन के साधन प्राप्त करने की बजाय हल जोतने तथा कृषि व वाणिज्य कर्म करके जीवन यापन करने की कला का प्रचार किया। वंश को विलुप्त होने से बचाने के लिये महाराज अग्रसेन ने स्वगोत्र को छोड़कर स्वजाति की किसी भी कन्या से पाणीग्रहण करने की छूट दी। यही कारण है कि आज अग्रवंश की बेल समस्त भारत में फलों व फूलों से लादी हुई है। अन्य समस्त क्षत्रिय जातियाँ आज नष्टप्राय हो गई हैं। परन्तु अग्रेय क्षत्रिय जाति महाराज श्री अग्रसेन की दूरदर्शिता व मानवता-प्रेम के कारण हर तरह से पल्लवित व पुष्पान्वित हुई है।

विदेशी इतिहासकारों ने ग्रीक व रोमन सभ्यता को ही मानव समाज की आदि सभ्यता माना है व उस सभ्यता के उत्कर्ष व पतन के बारे में बड़े-बड़े ग्रन्थ रचे हैं। अगर महाराज अग्रसेन के कार्यकाल का सही पता चल जाता है तो भारतीय इतिहास में उस समय की संस्कृति व सभ्यता का सच्चा दिग्दर्शन कराया जा सकता है जो मानव जाति को अपने उत्कर्ष के कारण चमत्कृत करती थी व आज भी जिसे जानकर मानव जाति प्रेरणा प्राप्त कर सकती है।

ग्रीक इतिहास का अर्थ १५०० वर्ष ईसा पूर्व होता है व रोमन इतिहास का ८०० वर्ष ईसा से पहले।

ग्रीक व रोमन सभ्यता का ह्रास इसलिये नहीं हुआ कि उन सभ्यताओं में वीरता या पौरुष की कमी थी पर इसलिये हुआ कि उनमें निरंकुशता की अधिकता थी, जर-जमीन-जेवर जबर्दस्ती लूटमार के बल पर हड़पने की प्रवृति का बाहुल्य था। इसके बजाय महाराजा अग्रसेन ने जो सभ्यता कायम की थी उसमें लूटमार, अपहरण, हिंसा को हेय ठहराकर व्यापार में न्यायोचित लाभ द्वारा व श्रम द्वारा खेती-बाड़ी करके जीवन-यापन करने की महत्ता का पाठ पढ़ाया गया था। यही कारण है कि अग्रवंश आज न केवल व्यापार में बल्कि दान-धर्म व अन्य सामाजिक कार्यों में भी भारत में सब वंशों से अधिक समुन्नत है। अग्र वंश की आत्मा का पतन नहीं होने पाया। श्रम से जो अर्जित किया जाता है उसे देश व समाज कल्याण के कार्यों में व्यय करना ही उनका ध्येय है व इसीलिये अग्रवाल जाति की विभूतियाँ मानव समाज में श्रद्धास्पद बनी हुई है।

इतिहास बार-बार इस बात की गवाही देता आ रहा है कि संगठन के अभाव में ईर्ष्या, द्वेष, आपसी कलह के दुर्भाव के कारण भारत को ही नहीं अनेकानेक जातियों, उपजातियों व राष्ट्रों का पतन तथा विनाश किया है। अगर अग्रवाल जाति संगठन को मजबूत करते हुए इन दुर्गुणों से सावधान रहे व आपस में मातृप्रेम, सद्भावना, एकता, विनम्रता के व्यवहार को कायम रखते हुए नैतिकता व श्रमपूर्वक धनोपार्जन की चेष्टा करती रहे तो इस जाति का भविष्य पूर्व काल की भाँति उज्जवल है और रहेगा।

'असंगठित समाज राष्ट्रोन्नति में घातक'

—श्रीकृष्ण मोदी, संसद सदस्य
अध्यक्ष अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

किसी भी देश की समृद्धि, उसका उत्थान और पतन संगठित समाज अथवा सामाजिक एकता पर निर्भर करता है। हमारे समाज में विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, विश्वास परम्पराएँ और रीतिरिवाज प्रचलित हैं। इन भिन्नताओं और मतभेदों के होते हुए भी हमें भिन्नता में एकता देखने, अनुभव करने और उसका आनन्द लेने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। इतिहास इस बात का साक्षी है कि हम जब धर्म, भाषा व प्रदेशों की भिन्नता के बावजूद भी एक रहे तब राष्ट्र ने तेजी से तरक्की की है और अपना प्रभाव पड़ौसी राष्ट्रों पर डाला है। लेकिन जब कभी आपसी मतभेदों और स्वार्थों के कारण एक दूसरे से लड़ने झगड़ने में व्यस्त हो गये, तभी राष्ट्र कमजोर पड़ा। बल, बुद्धि और शौर्य में संसार में किसी भी जाति या समुदाय से हीन न होते भी हम गुलाम बने और हमारी स्वतन्त्रता खंडित हुई। यह बात स्पष्ट है कि भारत जैसा विशाल राष्ट्र तभी विकसित एवं सुदृढ़ हो सकता है जब उसके नागरिकों के हृदय और मस्तिष्क विशाल और सन्तुलित हों, उनमें 'वसुदेव कुटुम्बकम' का जीवन दर्शन हो और सर्वधर्म समानत्व का सन्देश राष्ट्र के विभिन्न वर्गों और समूहों को प्रेम व सहिष्णुता के सूत्र में सदा बाँधे रहे। हिन्दुओं, ईसाइयों, मुसलमानों के धर्म ग्रन्थों में भी इसी प्रकार का चिन्तन उपदेश निहित है।

महान क्रान्तिकारी विचारक कार्ल मार्क्स की दृष्टि से आर्थिक विषमता ही वर्ग संघर्ष का मूल है। परन्तु भारतीय संस्कृति और वैदिक दर्शन के अनुसार आर्थिक विषमता के साथ-साथ सामाजिक विषमता भी राष्ट्र अपकर्म का कारण है। मेरा अपना विचार भी भारतीय संस्कृति और वैदिक दर्शन से पूर्ण सामंजस्य रखता है। सामाजिक विषमता के वातावरण में राष्ट्र का विकास अवरुद्ध होता है। आर्थिक विषमता मिट जाने पर भी यदि समाज में जाति, प्रान्त, छुआछूत, भाषा और मत के आधार पर यदि विषमता व्याप्त है तो भी समाज संगठन अथवा राष्ट्रीय एकता असम्भव है। उदाहरण के लिए अमरीका, दक्षिण अफ्रीका यूरोप के कुछ देशों में काले गोरे के संघर्ष का कारण अर्थ नहीं अपितु काले लोगों के प्रति गोरे लोगों के हृदय में घृणाभाव है। एक गोरा व्यक्ति निर्धन रहते हुए भी कालो चमड़ी वाले व्यक्ति को समान सम्मान देने को तैयार नहीं होगा।

एक दूसरे के प्रति घृणा, हीनता, बड़ा-छोटा, मानव-दानव की भावना से समाज का विघटन होता है। इन भावों की जड़ें कम और मस्तिष्क में मकड़ी

के जाल के समान फैलती है। किन्हीं कानून अथवा आर्थिक प्रलोभनों से इनकी समाप्ति सम्भव नहीं है। कानून से इन भावों को कुछ समय तक दबाया अवश्य जा सकता है परन्तु हृदय और मस्तिष्क से इनका उन्मूलन नहीं किया जा सकता। अन्धविश्वास इन भावों का मूल है। नाना प्रकार के मतमतान्तर या स्वार्थी धर्मगुरू अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए समाज में भेद-भाव को जन्म देते हैं और समूचे राष्ट्र को विद्वेष की अग्नि में डालकर उसकी एकता को छिन्न-भिन्न कर देते हैं। एकता के भंग होते ही राष्ट्र आकाश से गिरकर पाताल में पहुँच जाता है।

उपर्युक्त विषमताओं में सर्वाधिक भयावह विषमता जन्म पर आधारित अस्पृश्यता है। इसके रहते राष्ट्रीय उत्कर्ष की कल्पना करना भी सम्भव है। यदि इसका तुरन्त उन्मूलन न किया गया तो यह सवर्णों के प्रति द्वेष व घृणा का रूप धारण कर राष्ट्र के स्वरूप को ही बिगाड़ देगी। इस सामाजिक दोष को नष्ट करने के लिए मस्तिष्क का व हृदय को प्रभावित करने वाले उपायों की खोज करनी होगी।

भारत के प्राचीन इतिहास के पृष्ठों को यदि खोला जाये तो पता चलता है कि रीति रिवाज, आचार विचार, धार्मिक मतभेद और स्वार्थपरता के सामाजिक वातावरण में देश का गौरव और स्वतन्त्रता पदाक्रान्त होती रही है। पृथ्वीराज के विरुद्ध प्रतिशोध की अग्नि में जलते हुए जयचन्द ने किस प्रकार मोहम्मद गौरी की सहायता करके देश की स्वतन्त्रता और संस्कृति का विनाश कराया उसे भुलाया नहीं जा सकता। काश मानसिंह के हृदय में कभी यह भाव जगा होता है कि राणा प्रताप के अन्त का अर्थ होगा देश की परम्परा का नाश और आक्रान्ता की विजय, तो देश की संस्कृति और गौरव का नाश न हुआ होता देश की युक्ति के महायज्ञ में जब शिवाजी औरंगजेब से जूझ रहे थे तब इसके महत्कार्य में कोई बाधक बना तो वह था मिर्जा राजा जयसिंह। जो कार्य औरंगजेब और उसकी सेना न कर सकी वह कार्य जयसिंह ने कर दिखाया। १७५७ में अहमदशाह अबदाली के आक्रमण के समय जयपुर जोधपुर और भरतपुर के राजा तमाशा देखते रहे। मराठों के प्रति उनका विद्वेष इतना अधिक था कि वे मराठों का सर्वनाश देखना चाहते थे।

१८०३ की एक घटना देखिये। जसवन्तराव होल्कर और बाजीराव पेशवा तथा दौलतराव सिन्धिया और यशवन्तराव में बड़ी अनबन थी। परन्तु सिन्धिया ने होल्कर पेशवा और भौंसले को एकत्र कर अंग्रेजों को परास्त करने का प्रयत्न किया। सिन्धिया ने पेशवा बाजीराव को लिखा 'अभी आप हो में है, मिला दीजिए। पहले हम एक होकर विदेशी अंग्रेजों का पूर्ण नाश कर ले तत्पश्चात् सभी मिलकर होल्कर को भी कांटे के समान उखाड़ फैंकेंगे।" यह पत्र रघुनाथ राव पेशवा के दत्तकपुत्र अमृतराव के हाथ लग गया। बाजीराव से उसका द्वेष था साथ ही वह लालची भी बहुत था। बेलेजली ने यह पत्र होल्कर के पास पहुंचा दिया। वह अपनी सेनाओं के साथ वापस लौट आया। सिन्धिया और भौंसले हारते रहे और वह तमाशा देखता

रहा। उनकी हार के पश्चात् वह मैदान में आया किन्तु अकेला रहने के कारण परास्त हुआ देश हार गया। इस सम्बन्ध में बेलेजली ने डायरेक्टर बोर्ड को लिखा कि 'भौंसले, सिन्धिया और होल्कर यदि सगठित हो जाते तो इन तीनों से एक साथ लड़ने की शक्ति हमारे पास नहीं थी।"

हिन्दु मुस्लिम मतभेदों के कारण वर्ष १९४७ में देश का विभाजन हुआ। अनेक लोग हताहत हुए। आपसी मतभेद होना केवल स्वाभाविक ही नहीं, अनिवार्य भी है। किन्तु इन मतभेदों को दूर कर सर्वानुमति की प्रक्रिया स्थापित की जानी चाहिए। सर्वानुमति को सफल बनाने के लिए सुमति का वातावरण आवश्यक है और सुमति का वातावरण तभी बनेगा जब देश के सम्मुख एक भव्य और उदात्त लक्ष्य हो और एक मानव धर्म की सृष्टि हो। ऊँचे वर्गों के लोग त्याग और बलिदान की ओर आकर्षित हों। इसी त्याग और आत्म समर्पण से नागरिकों में भाईचारे की भावना प्रस्फुटित होगी और वे अपने उदात्त ध्येय की ओर अग्रसर होंगे। राज सजा में जनता की भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक खुशहाली के किए कार्य करने की भावना होगी और वह जनता का पालन मात्र और ईमानदारी के साथ करेगी। तभी जनता को भी यह विश्वास होगा कि उन्हें पूर्ण विश्वास तथा मानव जीवन की मूल सामाजिक दैहिक जरूरतों के मामले में स्वतन्त्रता है। यदि शासन निर्धारित नैतिक और राज-नैतिक नियमों के अनुरूप नहीं रहता तो समाज में चारों ओर अभाव असंतोष और अविश्वास की सृष्टि हो जाती है, समाज छिन्न-भिन्न होने लगता है और राष्ट्र पतन की ओर अग्रसर हो जाता है।

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा

एवं

मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा

के इन्दौर सम्मेलन के शुभ अवसर पर

समस्त अग्रवाल बन्धुओं का

हार्दिक अभिनन्दन

श्री रामेश्वरम दाल मिल

खण्डवा (म० प्र०)

आफिस : २६५ : फोन : ३५३ मिल

असंगठित समाज क्यों ?

—तिलकराज अग्रवाल, बम्बई
संयोजक—अग्रोहा विकास ट्रस्ट

संलग्न समाज सदा से व्यक्ति से श्रेष्ठ व महान रहा है। इसी कड़ी से व्यक्ति जब समाज के हित में अपनी जिम्मेदारी समझने लगता है तो वह स्वयं भी महानता की ओर बढ़ने लगता है। समाज असंगठित तभी होता है जब समाज में जिम्मेदारी एवं सेवा भाव रखने वालों की कमी हो जाती है। अपना जीवन सुखी बनाना सरल काम है परन्तु समूचे समाज को ऊँचा उठाने का साहस विरले व्यक्ति ही कर पाते हैं।

व्यक्ति समाज के प्रति कर्तव्य परायणता से ही ऊँचा उठता है न की धन से। धन उसका एक माध्यम अवश्य होता है, परन्तु धन केवल व्यक्तित्व का विकास ही करता है, वहाँ सेवा सम्पूर्ण समाज के विकास का कारण बनती है। अग्रवाल समाज में धार्मिक व कर्तव्य पारायण व्यक्तियों की कमी नहीं केवल उनकी सेवाओं को एक संगठन सूत्र में बाँधने की आवश्यकता है।

इसे समाज का सौभाग्य ही समझा जाना चाहिए कि अब समाज में संगठन की नव चेतना जागृत हो रही है। स्थान स्थान पर अग्रवाल सभाएँ संगठित हुई हैं। महाराज अग्रसेन जी के प्रति सामाजिक भाइयों के हृदय में श्रद्धा भी जाग रही है परन्तु अभी तक जो कार्य हुआ है उससे भी हजारों गुना तब हो सकता है जब समाज में चेतना उत्पन्न हो। चेतना और चाह मिलकर क्या नहीं कर सकते ? यदि हम संगठित हो जावे तो अनेक समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा।

संगठन मंत्र का एक ही रहस्य है कि व्यक्ति समाज के हित में अपनी मनोभावनाओं को पीछे रखकर अपने हित में न सोचते हुए समाज की भलाई के काम में तन मन धन से जुट जाएँ।

सौभाग्यवश हजारों वर्ष बाद देश में सभी अग्रवालों को एक केन्द्र बिन्दु पर लाने का आन्दोलन जागा है। अग्रोहा के प्रति सभी के मन में उत्सुकता जागी है। इस महान कार्य को सम्पूर्ण करने के लिए समाज को एक मंच पर लाना परमावश्यक है। अग्रोहा के विकास से हमारे समाज को एकता व संगठन का बहुत बड़ा आधार मिलेगा। एक मंच पर समाज के बन्धु एकत्रित हो सकेंगे।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने समाज संगठन का बीड़ा उठाया है। संगठन करना सरल काम नहीं। इसके लिए जगह-जगह पर पहुँचकर प्रचार करना होगा। अग्रवाल बन्धुओं को संगठन सूत्र में पिरोना होगा। उनके दुखदर्द में भागीदार बनना होगा। सेवा के नएँ-नए क्षेत्र खोजने होंगे। प्रत्येक अग्रवाल बन्धुओं को अपने पूर्वजों के आदर्शों पर चलने की प्रेरणाएँ प्रदान करनी होगी।

आशा है कि समाज का यह स्वप्न अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के निष्ठावान सच्चे त्यागी व तपस्वी कार्यकर्ताओं की लगन से पूरा हो सकेगा।

बिखरी तुम्हारी शक्ति जिस दिन संगठित हो जायगी

—शंकरलाल अग्रवाल

अग्र वंशज वैश्य कुल के सर्वदा सिरमौर थे।
विश्व के वाणिज्य में विख्यात वे हर ठौर थे॥

वे प्रणतपालक दयामय, भूमिधर कृषिधर थे।
देश हित धन धान्य से रखते भरे कोठार थे॥

गो विप्र सेवक, शिष्ट उनके सर्वप्रिय व्यवहार थे।
दधि दुग्ध, घृत से युक्त उनके निरामिष आहार थे॥

वे शान्ति प्रिय, धर्मावलम्बी, शील के भण्डार थे।
निस्स्वार्थी, निष्कपट, निर्मद, निर्विकार उदार थे।

जो श्रेष्ठ पदवी प्राप्त थे वे नीच पद पाने लगे।
हा ! वैश्य वे ही अब बनिक बक्काल कहलाने लगे॥

जागो, उठो, आगे बढ़ो कर्तव्य करने के लिये।
बिगड़ी बनालो, कमर कस लो तुम उभरने के लिये॥

विपरीत बहती वायु को अवरुद्ध करके थाम लो।
जब तक न पहुँचो लक्ष्य तक तब तक न तुम विश्राम लो।

अब भी समय है, अग्रवालो ! अग्र होना है तुम्हें।
स्वर्णिम सुअवसर है न क्षण भर व्यर्थ खोना है तुम्हें॥

तन, मन, लगन से बन्धुओं ! अविलम्ब यदि जुट जाओगे।
निश्चय मिलेगी सफलता, मनवांछित फल पाओगे॥

बिखरी तुम्हारी शक्ति जिस दिन संगठित हो जायगी।
नव निर्वाण होगा और मां वसुन्धरा खिल जायगी।

संगठन
को
प्रमुख बाधायें और उसका निराकरण

—हरप्रसाद अग्रवाल, रायपुर

अग्रवाल समाज हो या कोई भी सामाजिक या राजनैतिक संगठन सबकि यही अकांक्षा रहती है वे देश या सामाजिक हित में कुछ कर पायें। संगठन की उपादेयता अपने आपमें निहित है बिना संगठन के तो कोई कार्य सम्भव नहीं। किसी व्यक्ति के मन में कोई विचार पैदा होता है तो उन विचारों को कार्यान्वियन के लिये वह संगठन बनाता ही है। यही कारण है आज भारत में अनेक संगठन अपने-अपने तरीके से काम कर रहे हैं। बाधायें तब उपस्थित होती है जब संगठन के कर्णधार अपने कर्तव्य से विमुख होने लगते हैं उनकी कथनी और करनी में अन्तर आता हैं। प्रातः स्मरणीय महात्मा गांधी ने भी अपने जीवन में यही तो बताया था कि हम जो कुछ करे वैसा ही करें। और जो कुछ कर सकते हैं—वही करें। आज इसका सर्वथा अभाव दिखायी दे रहा है। चाहे बड़े-बड़े संगठन हो या छोटे-छोटे समाजिक संगठन हों या मोहल्ला समितियाँ सबमें काम करने की इच्छा तो हैं, पर अपने ध्येय के प्रति अटूट आस्था का अभाव भी है। यह अभाव तभी दूर हो सकेगा। जब कुछ आस्थावान लोग उन्हें उनकी गल्तीयों की ओर इशारा करें अथवा गलत व्यक्तियों के प्रति सचेत रहते सचेत कर सकें। इसका परिणाम होगा कि विवेकशील व्यक्ति जल्दी ही अपनी गलती पहचान कर नये विवेकशील व्यक्तियों को उचित स्थान दे सकेंगे तभी संस्थागत बुराइयों और दोषों का नाश हो सकेगा।

यदि हमें संगठनों में सुधार लाना है तो यह सोच लेना होगा कि हम अच्छे ईमानदार कार्य कर्त्ता को आगे बढ़ायें चाहे वह अमीर हो या गरीब हो। संगठन की दीवार में मजबूत ईटों की आवश्यकता प्रथम होती हैं सीमेन्ट बाद में। संस्था में गरीब-अमीर की भावना होना ही नहीं चाहिये। उसका ध्येय केवल कार्य की परिणति होना चाहिये। बशर्ते दोनों में पद को होड न हों। सङ्गठनों के लिए हमें ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता हैं जो अपने ध्येय के प्रति दृढ आस्थावान हों, उदार हों जिसमें आलोचना सहन करने की क्षमता हो। आलोचना से मतलब गैर जिम्मेदाराना आलोचना से नहीं है। आलोचना ऐसी हो जो संगठन की कमजोरीयों को ठीक करने में सहायक बनकर, सही दिशा में ले जा सके। हम जो भी कहें उसे ईमानदारी से निभायें। यदि हम उसे पूरा करने में समर्थ न हो तो हम बिना संकोच के अपने स्थान से हट जाये। यदि इतना हमने साध लिया तो मेरी निश्चित मान्यता हैं कि संगठनों में सजीवता उत्पन्न हो सकेगी। जो व्यक्ति लगनशील हैं चाहें वह धनी हो या सामान्य उसके उत्साह को सम्बल प्रदान करे। संगठन बनाने का उद्देश्य हमारा यही होना चाहिये कि हम समाज के उन जरूरत मंद लोगों की सेवा करेगे जो हकीकत में उसके लिये उपयुक्त है। संगठन द्वारा जुटाये गये साधन जितने सामान्य जन के लिये होंगे उतना ही सङ्गठन मजबूत बनेगा। इसलिये हमारे अन्दर जो खराबियाँ हैं उन्हें निसकोच दूर करना होगा तभी संगठन बलशाली बनेंगे और हमारी एकता मजबूत बनेगा।

जीवन में क्या क्या देखा ?

—पदम चन्दगोयल, आगरा

इस जीवन में मैंने "इन्सान' को 'हैवान' बनाते देखा।
'ईमान' को चांदी में तुलते देखा।
'आन-बान' पर मरने वालों को 'ढगमगाते' देखा।
'सत्य' और 'धर्म' पर चलने वालों को 'लड़खड़ाते' देखा।
'अपनों' को 'अपने' से दूर हटते देखा।
उन्ही 'अपनों' को 'गैरों' से 'सटते' देखा।
'प्रियजनों' के 'सम्बन्धों को 'मिटते' देखा।
जबकि 'अपनो' को 'गैरों' से 'पिटते' देखा।
'गर्दिश' के तुफानों में शक्तिशाली 'पेड़ों' को हिलते देखा।
आई जो बहार अनुकूल तो छोटी-छोटी कलियों को खिलते देखा।
इन 'तूफान और बहारों' में मैंने मिटते और पनपते देखा।
'अमीरों के नीचे गरीबी' को मैंने 'तड़फते' देखा।
आदर्श और सत्यवादी को मरते देखा।
जबकि पाखण्डी को उन्नति शिखर पर चढ़ते देखा।
गरीबी भी देखी अमीरी भी देखी और भी सब कुछ देखा।
रही कामना दिल की दिल में असमान को जमीन से मिलते नहीं देखा।

संगठन का युग

—कन्हैयालाल अग्रवाल, राजनांद गाँव

किसी भी समाज की उन्नति के लिये निम्न तीन बातें प्रधान हैं।

(१) कुशल नेतृत्व, (२) स्पष्ट ध्येय, (३) संगठित प्रयास।

कुशल नेतृत्व के अभाव में कोई भी समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। जब समाज की बागडोर योग्य, दृढ़प्रतिज्ञ, कर्मठ लोगों के हाथों में आई तब तब समाज में स्फुर्ति के चिन्ह दृष्टिगोचर होने लगे, समाज में नवचेतना का संचार हुआ समाज संगठित होकर प्रगति की ओर अग्रसर होने लगा।

इसी तरह किसी भी समाज को संगठित करने के लिये उसके सामने कुछ स्पष्ट ध्येय होने चाहिये। ऐसे आदर्श होने चाहिये जो उनके सदस्यों में जागृति पैदा कर सके और वे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये प्रयास कर सकें। उद्देश्य विहीन समाज की प्रगति संभव नहीं है।

समाज को अपने उद्देश्य तक पहुंचने के लिये उसके सुदृढ़ संगठन की आवश्यकता है। बिना संगठन के कोई कार्य संभव नहीं है। समाज का हर एक सदस्य उसकी इकाई होता है। उसकी स्थिति एक तिनके के समान होती है **तिनके में कितनी शक्ति होती है। परन्तु इन तिनकों को इकट्ठा कर यदि उसका रस्सा बट लिया जावे तो वह मदमस्त हाथी को भी बांध सकता है।** या यों कहें कि समाज का प्रत्येक सदस्य पानी की एक बूंद के समान है और यदि असंख्य बूंदें एक स्थान पर एकत्रित हो जावें तो वे महासागर का रूप धारण कर लेती है। इन्हीं उदाहरणों से संगठन की शक्ति का अनुमान लगाया जा सकता है। विशेष कर जब हम अग्रवाल समाज जैसे बृहत समाज की उन्नति का प्रयास करना चाहते हैं तब तो इतना विशाल कार्य बिना सुदृढ़ संगठन के संभव नहीं हैं।

यह बड़े सौभाग्य की बात है कि हमारे समाज के कुछ नेताओं के हृदय में इस बात की प्रेरणा हुई कि अग्रवाल समाज को जिसके सदस्य केवल भारतवर्ष के कोने कोने में ही नहीं, विदेशों में भी दूर दूर तक फैले हुए हैं, जिसका एक गौरव शाली इतिहास है जो जीवन के हर क्षेत्र में कार्यरत हैं, जिसके सदस्यों ने देश को ऐसे नर रत्न दिये हैं जिन्होंने साहित्य, व्यवसाय, राजनीति, धर्म, शिक्षा इत्यादि हर क्षेत्र में अपूर्व स्मरणीय योगदान दिया हैं संगठित किया जावे। हर देश व समाज के इतिहास में ऐसे क्षण आते है जब कि कई कारणों से उसमें कई तरह के दोष आ जाते हैं और उसकी अवनति होने लगती है। उन्नति अवनति का यह चक्र सदा चलता ही रहता हैं।

हमारे समाज में भी आज बहुत से दोष आ गये हैं। संसार में विज्ञान की प्रगति के साथ भौतिक समृद्धि की ओर सबका लक्ष्य हो गया। नैतिक मूल्यों का

(शेष पृष्ठ २३ पर)

संगठन का महत्व

—डा० भगवतशरण अग्रवाल, अहमदाबाद

स्कूलों में बच्चे एक खेल खेलते हैं, नौ मत का एक मत। इस खेल में एक बालक जमीन पर लेट जाता है और फिर नौ बालक उस लेटे हुए बालक के चारों तरफ बैठ जाते हैं और बैठे हुए स्थान पर से उस लेटे हुए बालक के नीचे अपनी अनामिका उँगली लगाते हैं और एक दो तीन कहते हुए, नौ उँगलियों के सम्मिलित आधार पर पूरे बालक का बोझ ऊपर उठा लेते हैं और फिर धीरे-धीरे नीचे ले आते हैं।

यह खेल बालकों को संगठन की शक्ति के महत्त्व को समझाने के लिये है। पंचतंत्र की कथायें, वेदों और पुराणों के प्रसंग और विश्व के विविध देशों के इतिहास संगठन शक्ति, एकता तथा विशृङ्खलता मैत्री और ईर्ष्या-द्वेष के कोटि-कोटि प्रसंगों से भरे हुए हैं।

संगठन समाज की आत्मा है। बिना संगठन के कोई भी समाज न तो विकसित ही हो सकता है और न ही अपनी उन्नति ही कर सकता हैं।

सङ्गठन के स्थायित्व के लिए हमें त्याग करना पड़ता है। जिस प्रकार सच्चे प्रेम के लिए त्याग की आहूतियाँ देनी पड़ती हैं, उसी प्रकार सामाजिक सङ्गठन के लिए व्यक्तिगत और पारिवारिक त्याग की आवश्यकता होती है। त्यागी व्यक्ति के प्रति समाज में सम्मान की भावना रहती है, क्योंकि उस त्याग के पीछे परमार्थ की भावना छिपी रहती है।

त्याग का अर्थ वैराग्य नहीं है। बल्कि निस्वार्थ समाज सेवा का भाव रहता है। निर्धन व्यक्ति शारीरिक श्रम करके, बुद्धिजीवी अपने बुद्धि प्रयासों के द्वारा और धनी व्यक्ति धन का त्याग कर समाजोन्नति में सहायक हो सकता है। जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के कर्त्तव्य करने पर, अन्य सभी को अपना अधिकार प्राप्त हो जाता है, उसी प्रकार सभी के सेवाभाव से त्याग करने पर व्यक्ति, परिवार और अन्तोत्वोगत्वा समाज का विकास अवश्य होता है।

समाज के सदस्यों को त्याग के, कर्त्तव्य के और स्वयं के तथा समाज के विकास को समझाने, याद दिलाने और मार्ग दर्शन देने के लिए, सामाजिक सङ्गठन की

आवश्यकता होती है। यह सङ्गठन समाज विरोधी तत्वों को प्रकाश में लाकर उनको दंड दिलाने की व्यवस्था भी करते हैं। सङ्गठन के महत्व को समझाते हैं। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक सुखशान्ति की प्राप्ति के लिए, पथप्रदर्शक का कार्य करते हैं।

सङ्गठन जितना मजबूत होता हैं समाज विरोधी तत्व उतने ही निर्बल होते जाते हैं। आज अपने समाज में स्वार्थ का बोलबाला है और सङ्गठन की अतीव आवश्यकता है। सामाजिक सङ्गठनों के माध्यम से हम राष्ट्र की सेवा भी कर सकते है। हम राजनीति, धर्म, साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में हुए उन आदर्श अग्रवाल जातियों के महानात्माओं के आदर्श को कभी नहीं भुलना चाहिए तथा व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीयस्तर पर सङ्गठित होकर, समाज विरोधी, राष्ट्र विरोधी तत्वों का सामना करना चाहिए।

देश के और समाज के नेता जब कोई सङ्कल्प हमारे सामने रखते हैं, तो हममें से प्रत्येक का कर्त्तव्य उसे पूरा करने का होता हैं। प्रधान मंत्री ने 'गरीबी हटाओ' का सूत्र दिया। हम लोग गरीबो को हटाने की प्रतीक्षा करते रहे, किन्तु इस सम्बन्ध में सङ्गठित होकर कुछ करने को बात मन में नहीं आई। तन, मन, धन में से किसी प्रकार का त्याग करने को हम तैयार नहीं हुए। फलतः गरीबी कहाँ से हटती ?

आज देश के जन-जन की उन्नति के लिए बीस सूत्रीय कार्यक्रम उद्घोषित किया गया है। उसकी सफलता के लिए हमें दिन रात संगठित होकर परिश्रम करना चाहिए। त्याग करना चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे, तो प्रत्येक जन, परिवार, समाज और अन्ततोगत्वा राष्ट्र की उन्नति होगी। राष्ट्र समाजों का संगठित स्वरूप है, समाज परिवारों का और परिवार व्यक्तियों का। एक दूसरे का अनन्योश्रित सम्बन्ध है। एक का बल दूसरे के विकास में सहायक है।

हम प्रतिज्ञा करे कि संगठित होकर देश और मानवता के विकास में क्रिया-शील होंगे। उसके लिए त्याग करेंगे। संगठन और समाज विरोधी तत्वों तथा निर्बलताओं को अपने में से दूर करेंगे। अग्रवाल समाज में महाराज अग्रसेन जी, लाला लाजपतराय, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्री श्रीप्रकाशजी तथा श्री श्रीमन्नारायणजी के चरित्र आदर्श उदाहरण हैं।

सामाजिक संगठनों को पुर्नजावित करके कुछ ऐसे नियमों, का पालन कराया जाय जिससे विवाहों में नकदी-लेन, दिखावा, दहेज-प्रथा आदि रुक सके।

अग्रवाल महिलाओं पर सामाजिक दायित्व

—सौ० कृष्णा अग्रवाल, इटावा

राष्ट्रीय विकास के वर्तमान दौर में सामान्यतः महिलाओं और विशेषतः अग्रवाल महिलाओं की क्या स्थिति है ? वर्तमान स्थिति के कारण क्या हैं ? इन कारणों के परस्पर संबंधों में कैसे और कितने सुधार किये जाएं जिनसे हमारे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के लाभ सभी परिवारों और व्यक्तियों को सुलभ हो सके। सामान्य महिला समाज और अग्रवाल महिला समाज दो स्तरों पर परंपरा और परिवर्तन के बीच जारी संघर्षों में फंसा हुआ है। एक स्तर पर उच्च, मध्य और सामान्य वर्गगत हलचल है। उच्च वर्ग अपनी यथा स्थिति की रक्षा करने तथा संपन्नता की सीढ़ियों पर आगे बढ़ने की होड़ में जुटा हुआ है। मध्यम वर्ग अपनी कमजोरियों पर परदा डलाने और उच्च वर्ग की सतही नकल करने में संलग्न है। सामान्य वर्ग किसी प्रकार जीवनयापन करने में ही अपनी समस्त शक्ति और समय व्यय करने के लिये विवश सा है। दूसरे स्तर पर जाति गत हलचल है। जन्म से मरण तक के संस्कारों में जाति की जो संरक्षण-शील, सहकारपूर्ण और समस्या-समाधान कारक भूमिका थी, वह दिनों दिन क्षीण होती जा रही है। यदि ऐसा नहीं होता तो हमारे समाज में विषमता, क्षेत्रीयता एवं अलगाव की भावना और उससे उत्पन्न समस्याएं वर्तमान भयावह रूप ग्रहण नहीं कर सकती थीं। इस परिस्थिति के अनेक कारण हैं। इनमें मुख्य कारण दो हैं—पहला कारण तो अग्रसेन महाराज के समतावादी और सहकारी जीवन दर्शन में हमारी आस्था की सामान्यतः कमी है। दूसरा कारण समाज की शिक्षित महिलाओं में सामाजिक दायित्व के प्रति सामान्यतः कर्मयोग का अभाव है। ऐसी स्थिति में आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों का गंभीर विश्लेषण करने और उनके प्रकाश में योजनाबद्ध कार्य करने के लिये प्रेरणा, समय और साधन कहां है।

यदि अग्रवाल समाज को राष्ट्रीय विकास और सामाजिक विकास में अपनी उत्तरोत्तर दृढ़ और प्रभावशाली करना है तो हमें अपने संगठनों को अधिक जीवंत और रचनात्मक बनाने की आवश्यकता है। हमारे अखिल भारतीय और राज्य स्तरीय संगठनों की सबसे निर्बल कड़ी यह है कि ये सभी परिवारों तक नहीं पहुँच सके हैं। सभी परिवारों तक पहुंचना तो प्रथम आवश्यक कारण मात्र है। मुख्य लक्ष्य तो प्रत्येक परिवार में उन जीवन मूल्यों को विकसित करना है जिससे हमारी पारीवारिक, सामूहिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति जन कल्याणकारी मान्यताओं तथा कसौटियों के अनुरूप हो।

प्रश्न यह है कि हमारे पारिवारिक जीवन मूल्यों की मूल मान्यता और कसौटी क्या है ! ये मूल्य हमारी मानवतावादी संस्कृति और भारतीय सविधान में स्पष्ट है ? हमारी सस्कृति जीवन के चार पुरुषार्थों या मूल्यों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को समन्वित मानती है । अर्थोपार्जन अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन, संयमित आनंद और मनोरजन अपनी समस्त शक्तियों और क्षमताओं का पूर्ण विकास कर आत्मतृप्ति के तथा परमार्थ आत्म समर्पण का परस्पर पूरक संबंध है । इनमें न्यूनाधिकता, विषमता या असतुलन से व्यक्ति परिवार और समाज में विश्रृंखलता और अशान्ति उत्पन्न होती है और फैलती है । इन्हीं जीवन मूल्यों की झलक हमारे देश के संविधान के मूल उद्देश्य में परिलक्षित है । इसमें स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व और सामाजिक न्याय को जनकल्याणकारी समाज रचना का मूल आधार संकल्पित किया गया है । इस संकल्प में सबसे महत्वपूर्ण शब्द "बंधुत्व" है यह हमारी पारिवारिक संकल्पना का केन्द्र बिन्दु है । परिवार में दुख सुख और दायित्वों की बिना किसी भेद भावना के समान सहभागिता होती है । इस सहभागिता के बिना बंधुत्व भावना का अस्तित्व ही नहीं हो सकता बंधुत्व भावना के बिना समता की कल्पना नहीं की जा सकती । समता के बिना स्वतंत्रता का अस्तित्व नहीं हो सकता अतएव समता और स्वतंत्रता की आधारशिला बंधुत्व ही है जिसका जन्म और विकास परिवार में होता है तथा इसकी पूर्ण परिणति समाज राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर होनी चाहिये परन्तु क्या ऐसा अभिष्ट रूप में हो रहा है । अनेक परिवारों में बंधुत्व के स्थान में कई प्रकार की संकीर्णताओं और दोषपूर्ण ग्रन्थियों का उभार होने लगा है इसका ही दुष्परिणाम यह है कि ये व्याधियां परिवारों से समाज और राष्ट्र में भी अनेक रूपों में व्याप्त है । इन्हीं के कारण परिवारी समाज और राष्ट्र अपेक्षित तीव्रता और परिणाम में प्रगति ही नहीं कर पा रहा है ।

इसमें संदेह नहीं कि हमारे देश ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात विज्ञान, तकनीक कृषी और समाज कल्याण के क्षेत्र में विशेष प्रगति की है । हमारी प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी इस प्रगति को और भी व्यापक तथा प्रभावशाली बना रही है । इसके बावजूद स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरागांधी तथा सभी रचनात्मक नेता और कार्यकर्त्ता यह अनुभव करते हैं कि यदि स्वयं सेवी और समाजसेवी व्यक्ति तथा संगठन विकास धारा में अपना प्रतिदान यथाशीघ्र और उत्तरोत्तर बढ़ायें तो हमारी अधिकांश जन समस्याएं तीव्रता से हल हो सकेंगी तथा हमारी राष्ट्रीय प्रगति अन्य विकासशील समाजों और राष्ट्रों के लिये एक प्रेरणादायक नमूना होगा । क्या कारण है कि इस प्रकार के प्रतिदान में अपेक्षित वृद्धि और प्रभावशीलता नहीं है ? पारिवारिक जीवन मूल्यों के ह्रास के कारण जो समस्याएं पहले से परिवार और

समाज में ही हल हो जाती थीं उनके लिये राजकीय पराश्रितता बढ़ता जा रही है । रायकीय प्रयासों का क्षेत्र उत्तरोत्तर बढ़ने के बावजूद आवश्यकता और पूर्ति में भयावह अंतर है ऐसी स्थिति में पारिवारिक और सामाजिक प्रयासों को भरपूर प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है शिक्षा व्यवसाय विवाह पारिवारिक और सामाजिक जीवन में जिन अभावों, दोषों विषमताओं और असंतुलनों का विस्फोट हो रहा है । उन्हें यदि हम गंभीर चेतावनी के रूप में ग्रहण करके उनके प्रभावशाली समाधान के प्रयास समय रहते नहीं करते तो इससे आत्मतुष्ट संपन्न वर्गों की सुख-शान्ति भी खतरे में पड़ सकती है ।

अशिक्षा, दहेज, दिखावा, बेकारी असंरक्षण आदि के निराकरण के लिये कानून तो बन चुके हैं । सामाजिक नियंत्रण में कानूनों का अपना स्थान और महत्व है । तथापि इन कानूनों की मूल भावना से जनता को शिक्षित कराने तथा ऐसी परिस्थितियां विकसित कराने के लिये जिससे कि सामाजिक चेतना कानूनों से भी अधिक प्रभावशाली हो सके, शिक्षात्मक और रचनात्मक आन्दोलन की आवश्यकता है इस आन्दोलन को कारगर बनाने में शिक्षित महिलाएं महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है । वे स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक महिला मंडलों और पारिवारिक सामाजिक शिक्षा के कार्यक्रमों द्वारा महिला शक्ति जागरण से सभी कुरितियों और सामाजिक परंपराओं को जो समाज के लिये अहितकर हैं उन्हें निर्मूल कर सकतीं है । वे इन कार्यक्रमों में अग्रवाल समाज की महिलाओं के अतिरिक्त अन्य समाजों की महिलाओं का भी सहयोगी सदस्यों के रूप में सहयोग प्राप्त कर सकती हैं । क्या अग्रवाल समाज की शिक्षित महिलाएं अग्रसेन महाराज के मानवतावादी, सहयोगी और कल्याणकारी समाज यज्ञ में अपना योगदान अविलंब कर सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की गति तेज करने का श्रेय प्राप्त करेंगी ? यह एक विचारणीय विषय है ।

(शेष पृष्ठ १८ का—संगठन का युग)

अवमूल्यन हो गया । इससे हमारा देश व समाज भी प्रभावित हुआ । येन केन प्रकारेण अधिकांश लोग धन सग्रह की ओर उन्मुख हुए । जीवन में धन की बहुलता ही सफलता व यश का मापदंड बन गई । इसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं । हमारा समाज भी इस चपेट में आ गया । और इससे उसमें दुर्गुणों का समावेश होने लगा । चारित्रिक पतन धन की लालसा ने बहुत सी बुराइयों को जन्म दिया । दहेज का अभिशाप इसी की उपज है ।

आज संगठन का युग है । इस विशाल समाज को सगठित करना अति आवश्यक है । अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के प्रयास इस दिशा में स्तुत्य हैं । सब अग्रवाल भाई बहिनों को संगठित होकर महासभा के नेतृत्व में कार्य करने के लिये अग्रसर होने की आवश्यकता है तभी हम अपनी उपलब्धियों से देश व समाज की प्रगति में अपना सही योगदान दे सकेंगे ।

श्वेत कपोतों का नीड़

—त्रिलोक गोयल, अजमेर

करहा कर बोला लाल किला देखो देखो,
पड़ गई दरारें हा दिल की दीवारों में।
दिल्ली की दुलहिन का घूंघट गीला गीला
सब सावधान ! एका हो सभी कहारों में ।।

ऊँची गर्दन कर देखा, कहा कुतुब से कल,
घर के गद्दारों ने ही सेंध लगाई है।
ये ताज, राज, ये जनता और अजन्ता क्या,
बूढ़े हिमगिरि तक की आंखें भर आई है ।।

लंका का वह इतिहास विभीषण को रोता,
वध किया राम ने नहीं, हाथ को हाथ डसा।
हर एक घड़े को ठोक बजाकर घड़ना है,
मत इस धरती पर जयचन्दों के बास बसा ।।

देना ही होगा साथ समय का तो सबके,
धागा धागा मिल जाओ, रस्सा बटना है।
आदर्श और अनुशासन मर जाए न कहीं,
इस लिए पुनः रामायण, गीता रटना है ।।

उत्तर दक्षिण के नए प्रश्न ने जन्म लिया,
मन्दिर, मस्जिद आपस में गला दबाते हैं।
भाषाएँ भौंक रही है पृथक पृथक स्वर में,
बिल्लियाँ लड़ें तो बन्दर मौज उड़ाते हैं ।।

राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली कोई,
कोई कश्मीरी, गुजराती, मद्रासी है।
मैं महाराष्ट्र हूँ पहले राष्ट्र बाद में हूँ,
बोलो इन सब में कितने भारतवासी है ।।

दल के दल दल में देश गले तक डूब गया
इन रंग बिरंगी सभी टोपियों को छोड़ो
मत खेचो यहाँ विभाजक लक्ष्मण रेखाएँ
कैंचियें बनो मत, गोंद बनो सबको जोड़ो ।।

ऐडी में चुभे शूल की पीड़ा को अनुभव,
सारा तन कर न सके, तो मेरे बराबर है।
कैसे मंजिल तक पहुँचे कदम मिलाए बिन,
आओ दुःख सुख को बाँटें आज परस्पर है ।।

तुमको अजीर्ण वे क्षुधित अगर जीना चाहो,
वितरण को किसी धर्म कांटे पर तोलो रे।
कुछ शीश उठे क्यों पड़ियों के, कुछ महल झुके,
चूमों मन से मन को हर गाँठ खोलो रे ।।

कंचन से भूख नहीं मिटती है कोई को,
खाने वालों से ज्यादह अन्न उगाना है।
इन्दिरा गाँधी के गऊ बछड़ें की कसम हमें
भागीरथ बन श्रम कण को गंग बहाना है ।।

है हर्ज नहीं, गर हम न चांद को छू पाएँ,
मेरा आँगन है काफी दौड़ लगाने को।
पर पग समेट कर सब गुदड़ी में सो पाएँ
आया हूं भूला पाठ याद करवाने को ।।

मैं ही जवान, मैं ही किसान, मैं ही सब कुछ,
मैं ऐसी ताली, हर उलझनें सुलझा दूँगा।
माँ का मुख देख उदास, न चुप रह सकता हूं,
अपने आँसू को अमृत कह कर पी लूँगा ।।

चीखा हीं करते ढोल, पोल की आदत है
कीचड़ उछालने से दोनों मैले होते।
विज्ञापन पढ़ लेने से मर्ज नहीं मिटता,
जो कड़वी दवा पी सके वे सुख से सोते ।।

ओ गर्म खून वालों, तुम पर ही निर्भर हैं,
शिशुओं की मुस्काने, वृद्धों के सपने सब।
तुम जिस डाली पर बैठें, उसको काट रहे,
हर कदम उठाने से पहले रूक सोचो अब ।।

हम श्वेत कपोतों का यह नीड बहुत प्यारा,
तिनका तक छू न सके कोई कौवा इसका।
जिसने माँ के आँसू पर मिटना सीख लिया,
इतिहास दास बनता आया हैं बस उसका ।।

आओ दर्पण में अपना अपना मुँह देखें,
जिसका जितना मुँह कालां है वह साफ करें।
फूलों पर हैं या शूलों पर यह महत्व नहीं,
है महत्व यही, हम साथ जियें और साथ मरें ।।

आते जाते अच्छे लगते पतझड़ बसंत,
कोई बदली रह सकी नहीं स्थाई है।
कल पुनः तिमिर पर शासन होगा सूरज का,
मन में ममता हो तो फिर क्या कटिनाई हैं ।।

कहानी--

मृतक भोज

—पुष्पा अग्रवाल

नीता बिस्तर पर निढाल लेटी हुई अभी भी सिसक रही थी। उसके पति को मरे हुए आज दसवाँ दिन था। सगे सम्बन्धी सभी नीता के घर आए हुए थे। अपनी सहेली नीता की विपदा की खबर पाकर मैं भी इसके पास आई हुई थी। नीता के पति को इस शहर में रहते कई वर्ष हो चुके थे। उनके दो बच्चे अभी स्कूल ही में पढ़ रहे थे कि अकस्मात एक ऐक्सीडेन्ट में उनकी मृत्यु हो गई।

पति वियोग में दुखी नीता भविष्य की चिन्ता से कतार अपने वैधत्य और प्रारब्ध को कोस रही थीं। आठ-नौ दिन में ही उसने अपनी हालत इतनी दयनीय बनाली थी कि उसको देख कर मेरे धैर्य्य का बाँध टूट गया, और मैं उससे लिपटी न जाने कब तक यूँही रोती रही।

तभी नीता की जिठानी पल्ले से आँसू पोछती नीता के पास आ खड़ी हुई।

"क्यों री कुछ तेखी के भोज की सामग्री मंगवाई या नहीं? क्या-क्या सामान आ गया, क्या आना है, सब अभी से तैयारी नहीं की जाएगी तो अब समय कहाँ है?"

नीता एक क्षण चुप रही, फिर धीरे से बोली, हमारे पास पैसा कहाँ हैं भोज की तैयारी किसके बल पर करूँ? कर्ज कहाँ मिलेगा। और मिलेगा भी तो कौन चुकायेगा। घर कैसे चलेगा, बच्चों की शिक्षा कैसे पुरी होगा। जीवन एक भार बन गया है। कर्ज लेकर और कितना भार उठा पाऊँगा।

तो क्या तेखी का भोज नहीं होगा? जिठानी ने आश्चर्य से मुँह फैलाते हुए कहा। उनका दुःख शोक सब मानो इस एक फैसले ने बढ़ा दिया था, दिखावे के गंगा जमुना आँसू वहीं आँखों के तट पर सूख कर मानों आश्चर्य से फैल गए।"

नीता कुछ नहीं बोली!

जिठानी और भी जोर से आवाज करती हुई चली गई, 'लो देखो, कैसा जमाना आ गया है, कहती है तेखी नहीं होगी। समाज का भोज नहीं होगा। अभी तो भगवान ने दो बच्चे दिए है, समाज को नहीं मानेगी तो इनकी परवरिश कौन करेगा, कहीं ऐसा भी अन्धेर देखा है?

औरतों में फुसफुसाहट चल पड़ी। नहीं है तो कहीं से कर्ज ले ले फिर धीरे धीरे चुकता रहेगा। कहीं ऐसा भी हुआ है कि मृतक भोज न हो। जितने मुँह उतनी बातें। नीता चुपचाप सहती रही, आंसू बहाती रही। हाय री बेबसी। क्या वह नही चाहती कि पति के लिए सब कुछ कर सके? परन्तु चाहने से होता ही क्या है इतने में ही जिठानी के बोल पुनः उसके कानों में गरम लोहे की भाँति पिघल पड़े।

उसकी दबी आग अब और न रुक सकी, बोली—'जो समाज सारहीन परम्परा को ढोने के लिए मुझे कर्ज लेने को बाध्य करे, वह भी इस दुःख के समय में जबकि मेरा सुहाग उजड़ गया है, चूड़ियां टूट गई हैं, माँग सूनी हो चुकी है, उस समाज से मेरा सम्बन्ध नाही रहे तभी अच्छा है। यह समाज मुझसे भोज चाहता है, किस खुशा में? किस हर्ष में? किस बात का आनन्द मनाने के लिए? जो समाज दुखियों के दुःख को न बाँट सके, दुःख में भोज की आकांक्षा करे, वह मेरा शुभ चिन्तक कभी नहीं हो सकता। ऐसे झूठे समाज की मैं परवा क्यों करूँ किसके लिए करूँ?

नीता की दहाड़ ने सबके हौसले पस्त कर दिए, लोग टीका टिप्पणी करते हुए अपने-अपने घर चले गए, नीता के ऊपर उसका कोई असर न था—क्यों की वह जानती थी, कि वह जो कर रही है वही ठीक है। सत्य के धरातल पर खड़ी होकर उसने परम्परा को तोड़ा अवश्य है, परन्तु समाज को एक नई दिशा भी दी है यह वह मन ही मन समझ रही थी।

कुछ वर्ष बाद। "मृतक भोज बन्द करो" के नारे को सर्व प्रथम प्राथमिकता देने के उपलक्ष में समाज सुधार कमेटी ने उसे पुरस्कृत करने को आमंत्रित किया। उसने ध्यान से निमंत्रण भेजने वालों के नाम पढ़े, ये वो ही लोग थे जो कुछ वर्ष पूर्व उससे भोज माँग रहे थे। उसके चेहरे पर वक्र मुस्कराहट आकर विलीन हो गई। सत्य हमेशा विजयी होता है।

अ० भा० एवं प्रा० अग्रवाल सम्मेलन के

इन्दौर अधिवेशन पर

आगन्तुक अतिथि एवं अग्रबन्धुओं का हार्दिक

स्वागत करते हैं।

फोन : ३५४९२

जनपद प्रिंटर्स

१५, मल्हारगंज, स्ट्रीट नं० २

इन्दौर ४५२००२

Quality Printers & Stationery Manufacturers.

नींव के पत्थर बनो

लाला लाजपतराय

एक दिन मित्रों ने स्व० श्री शास्त्रीजी को घेर लिया और बड़े ही आग्रह से पूछा—'शास्त्रीजी आपको अखबारों में नाम छपाने से इतना परहेज क्यों है?'

शास्त्रीजी के सामने धर्मसंकट उपस्थित हो गया। कुछ देर सोच-विचार कर बड़ी ही विनम्रता के साथ वे बोले "लाला लाजपतरायजी ने लोकसेवा मंडल के कार्य के लिये दीक्षा देते हुए कहा था—'लालबहादुर! ताजमहल में दो प्रकार के पत्थर लगे है—एक बढ़िया संगमरमर उन्हीं पत्थरों के महराब और गुंबज बने हैं। उनमें ही बड़ी सुन्दर जालियाँ काटी गयी हैं, मीनाकारी, पच्चीकारी की गई है। उन्हीं से रंग बिरंगे बेल बूटे बनाए गए हैं। दुनिया उनको देखती है और मुग्ध हो जाती हैं तथा प्रसंशा करती है। दूसरे पत्थर हैं—टेढे मेढे बेढंगे. वे सब बुनियादी में दबे पड़े हैं। उनकी किस्मत में केवल अन्धकार और बुनियादी की घुटन है। उनकी कोई प्रसंशा नहीं करता, लेकिन उन्हीं नींव के पत्थरों पर ताजमहल की विश्वविख्यात इमारत खड़ी है। मैं चाहता हूँ लोकसेवा मण्डल के सदस्य नींव के पत्थर बनें। वे सस्ते आत्म विज्ञापन से अपने को बचाये रखें और ठोस कार्य की ओर अधिक ध्यान दें।' पूज्य लालाजी के वे शब्द मेरे हृदय में बैठे हुए हैं। और आज भी रह रह कर मुझे अपने कर्तव्य का ज्ञान कराते हैं। मुझे क्षमा करें, मैं नींव का पत्थर बना रहना चाहता हूँ!" ☼

प्रेरणा-श्रोत

अटूट विश्वास

नवदम्पत्ति दार्शनिक प्रोफेसर ह्यूमन रोबर्ट और उनकी पत्नी श्री मती रोबर्ट पानी के जहाज से भारत भ्रमण एवं अध्ययन हेतु इंगलैंड से रवाना हो चुके थे। प्रोफेसर साहब शौच, स्नानादि से निवृत होकर प्रातः कालीन प्रार्थना में ध्यन मग्न थे। इतने में ही जहाज में लाल बत्ती हो गई और खतरे की घंटी बज गई। जहाज के चालक ने माइक पर घोषणा कर दी कि जहाज के इन्जन में आग लग चूकी है दूसरा इंजन काम नहीं करता है। अतः अब जीवन खतरे में है।

फिर क्या था लोगों में व्याकुलता व्याप्त हो गई और अपने जीवन को बचाने का यत्न करने लगे, कुछ व्यक्ति अपने सम्बन्धियों की याद करके रोने लगे। प्रलयकारी दृश्य उपस्थित हो गया।

इधर प्रोफेसर साहब अपनी यानस्थ अवस्था में बैठे हुए थे। बेचारी श्रीयतीजी ने बड़ी व्याकुलता से कहा-देखिये जहाज में आग लग गई है अब हमारा अन्तिम समय है। परन्तु प्रोफेसर साहब ध्यानरत रहे, पत्नी के बार-बार हिलाने पर भी पति ध्यानमग्न बैठे रहे आखिर पत्नी का धैर्य टूट गया उसने अपने दोनों हाथों से पति को जोर से हिला डाला और कहा सुनिये न ··· पति ने एक दम खड़े होकर जेब से पिस्तौल निकाल ली और तेजी से पत्नी की गरदन पर रख दी। पत्नी बैठी रही डरी नहीं पति ने पूछा 'तुम डरीं क्यों नहीं।' पत्नी ने कहा "मुझे मालूम है आप मुझे मार नहीं सकते क्योंकि तुम मेरे हो मैं तुम्हारी।"

पति ने कहा भोली पगली! जैसे तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास हैं वैसे ही मुझे परमात्मा पर अटूट विश्वास है वह मेरा है मैं उसका हूं वह भी मुझे मार नहीं सकता। इतने में सूचना मिली कि जहाज पर काबू पा लिया गया है और वह ठीक हो गया है। ☼

स्वास्थ और स्वराज्य

स्व० श्री जमनालालजी बजाज के बारे में एक संस्मरण सुना था। वे बीमार हुए। सावस्थ्य के लिए डॉक्टर की सलाह ली। डॉक्टर ने कहा आपको छः माह फ्रांस में जाकर रहना चाहिए। वहाँ के सेनेटोरियम में रह कर आप अच्छे होंगे। बजाजजी ने कहा, हिन्दुस्तानी मनुष्य हिन्दुस्तान में हुआ रोग, क्या उसे हिन्दुस्तान

श्री जमनालाल बजाज

का डाक्टर हिन्दुस्तान में दुरुस्त नहीं कर सकता? मैं फ्रांस क्यों जाऊँ स्वास्थ्य पाने के लिये? डॉक्टर कहने लगे, भाईजी जरा सोचिए, फ्रांस में स्वराज्य है वहाँ भूगर्भ साहित्य का अध्ययन होता है। भूगर्भ में कैसे-कैसे झरने होते हैं, उनका स्वास्थ्य के लिए क्या लाभ है, इसका अध्ययन होता है। ऐसे ही एक झरने के किनारे जाने की मैं आपको शिफारिश कर रहा हूँ। यह सर्वेक्षण इस गुलाम देश में कौन करेगा? अंग्रेज राज्य तो आपके हमारे लिये करेगा नहीं। बजाजजी ने पहले तो सब बातें शान्तिपूर्वक सुन ली, फिर कहा, तो आप डॉक्टरी का धन्धा जरा कम करके स्वराज्य के संग्राम में क्यों नहीं कूद पड़ते? यह तो आप स्वयं ही कह रहे हैं कि स्वास्थ्य सुधारने का कार्य भी सुचारुरूप से करना हो तो स्वराज्य चाहिए, तो जरा स्वराज्य आन्दोलन में भाग लें। कहते हैं, डाक्टर साहब थोड़े ही दिनों में अंग्रेजों की जेल में पहुंच गये। ☼

पत्र-पत्रिकाओं का दायित्व

--मुरारीलाल अग्रवाल, मथुरा

राष्ट्र के संगठित और शक्तिशाली होने का प्रश्न विभिन्न समाजों के संगठन से जुड़ा हुआ है। समाज राष्ट्र की इकाई है। यदि विभिन्न समाज स्वयं संगठित हों तो इसका महत्व राष्ट्र के संगठित होने से है।

व्यक्ति और समाज के संगठित होने का अर्थ राष्ट्रीय संदर्भ में यह नहीं माना जाना चाहिये कि एक समाज संगठित और शक्तिशाली होकर किसी अन्य समाज को आतंकित करेगा अथवा उस पर प्रभुता रखना चाहेगा। ऐक समाज की अपनी समस्याऐं होती हैं और उसका हल सामाजिक ढांचे के अन्दर ही ढूँढना होता है अतः यदि समाज संगठित न होगा तो राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का निर्वाह हम नहीं कर सकेंगे।

अग्रवाल समाज में संगठन की स्थिति निश्चिय ही सन्तोषजनक नहीं है। इसके कारणों पर दृष्टिपात करने से एक ही बात समझ में आती है कि इस समाज के लोग काम धंधे और व्यापार के द्वारा धन अर्जित करने में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें सामाजिकता और संगठन की ओर ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिल पाता है। धनवान और उदार होने के साथ ही वह कोई अन्य शक्ति अपने पास नहीं चाहते ह। निश्चय ही यह त्याग, और राजनीतिक झमेले स अलग रहने की बात है।

संगठित न होने का एक मूल कारण यह भी है कि समाज के सभी लोगों के आपसी व्यापारिक हित समान होने के कारण नित्यप्रति उनमें टकराव होना स्वाभाविक है। जब ऐसा होता है तो संगठन का महत्व गौढ़ हो जाता है।

विश्लेषण करने पर अनेक तथ्य सामने आते हैं किन्तु इसका अथ यह नहीं कि सगठन की आवश्यकता अग्रवाल समाज को नहीं है। सच तो यह है कि वर्तमान राष्ट्रीय परिवेश में इसकी आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है जबकि इस समाज के सम्मान को चुनौती देने के लिए अन्य लोग सामने आते हैं।

कुछ अर्थों में चुनौती ऐसी हो सकती है जिसपर हमें सोचने की आवश्यकता हो। जैसे दहेज का लाछन इस समाज पर जोरों से लगाया जाता है। संगठित रूप से इस समाज को अपने ऊपर लगाये गये आरोपों पर गंभीरता से विचार करना होगा। यह तभी सभव होगा जबकि समाज संगठित हो। हम ऐसा कर पाये तो हमारे समाज का मुँह उज्जवल हो सकेगा।

पत्र—पत्रिकायें इस दिशा में उपयुक्त वातवरण बनाने का ठोस कार्य कर सकती हैं। पत्रकारों के सम्मुख समाज का यह ठोस कार्य है जिसका वह अंजाम दे सकते है। नैतिकता और शिक्षा का संदेश देने का कार्य पत्रकारों ने सदैव साहस के साथ किया है किन्तु आवश्यकता इस बात की भी है कि पत्रकारों को उचित प्रोत्साहन प्राप्त हो और उनके कार्यं का मूल्यांकन हो। पत्र पत्रिकाओं को पढने और खरीदने की आदत भी समाज को बनानी होगी। इसके अभाव में समाज और संगठन का कोई कार्य नहीं हो सकेगा।

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन के पदाधिकारी

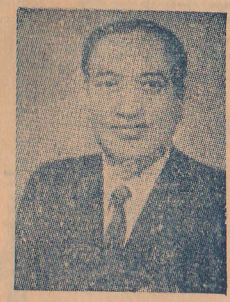

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
बद्रीप्रसाद अग्रवाल
जबलपुर

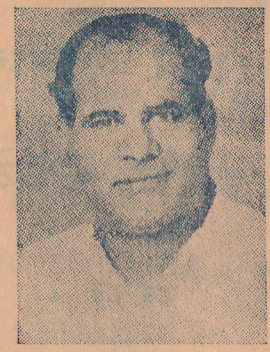

अध्यक्ष
श्रीकृष्ण मोदी
संसद सदस्य, नई दिल्ली

उपाध्यक्ष
श्रीमती कृष्णा अग्रवाल
इन्दौर

उप महामंत्री
हरिकिशन अग्रवाल
नागपुर

महामंत्री
रामेश्वरदास गुप्त
नई दिल्ली

कोषाध्यक्ष
बृजलाल चौधरी
मद्रास

अध्यक्ष युवा संगठन
इन्द्रराज बंसल
मद्रास

संयोजिका इतिहास समिति
डॉ० स्वराज्यमणि अग्रवाल
जबलपुर

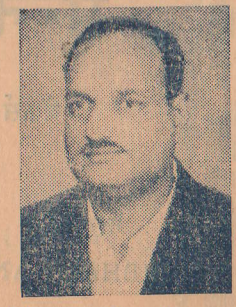

संयोजक अग्रोहा विकास ट्रस्ट
तिलकराज अग्रवाल
बम्बई

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

के इन्दौर अधिवेशन

पर

हार्दिक शुभ कामनाएँ

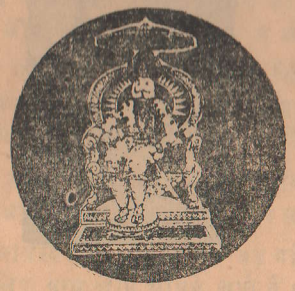

मुन्नालाल गुलाबचन्द

बैंकर्स किराने के थोक व्यापारी व आढ़तिये

प्रयाग नरायन मार्ग, आगरा—३

तार :	फोन : कार्यालय	फोन : निवास
SRIBHAGWAN	७२३९७	७३००८

Alok Paper Industries

F/7; Industrial Estate

POLO-GROUND, INDORE 452003 (M.P.)

MANUFACTURERS

OF

M. G. PAPERS

Gram : 'MANIK'

Phones : Mill : 38115, 34426
Resi : 37909, 35379

With best Compliments from :

MOTILAL PESTICIDES INDIA

Leading Manufactures of
formulations
based on

B. H. C., D. D. T., ALDRIN, CARBARYL,
ENDRIN, MALATHION, TOXAPHENE,
HEPTACHLOR, CHLORDANE,
DUST., W. D. P. & E. C.

H. O :-MASANI, DELHI ROAD, MATHURA (U. P.)

Gram : Moti Pest Phone : off. 303 Resi. 410

D-3 89-Defence Colony, NEW DELHI. Phone : 615196

Sole Selling Agents :

MOTI KRISHI RASAYAN

Vrindaban Road, MATHURA. (U. P.)

Gram : 'Motikrishi' Phone : 661

हम

—श्री 'वियोगी', अहमदाबाद

जन-जन का शृंगार करें हम ।
जन-जन का उद्धार करें हम ॥

यह भारत जन-तंत्र हमारा,
यह है जीवन-मंत्र हमारा ।
इसके सुमन सुरभि-मण्डित हों,
इसका पथ हो दीपित सारा ।

शील-शक्ति की धार बहाएँ,
शूल हटाएँ, फूल उगाएँ ।
सेवा और सदाशयता से,
दुश्चिन्ता वैराग्य भगाएँ ।

विद्या-विनय-विवेक भरें हम ।
जन-जन का शृंगार करें हम ॥

प्रेम-नेम का भाव भरें हम ।
जन-जन का शृंगार करें हम ॥

"सत्यं शिवं सुन्दरम्" का स्वर,
हम सबमें हो नित हो भास्वर ।
नित्य प्रेय को उद्वेलित कर,
उसे श्रेय से करें उजागर ॥

शुभ विचार से मण्डित करके,
अशुभ-अशोभन से हट करके ।
विपथगामियों को पथ देकर,
राष्ट्र-प्रेम से नित सट करके ।

ऊर्ध्वग बन कर नित विचरें हम ।
जन-जन का शृंगार करें हम ।

नव-जीवन संचार करें हम ॥
जन-जन का शृंगार करें हम ॥

बालक युवक वृद्ध सुषमाकर,
सब में दें हम नवजीवन भर ।
आशा का प्रदीप ले चल दें,
बढ़े चरण में ले गति द्रुततर ॥

आओ नव निर्माण करें हम,
मिल-जुल सफल प्रयाण करें हम ।
भेद-भाव, बन्धन-विमुक्ति में,
आओ नूतन गान भरें हम ॥

ताप और परिताप हरें हम ।
जन-जन का शृंगार करें हम ।

आओ मिल भण्डार भरें हम ।
जन-जन का शृंगार करें हम ॥

संगठन में पत्र-पत्रिकाओं का महत्व और उनका आपसी उत्तरदायित्व

—हरिकिशन अग्रवाल, नागपुर

संगठन एवं पत्र पत्रिकासे यद्धपि अलग अलग वस्तुएँ हैं तथापि वे एक दूसरे की पूरक हैं। एक दूसरे के बिना उनका अस्तित्व स्थिर है यह कहना कठिन है। इसलिये जहां संगठन है वहां पत्र पत्रिकाऐं होना आवश्यक है और जहां पत्र पत्रिकाएं हैं वहां संगठन का अभाव हो असंभव है। संगठन से पत्र पत्रिकाऐं जन्म लेती, पलती पुस्ती तथा फलती फूलती हैं और पत्र पत्रिकाओं से संगठन बनते, चलते गतिमान रहते और फलते फूलते हैं। जहां दोनों में से एक का भी अभाव है वहां दूसरे का निभाव ही संभव नहीं है। इसलिये दोनों ही साथ साथ चलते हैं। दोनों का परस्पर सहयोग, दोनों को मजबूत बनाता है और जहां परस्पर सहयोग का अभाव है वहां दोनों का ही अस्तित्व खतरे में बना रहता है यह कहना कोई अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं है। जहा जितनी अधिक पत्र पत्रिकाएं हैं वहां उतने ही अधिक संगठित संगठन हैं और जहां संगठन सुदृढ है वहां उतनी ही अधिक पत्र पत्रिकाएं और उनकी स्थिति उतनी ही सुदृढ़ हैं।

विश्व, देश, समाज आदि सभी संगठनों पर पत्र पत्रिकाओं की बात लागू है। अग्रवाल संगठन और उसकी पत्र पत्रिकाएं उस नियम से अछुते रहें यह कैसे संभव है? आज अग्रवाल समाज में सुदृढ़ संगठन का अभाव इसलिये है कि उसके पास सुदृढ़ पत्र पत्रिकाएं नहीं हैं और सुदृढ़ पत्र पत्रिकाएँ इसलिये नहीं हैं कि उसका कोई सुदृढ़ संगठन नहीं है। यदि अग्रवाल समाज अपना संगठन बनाना चाहता है, जो संगठन हैं उन्हें सुदृढ़ बनाना चाहता है, उनका विस्तार करना चाहता है तो उसे अपनी प्रचलित पत्र पत्रिकाओं को मजबूत बनाना होगा और पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा विस्तार करना होगा। उन्हीं से समाज संगठित होगा, संगठन मजबूत बन सकेंगे और उनका विस्तार आवश्यक्ता के अनुसार होकर वे सब उद्देश्य और लक्ष्य प्राप्त किये जा सकेंगे जो संगठनकर्ताओं के हैं। इसलिये यह सबसे पहले आवश्यक है कि समाज, पत्र पत्रिकाओं पर पहले ध्यान दें। जो आज प्रकाशित हो रही हैं उन्हें पूर्ण सहयोग प्रदान करें, उनकी ग्राहक संख्या अधिकाधिक बढ़ावे, उन्हें समाज के प्रत्येक उद्योग, व्यवसाय का विज्ञापन दिलवाये। इससे उनका स्तर सुधरेगा वे समाज के लिये अधिक उपयोगी बन सकेगी और समाज के संगठन में अपना योगदान की पराकाष्ठा कर देंगे जो उसे दिये गये सहयोग से कई गुना अधिक सिद्ध होगा।

आज समाज और उसके कार्यकर्ताओं का यह दुर्भाग्य है कि समाज के धनी मानी, बड़े व्यवसायी और उद्योगपति सामाजिक पत्र पत्रिकाओं और संगठन की ओर से बुरी तरह उदासीन हैं। वे सामाजिक पत्र पत्रिकाओं और संगठन पर अपने विज्ञापनों का एक पैसे का १०० वां हिस्सा भी खर्च नहीं करते जबकि अपने प्रचार के लिये वे इन्हीं का सर्वाधिक उपयोग करते हैं। वे उनसे ही प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचते और फिर उन्हें भूल जाते हैं। आज समाज के जितने भी प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति हैं वे उद्योग और व्यवसाय में भले ही अपने बलबूते पर आगे आये हों, परन्तु प्रसिद्धि उन्हें सामाजिक पत्र पत्रिकाओं और संगठनों ने ही दी है। उनसे जितनी प्रसिद्धि उन्होने प्राप्त की उसका सहस्त्रांश भी उन्होंने उन्हें नहीं दिया है। उनकी इस नीति से उसी का यह परिणाम है कि सामाजिक संगठन और पत्र पत्रिकाएं न पनप पाये और न सुदृढ़ हो पाये। इससे वे ही घाटे में नहीं रहे बल्कि वे सब प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति भी भारी घाटे में रहे कि जब उनके खिलाफ विभिन्न प्रकार के आरोप लगाये गये, तरह तरह से उन्हें बदनाम किया गया और मामले चलाये गये तो, उनकी प्रसिद्धि और उनके वे सब अच्छे कार्य व दान धर्म धरे के धरे रह गये जो उन्होंने अरोप के पूर्व किये हैं। यदि उन्होंने संगठन और सामाजिक पत्र पत्रिकाओं के प्रति अपने कर्तव्य और कृतज्ञता का पालन किया होता तो स्थिति आज से निश्चित रूप से भिन्न होती तथा उन पर लगाये गये आरोपों का संगठित और तार्किक रुप से खंडन का प्रयत्न हुआ होता। उससे उनका उतना नैतिक और चारित्रिक हनन भी नहीं हुआ होता।

इन पंक्तियों का लेखक अपने ४० वर्ष के सामाजिक कार्यों और अनुभव से यह कहने की स्थिति में है कि देश का एक भी ऐसा बड़ा उद्योगपति, व्यवसायी और नेता नहीं है जिनकी प्रसिद्धि में सामाजिक संगठनों और पत्र पत्रिकाओं ने भारी योग नहीं दिया हो और वे ऐसे न निकले हों कि उन्होंने उसका बदला एक शहस्त्रांश भी चुकाया हो। कितने तो इतने कृतघ्न और शोषणकर्ता सिद्ध हुए हैं कि वे उसका कोई बदला नहीं चुकाते और उसके बावजूद भी उनसे स्वागत सत्कार और प्रसिद्धि पाने में आगे की कतार में पाये जाते हैं। संगठन और पत्र पत्रिकाऐं यह सब जानते हुए भी अपनी समाज प्रेम की भावना, संगठन की प्रबल इच्छा, समाज की प्रगति की आकांक्षा और समाज के व्यक्तियों को उंचा उठाने की कामना से यह करते रहे हैं। और अपने आपको मिटाते रहे हैं।

आज अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन भी पत्र पत्रिकाओं की ही देन है। उसका संगठन, प्रचार और कार्यों का भी आधार पत्र पत्रिकाऐं ही है। फिर भी सम्मेलन की उस ओर उदासीनता खेदजनक और संगठन के लिये खतरनाक है।

आज देश में जितनी भी सामाजिक पत्र पत्रिकाऐं निकलती है वे सब अपने समाज प्रेम, समाज के लिये कुछ करने, समाज को संगठित करने, समाज की अच्छाइयों का प्रचार करने, समाज के व्यक्तियों को उंचा उठाने. समाज में आपसी संपर्क और प्रेमभाव स्थापित करने के लिये निकलती हैं। वे अपने उद्देश्यों में बहुत कुछ सफल भी होती हैं परन्तु समाज की उदासीनता समाज बंधुओं की शोषणवृत्ति आदि के कारण वे अकाल मौत के मुंह में समा जाती है। इससे न केवल उनके प्रकाशकों की ही हानि होती है बल्कि पूरे समाज की हानि होती है और अच्छे अच्छे व्यक्तियों का सामाजिक विकास रुक जाता है।

देश में आज लगभग १ दर्जन अग्रवाल समाज की पत्र पत्रिकाऐं प्रकाशित हो रही हैं परन्तु उनमें से एक की भी आर्थिक दशा ऐसी नहीं है कि जिनके बारे में यह कहा जा सके कि यह पत्र पत्रिका कम से कम इतने दिन तो प्रकाशित हो सकेगी। प्रत्येक की यही शिकायत है और वह सत्य है कि जिनको भी पत्र पत्रिकाएं भेजी जाती हैं उनमें से अधिकाश या ९०% तक न उनका शुल्क भेजते हैं, न उसे पत्र-पत्रिका न भेजने के लिये लिखते हैं और न कुछ उत्तर ही देते हैं फिर विज्ञापन की तो बात ही क्या की जावे। विज्ञापन भेजन की प्रार्थना क संबध में १०० मे से ९९ के कोई उत्तर नहीं मिलते। एक का उत्तर याने विज्ञापन भेजा गया है ऐसा भी नही होता। पत्र पत्रिकाओ में जो विज्ञापन छपते है वे या तो प्रकाशक या सपादक के व्यक्तिगत सबध, प्रभाव, दबाव या विज्ञापनदाता की अनुचित खुशामद के कारण हो रहते है। इस से प्रत्येक पत्र पत्रिका का भविष्य अधकारमय अकाल मौत के गाल मे और स्तर उतना उचा नही होता जितना होना चाहिये। यह समाज के लिये न केवल घातक है बल्कि लज्जाजनक भी है और इसे अनुभव किया जाना चाहिये।

सामाजिक पत्र पत्रिकाओं के प्रकाशन की परंपरा लगभग १०० वर्षों से है और उसी के बाद संगठन की परम्परा पड़ी परन्तु एक की मौत, दूसरे की मौत का कारण बन गई। जो जीवित रहा वह परस्पर जीवन दान से। उसका एक सबसे बड़ा उदाहरण हैं "वैश्य हितकारी" का जो की अ० भा० वैश्य महासभा की पत्रिका है और लगभग ७५ वर्षों से आज भी लड़खड़ाते लड़खड़ाते प्रकाशित हो रही हैं फिर भले ही वह बीच बीच में अपने प्रकाशन में थोड़े और बड़े समय तक दंडित रही थी।

अ० भा० अग्रवाल महासभा के १९१९ में जन्म लेने के बाद, वर्षों तक "अग्रवाल" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता रहा परन्तु १९३७ के लगभग उसके दम तोड़ते ही महासभा भी नाम शेष रह गई।

१९५२ में नागपुर में "अग्रवाल समाचार" साप्ताहिक, १९५७ में आगरा से "अग्रबन्धु" मासिक एवं जयपुर से "अग्रगामी" मासिक के प्रकाशन से देश में फिर समाज संगठन की लहर फैली, अनेकों सामाजिक संगठन बने; देश भर में विशेषकर विदर्भ में अनेक अग्रसेन भवन बने। नागपुर में अ० भा० अग्रवाल महासभा का अभूतपूर्व अधिवेशन हुआ, "रेल्वे प्लेटफार्म" नामक फिल्म में भारतवासियों के बुरे चित्रण के खिलाफ आवाज उठाई गई जिससे उसका प्रदर्शन रुक गया और झरिमा में तो प्रदर्शनकारियों द्वारा सिनेमाघर ही फूंक दिया गया जिससे गोली चली और एक व्यक्ति मारा भी गया। फिर १९५६ में उसके "राष्ट्र-दूत" के नाम से सार्वजनिक रूप से रूपान्तर के बाद फिर वर्षों देश में खामोशी छायी रही। कुछ छुट पुट प्रयत्न रहे पर वे स्थानीय और स्थिरताहीन ही रहे।

आज भी "अग्रवाल समाचार", "मंगल मिलन", एव अग्रबन्धु आदि के कारण ही अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन बना, चल रहा है। नगर नगर और ग्राम ग्राम में जो संगठन, सुधार और कार्यों की लहर है वह सामाजिक पत्र पत्रिकाओं के कारण ही है परन्तु जब वे ही स्थिर नहीं है, उनकी आर्थिक स्थिति चिंतनीय है। उनके ग्राहक उनका शुल्क नहीं भेजते। उचित संख्या में ग्राहक नहीं बनते और उन्हें विज्ञापन नहीं मिलते, इसलिये वे कब बन्द हो जावेंगी कहा नहीं जा सकता। इसलिये जिस प्रकार पत्र पत्रिकाओं का भविष्य अंधकार में है उसी प्रकार उससे कहीं अधिक संगठनों का भविष्य खतरे में हैं इससे इन्कार करना, सर पर लटकती मौत से इन्कार करना है। खतरे को टालने का एकमात्र उपाय है कि प्रत्येक संगठन समाज प्रेमी, कार्यकर्ता, धनीमानी और उद्योगपति, वर्तमान पत्र पत्रिकाओं को तन मन धन से सहयोग दें। जहाँ नहीं है वहां कम से कम एक प्रदेश में एक के हिसाब से नये नये प्रकाशन करवाये। बडे बड़े संगठन स्वयं की भी पत्रिकायें प्रकाशित करें और अपनी आय का उचित अंश उस पर खर्च करें। संगठनों को तो अपनी आय का २५ प्रतिशत तक इन पर खर्च करना चाहिये। यह उनका खर्च नहीं पूंजी नियोजन सिद्ध होगा चूंकि प्रचार संगठन का सबसे बड़ा माध्यम और सुदृढ़ता का हामी है और वह पत्र पत्रिकायें ही दे सकते हैं।

सामाजिक पत्र पत्रिकाओं को भी चाहिये कि वे अपनी एक अ० भा० संगठन स्थापित करे, एक ऐसी नीति अपनायें और कार्यक्रम निर्धारित करें जिससे उनका स्तर सुधरे और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो। वे परस्पर सहयोग की भावना से काम करे, अनुचित खुशामदखोरी से बाज आये, भले बुरे का न कर समाचार, विचार और प्रचार करे तो उनका भी भविष्य उज्जवल बनाया जा सकता है। आज की स्थिति में और समाज के हित में यही उनका उत्तरदायित्व है और वे जितनी जल्दी इसको समझेंगे उतनी ही जल्दी उनका हित सम्भव है।

युवा

संगठन और उसकी उपयोगिताएँ

—इन्द्रराज बंसल, मद्रास

समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए होते हैं व्यवस्था और संचालन। पुरानी पीढ़ी व्यवस्था का काम करती है तो नयी पीढ़ी सवारने का। यही क्रम जब से सभ्य समाजों की स्थापना हुई तब से चलता आ रहा है युवा और बुजुर्ग पीढ़ी की समयानुसार उसकी अलग अलग समस्याए रही हैं और आज भी हैं। कभी युवा पीढ़ी बाह्य दबावों से उत्पीड़ित रही है तो कभी बुजुर्गों की बुजुर्गियत से आक्रान्त।

आज की परिस्थितियों में युवा और बुजुर्ग (पुरानी पीढी) को एक दूसरे का पूरक मानना असंगत नहीं लगता। वैज्ञानिक उपलब्धियों वाले इस युग में जब परिस्थितियां तेजी से बदलती जा रही हैं आन्तरिक दबावों का अवमूल्यन होता जा रहा है। इसी बाहर और भीतर की कड़ी को जोड़ने का काम आज युवा संस्थाए या संगठन कर रहे हैं। अग्रवाल संगठनों की उपयोगिता सामाजिक कुरीतियों में सुधार करने, अनैतिकता का विद्रोह करने, तथा उन्नत समाज की संरचना में योग देने में ही निहित है। कई वर्गों में—बटे हुए समाज के समाने कई ऐसी समस्याएं हैं जिनका निदान अग्रवाल युवा संगठनों द्वारा ही विशेष रूप से सम्भव है। ये समस्याएं हैं विसंगति की, असंगति की, सहिष्णुता की और बिखराव की। मनुष्य को अगर समानता का अधिकार प्रदान कर, रूढ़ियों का पर्दाफाश कर आगे बढ़ने की अगर किसी में शक्ति है तो वह है युवा संगठन। इसका मतलब यह नहीं कि सामाजिक संरचना में तबदीली लाने के लिए खुला विद्रोह कर दिया जाए या क्रान्ति का सहारा लिया जाए। हमारे देश की मिट्टी पर विद्रोह की सम्भावना तो है लेकिन क्रान्ति की सम्भावना प्रायः नहीं के बराबर हैं क्योंकि हमारे देश की सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक संरचना कुछ इस प्रकार की है कि क्रान्ति किसी भी क्षेत्र में शायद सम्भव नहीं। यहाँ तो शालीनता और सावधानी से उठाये गये कदम ही कारगर सिद्ध होते हैं।

आज का युग विश्व के साथ कदम मिलाकर चलने का हैं जब कोई पढ़ी लिखी नारी सम्भ्रान्त परिवार की हो और वह सामाजिक मंच पर कोई कार्य करना चाहती हो या नोकरी कर अपनी शिक्षा और अनुभव का उपयोगकर राष्ट्रीय या सामाजिक विकास में योग देना चाहती हो तो उसके मार्ग में अनागनत

रोड़े अटका दिए जाते हैं। नारी मुक्ति आन्दोलन, नारी कल्याण आन्दोलन तथा अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष का आदि-आदि रूढ़िवादी शक्तियों के कारण ही विफल रहे हैं। इन विफलताओं के मूल में उपर्युक्त तत्वों की विशेष भूमिका रही है। नारी और नर के बीच समानता का अधिकार कानून बना कर दे तो दिया गया है लेकिन सामाजिक स्तर पर अभी अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है जिसके लिए युवा संगठन प्रयत्नशील हैं।

आज जितने परिवर्तन हुए हैं वे सभी युवा और युवा संगठनों द्वारा ही सामाजिक स्तर पर हुए हैं। नारी आज नर के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तथा समान रूप से समान कार्य करती हुई आफिसों अस्पतालों, स्कूलों आदि के साथ-साथ तकनीका और वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी कार्यरत है। अगर सभी युवा एक ही लकीर के फकीर होते तथा अपनी सामाजिक मार्यादा और संस्कार की बातों से चिपके होते तो आज नर और नारी के बीच की दूरी चूल्हे और ड्राइंगरूम की होती।

स्थिति का जायजा अगर लिया जाए तो अभी युवा समाज और युवा संगठनों को कई मंजिले पार करनी है। दहेज रूपी अमानवीय प्रथा को मिटाने का जितना कारगर प्रयास बीसवी शताब्दी में किया गया या किया जा रहा है उतना पहले कभी नहीं किया गया था। पहले सोचने और-समझने का कार्य अधिक हुआ। और दिन प्रतिदिन ज्यों-ज्यों आय के स्रोत बढ़ते गये त्यों दिखावा और मान सम्मान के कारण दहेज बढता गया। आज लोगों के सोचने का तरीका बदल चुका है। पहले तो लाग चांद पर स्वर्ग है तथा उस पर देवताओं का निवास है कहकर अन्धविश्वास को बढ़ावा दिया करते थे आज विज्ञान ने उनकी उस धारणा का जड़ मूल से पर्दाफाश कर दिया है। दहेज के बारे में भी परम्परा रूपी अन्धविश्वास जो समाज में पलता चला जा रहा है एक दिन अवश्य युवक संगठन उसे निर्मूल सिद्ध करके रहेंगे।

समाज में विसंगतियों का मूल कारण समाज का वर्गों में बंटा होना है इसी वर्ग विभाजन को लेकर मार्क्स, लेनिन, गाँधी, काम और सात्र आदि ने सामाजिक संरचना के विषय में नए-नए आयाम दिए। गांधीवाद का मूल सिद्धान्त बुद्ध, महावीर और ईसा के सत्य और अहिंसा के साथ-साथ मानव समानता का है। स्वतन्त्रत प्राप्ति के बाद सामाजिक स्तर पर एक वर्ग अधिकाधिक अमीर बनता चला गया तो दूसरा गरीब आज इस खाई को पाटने के लिए बीस सूत्रीय कार्यक्रम तथा चार सूत्रीय कार्यक्रम कारगर साबित हो रहे है। गरीबी हटाओं का नारा भी समृद्धि और गरीबी के बीच की खाई को पाटने के लिए ही दिया गया था। लेकिन जब तक किसी नारे को सामाजिक संरक्षण प्राप्त नहीं होगा, वह केवल हवा में उड़ कर ही रह जाता है।

समस्त विश्व के भावी कर्णधार युवक ही होते हैं। इतिहास साक्षी है कि जब कभी आन्दोलन, विद्रोह या क्रान्तियाँ हुई युवा वर्ग के संगठन से ही सफल हुई। नए समाज के संरचना के लिए कुरीतियों को दूर करने के लिए, तथा विकास का मार्ग प्रसस्त करने के लिए युवा शक्तियों को नकारा नहीं जा सकता। अग्रवाल युवा संगठनों के माध्यम मे वे सभी कार्य किये जा सकते हैं जिनकी आज समाज को आवश्यकता है। परिष्करण और संरचना की भूमिका में युवा संगठनों की उपादेयता इसी से सिद्ध होती है कि दहेज जैसी सामाजिक कोढ़ की बिमारी का धीरे-धीरे खात्मा होता जा रहा है। जागृति के आगे कोई भी रोड़ा टिक नहीं सकता। आज युवा संगठनों के माध्यम से पूरे देश की युवाचेतना में कुछ कर गुजरने की भावना का जन्म हो चुका है। आज, कल या परसो, कोई भी देश या समाज युवा शक्तियों को नकार कर विश्व की दौड़ में आगे नहीं बढ़ सकता।

गर्म और नर्म खून में जितना अन्तर होता है उतना ही अन्तर युवा और बुजुर्गपीढ़ी में होता है। उम्र के अनुसार जिस्म में उबाल भी होता है। इस उबाल को ही केन्द्र मानकर युवापीढ़ी पर अनुशासन हीनता, विछृंखलता, अनास्थावादी जैसे आरोप लगाये जाते है इन आरोपों के मूल में बाह्य संरचना और परिवेश का बहुत बड़ा हाथ रहता है। युवा पीढ़ी को गुमराही के रास्ते ले जाने वालों से बचना चाहिए। चाहे यह सामाजिक गुमराही हो या राष्ट्रीय। युवा संगठनों की मूल आवश्यकता स्वास्थ परम्परा को प्रतिष्ठापित करना है। अग्रवाल युवा संगठनों के आगे दहेज, बन्धुत्व और चिन्तन की सुघड़ता का प्रश्न अहंम् है।

युवा संगठन सामुहिक विवाह को प्रश्रय देने या दिलाने में सक्रिय है। अन-मेल विवाह को रोकने के प्रति जागरूक है, तथा दहेज को समूल रोकने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ दिखाई देता है। विधवा विवाह की समस्या भी आज हमारे सामने हैं। अग्रवाल समाज में विधवा विवाह को उतना प्रश्रय नहीं मिला हैं जितना मिलना चाहिए। इस विषय में सोचने का प्रयास भी युवा संगठनों को आज करना चाहिए जिसके लिए अग्रवाल युवा संगठन गम्भीरता से सोच रहा है। समाज में होने वाले आयोजनों आदि को सुचाररूप से सफल बनाने में युवा संगठनों को उपयोगिता स्वतः सिद्ध सी है।

वरद हस्त श्री अग्रसेन का, लक्ष्मी माता का वरदान।
कृषि, वाणिज्य सेवक बन जाओ, करे देश जाति उत्थान॥
लाला लाजपत, भारतेन्दु कवि, शादीलाल से न्यायाधीश।
नर नाहर, मालव केशरी, ओओ इन्हें झुकाएँ शीश॥

—त्रिलोक

दहेज की बलिवेदी पर

प्रबुद्ध समाज का कर्तव्य

—श्री जगद्गुरू शङ्कराचार्यजी महाराज

जब मैं अपने समाज में अधिक आयु की अविवाहित लड़कियों को देखता हूं, तो मुझे अपने सामाजिक जीवन के इस पक्ष पर सबसे अधिक दुःख होता है। ये लड़कियाँ अकथनीय मानसिक यातनाएँ सहन कर रही हैं और इनमें से कुछ ने सजल नेत्रों से मुझ से प्रश्न किया कि हमारा भी कभी विवाह हो सकेगा ? इस प्रकार की परिस्थितियाँ भावी पीढ़ी के लिए अत्यन्त ही विनाशकारी सिद्ध होने वाली हैं। इसका निदान खोजा जाना है।

यदि कानून ही मुख्यतः लड़कियों के विवाह के लिए उत्तरदायी है, तो क्या कारण है कि विवाह-संस्कार समुचित आयु में नहीं किया जाता, जब कि इसके लिये कोई वैधानिक अड़चन भी हमारे समक्ष नहीं है। उत्तर सीधा-सा यह है कि विवाह आजकल एक आर्थिक समस्या बनकर रह गया है। यह एक निर्विवाद सत्य है कि बहुत से माता-पिता दहेज की उस माँग को पूरा करने में सर्वथा असमर्थ हैं, जो उनसे की जाती हैं। कुछ माता-पिता हमारे समाज में ऐसे भी है जो अपनी बेटियों के विवाह सम्पन्न करने के लिए, लिए गये ऋण को उतारने में बहुत बुरी तरह असमर्थ हैं और फल स्वरूप दुखी तथा परेशान हैं।

अतः जो लोग समाज, संस्कृति और धर्म को समुन्नत देखना चाहते हैं, उन सभी को ऐसे पग उठाने चाहिएँ, जिनसे दहेज-प्रथा का अन्त हो सके। प्रत्येक विवाह-योग्य पुत्र के पिता को भावी पीढ़ी के हित में यह त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि लड़के के माता-पिता लड़की और उसके परिवार के बारे में पूर्णतः सन्तुष्ट हों, तो उन्हें लड़की के माता पिता से बगैर लेन-देन की आशा किये तुरन्त विवाह करने के लिए उद्यत हो जाना चाहिए। इससे प्रतिष्ठा में कोई कमी नहीं होगी।

दूसरी ओर लड़के वालों का यह छोटा-सा त्याग समाज की पवित्रता, राष्ट्रीय संस्कृति और युग-कल्याण के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा। जब हमने देश की स्वतन्त्रता के लिए अकथनीय यातनाएँ सही हैं और अनगिनत बलिदान दिये है, तो क्या हम धर्म की रक्षा के लिए दहेज न लेने का छोटा-सा त्याग नहीं कर सकते ? समय की माँग हैं कि यदि हम विवाहों पर होने वाले व्यर्थ खर्चों में कमी नहीं करते, तो आजकल के इस मंहगाई के समय में अपनी आर्थिक स्थिति को सन्तुलित नहीं रख सकते।

अतः प्रबुद्ध समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि विवाह जैसे पवित्र संस्कार को एक व्यापार न बनाये। लेन-देन की खींचतान से परस्पर कटुता बढ़ती है और दो परिवारों के मधुर सम्बन्ध नष्ट हो जाने की सम्भावना उत्पन्न हो सकती है। दहेज की बुराई का निराकरण, वर्तमान की आर्थिक विपन्नता एवं आवश्यक वस्तुओं के अभाव को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

वर्तमान दहेज आदि कुप्रथायें

असंगठित समाज की देन है

— श्रीमती सरस्वती अग्रवाल राजनांदगांव

भारतीय संस्कृति के प्रारम्भिक काल में सामाजिक संगठन ही जीवन का मूलमंत्र था। प्रत्येक समाज की एक पंचायत होती थी उसके कार्यकर्ता होते थे। जिनके निर्णय पर समाज की बागडोर निबधि गति से आगे बढ़ती थी। व्यक्ति अपराधी प्रवृति से भय खाता था, अत. समाज के उत्थान का सहयोगी बनता था।

हमारे ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं कि जब तक जनता में संगठन रहा वह जनार्दन रूप में मानी जाती रही परन्तु ज्योंहीं उसमें स्वार्थ वृत्ति का प्रवेश हुआ वह असंगठित होकर समाज के लिये दुखदाई बन गई। संगठन की शक्ति से ही राम ने बानरों की सेना द्वारा गर्वरूपी राक्षसों का पतन किया इस दिशा में राम राज्य संगठित समाज का स्वर्णयुग माना जाता है।

समाज का सबसे बड़ा सिरदर्द है कुरीतियां। समाज में बहुत सी प्रथायें ऐसी चल पड़ी है कि जिन्हें बुद्धि ग्राह्य नहीं करती फिर भी किसी समय यह स्थिति होती है कि रीति रिवाज के लिये उसे अपव्यय न करने पर सामाजिक भर्त्सना प्राप्त होत है। यदि समाज संगठित हो तो यह समस्या उत्पन्न ही न हो। असंगठित समाज की कुरीतियां "सुरसा के मुख' से भी भयानक होती है। वह कौनसा सुदिन होगा जब कोई रामभक्त हनुमान इसके उदर से कुरीतियों को निकालकर समाज को संगठित कर सकेगा।

विवाह शादी को ही लीजिये ? धूम धाम आतिशबाजी, बाजे-गाजे, दावत, दहेज कितना पैसा खर्च होता है। पैसों की होली खुले रूप से जलाई जाती है। क्यों ? केवल चन्द क्षणों की खुशी के लिए। किन्तु आपको यह खुशी आपही को कितनी मंहगी पड़ती है। इसका अन्दाज तो आप तब लगाते हैं, जब वह खुशी के क्षण निकल जाते हैं, और आप अपने को कर्ज एवं दुखी जीवन के भार से युक्त, भयभीत एव त्रसित पाते हैं। यह त्रास अन्ततः ईमानदार को बेईमान बनाता है। अच्छे को बुरा बनाता है। आज यदि समाज में संगठन हो और प्रत्येक कार्य की परिपाटी बना दी जावे तो यह व्यर्थ का खर्च तथा मानव जीवन का नैतिक पतन अवश्य ही कम होगा।

दहेज की असमर्थता के कारण अगणित बच्चियाँ कुमारी रह जाती है। बूढ़े या अयोग्य के गले बांध दी जाती हैं। परिणाम यह होता है वैधव्य भोगना पड़ता हैं। आत्महत्या करनी पड़ती है या जीवन भर जलते रहना पड़ता हैं। विवाहों में होने वाला अपव्यय, मृत्युभोज, तीज त्यौहारों पर भेजे जाने वाले उपहार, जनेऊ मुण्डन आदि के नाम पर लोग लम्बी चौड़ी दावतें खाते हैं।

आज परिस्थिति ऐसी है कि हर कोई इन बुराईयों से परेशान हैं और चाहता है कि ये जितनी जल्दी मिटें उतना ही अच्छा। परन्तु संगठन न होने के कारण पहल करने में हर व्यक्ति डरता है। कहते हैं अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता परन्तु "संगठित हँस व्याध का जाल भी लेकर उड़ सकते हैं।" धर्म और परम्परा की दुहाई देना व्यर्थ हैं। हमारे समाज में आज भी इनसे विरोधी प्रथायें चल रही है जिनको देखते हुए रीतिरिवाजों को केवल क्षेत्रीय रस्म रिवाज ही कहा जा सकता है। आज राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश में पर्दाप्रथा है इसके विपरीत गुजरात, महाराष्ट्र, दक्षिण भारत में पर्दाप्रथा का कहीं भी नाम नहीं है क्या यहाँ की नारियों में चारित्रिक स्तर नहीं होता ? कुछ अंशों में अधिक ही होता है।

समाज को सुविकसित एवं शान्तिमय बनाने के लिये हमें सामाजिक कुरीतियों से हटकर लोहा लेना पड़ेगा और वह हम तब ले सकते हैं जब हम संगठित हो हमारी भुजायें सशक्त एवं हजारों की मात्रा में हों। हमारे मस्तिक परिपक्व हो जो समाज को एक सूत्र में पिरो सकें जिस समाज में व्यक्ति एक दूसरे के दुखदर्द में सम्मिलित रहते हैं। सुख सम्पत्ति बाँट कर रखते हैं परस्पर स्नेह सौजन्यता का परिचय देते हुए एक दूसरे को सुखी बनाने का प्रयत्न करते हैं वह संगठित समाज संसार का सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। अच्छे व्यक्तित्व संगठित समाज में ही पनपते हैं।

संगठन ही शक्ति है आज का बीससूत्रीय कार्यक्रम का प्रथम सूत्र है। क्या ही अच्छा हो अगर हम उसे अपने चरित्र में उतारकर शब्दों की गरिमा को सार्थक कर सकें। असंगठित समाज को संगठन की मजबूत डोरी से बाँधकर समाज को नम्रता, सज्जनता नागरिकता एवं कर्तव्यपरायणता की भावना से ओतप्रोत कर समाज की कुरीतियों को दूर कर सके। वैसे भी पीड़ा पूर्णरूप से बढ़ चुकी है और अत्याधिक दर्द भी कभी कभी दवा बन जाता है। दिशायें निश्चित हो चुकी है समाज पीड़ा से व्यथित होकर उसी ओर भाग रहा है और वह दिन दूर नहीं दिख रहा है जब कश्मीर से कन्याकुमारी, राजस्थान से आसाम तक हमारा एक संगठित स्वस्थ समाज होगा और इन कुरीतियों को इस प्रकार खदेड़ा जायेगा कि वे भारत के किसी भी कोने में प्रश्रय न पा सकेंगी।

सामाजिक कहानी—

वकील बाबू की पत्नी

— कु० भारतीराव, अहमदाबाद

आज राखी का दिन है। सुलोचना ने बड़े प्रेम से अपने भैया को राखी भेजी थी। अतः भाइयों ने भी अपनी शक्ति के अनुसार उपहार भेजे थे। बड़ा भाई राकेश जो कि एक बैंक में मैनेजर था, उसने बहन के लिये एक सौ एक रुपए भेजे थे। दूसरा भाई बसंत जो कि सरकारी अस्पताल में डॉक्टर था और अपनी अलग प्रेक्टिस भी चलाता था, उसने सुलोचना के लिये एक कीमती साड़ी भेंट की थी। लेकिन सबसे छोटा भाई महेश किसी दफ्तर में क्लर्क था। वह सुलोचना से बड़ा स्नेह रखता था फिर भी वह उस स्नेह को रुपये या कपड़ों के द्वारा प्रकट न कर सकता था। महेश की तनख्वाह सिर्फ चार सौ रुपए महीने की थी। बड़ी मुश्किल से घर का खर्चा चलाता। राखी के अवसर पर भी उसने रामलाल से उधार लेकर इक्यावन रुपए भेजे थे।

सुलोचना बसंत भैया की भेजी साड़ी पहने फूली नहीं समा रही थी। और क्यों न हो वह स्वयं भी तो वकील की पत्नी थी। उसे किस बात की कमी थी? वकील साहब भी, इनकी टोपी उनके सिर और उनकी टोपी इनके सिर पर रखकर, खूब कमाई करते थे। सुलोचना को रिश्ते से भी कुछ अधिक मोह पैसे से था। वह पैसा व रिश्ता, दोनों को अपने मन के तराजू के पलड़े पर रखकर तोलती थी, जिसमें पैसे का पलड़ा ही भारी रहता। अतः यह स्वाभाविक ही था कि वह बड़े भैया बसंत और राकेश की ओर अधिक झुकती थी। हर साल उनके बच्चों के लिये फल मिठाई व कपड़े भेजकर अपना प्रेम प्रकट करती। मगर महेश के बच्चों को बुआ के मीठे बोल भी प्राप्त नहीं थे।

महेश यह सब जानकर भी अनजान था। एक ही माँ की सन्तानें और एक ही खून जिनमें प्रवाह कर रहा है, उनमें ही कितना अन्तर है। प्रकृति की इस विचित्र सृष्टि पर उसे हँसी आ जाती थी। महेश के लिये लक्ष्मी रूठी हुई थी। लेकिन वह उसी जिन्दगी में तृप्त रहना चाहता था।

नियति की रीति भी अजीब है। आज गरीब है तो वह कल लक्षाधिपति भी हो सकता है। और जो धनवान है वह कल को भिखारी भी बन सकता है। नियति अपना पाँसा फैंकती है और खेलती है। वह रूलाती है और वही हँसाती है। इन्सान किसी बात पर गर्व करता है और कहता है कि सब मैं ही करता हूँ सर्वस्व मेरा ही है। परन्तु क्या वह यह जानता है कि विधि उसके पीछे अट्टहास कर रही है?

इसी प्रकार इन चारों की जिंदगी में भी समय करवट बदल रहा था। वकील साहब की वह शानो-शौकत नहीं रही। सुलोचना भी बुढापे का शिकार होती चली जा रही थी। और उसे दो बार हृदयाघात हो चुके थे। बड़ी कमजोर और निराश लगती थी। धीरे-धीरे वकील साहब की पूँजी घटने लगीं। उनकी तीन लड़कियाँ थी। उनके विवाह के लिये वकील साहब ने शक्ति से बाहर तक खर्च किया। और लोगों की वाहवाही लूटी।

अब उनके पास इतने केस भी नहीं आते थे। सुलोचना दिन-ब दिन कमजोर पड़ती जा रही थी। डॉक्टर और दवाइयों का खर्चा बढ़ रहा था। बसन्त एक डाक्टर होने के नाते और एक भाई होने के नाते एक-दो बार आकर अपना फर्ज निभा गया।

आखिर कब तक यों ही चलता? वह जान गई थी कि अब उसका अन्तिम समय आ गया है। अतः उसने सबको देखने की इच्छा प्रकट की।

तीन-चार दिनों में ही घर में तीनों भाई परिवार के साथ आ पहुँचे। सुलोचना की साँस धीमी-धीमी चल रही थी। दर्द के मारे उसका चेहरा पीला पड़ चुका था। सबको यह ज्ञात हो चुका था कि सुलोचना के ये दिन अन्तिम दिन हैं।

अन्त में वही हुआ जिसकी सबको आशंका थी। सुलोचना को तीसरा हृदयाघात हुआ और वह इस संसार को छोड़ चली गई।

वकील साहब ने ब्रह्मभोज कराना चाहा। लेकिन धन का अभाव उन्हें सता रहा था। उन्होंने आवाज नीची कर बसन्त और राकेश से कहा। मगर उन दोनों ने बहाना बनाना प्रारम्भ कर दिया कि लड़की का दहेज तैयार करना है, डॉक्टरी उपकरण लेने हैं इत्यादि। वकील बाबू समझ गए कि वे क्यों इनकार कर रहे हैं। वे स्वयं भी आदमी की नाड़ी से परिचित थे। वहां बैठा महेश विगत की ओर ताकता कुछ सोच रहा था।

रात काफी हो चुकी थी अतः सब सोने के लिए अपने-अपने कमरे की तरफ बढ़ गए। महेश वकील बाबू के पीछे हो लिया और हिचकिचाते बोल उठा—'जीजाजी यदि आप बुरा न माने तो मैं कुछ कहूँ?"

वकील बाबू को आश्चर्य जरूर हुआ फिर भी वे पूछ बैठे—'क्या है?"

"मेरे कुछ रुपये आने थे सो वे मैं साथ में लेकर आया था। अगर आप इन्हें स्वीकार करें तो मुझे खुशी होगी।''

वकील बाबू की आंखों में आभार और विस्मय एक साथ झलक उठें। उन्हें यह भी महसूस हुआ कि यदि आज किसी भी तरह से सुलोचना देख जाती तो वह जान जाती कि दुनिया में सिर्फ धन दौलत ही कुछ नहीं, इन्सानियत भी है। वे विचार करने लगे कि काश! सुलोचना इस अनमोल रत्न को पहचान पाती।

असंगठित समाज और उसका निराकरण

—वैद्य निरंजनलाल गौतम, देहली

समाज का पर्याय संगठन ही है जो समाज संगठित नहीं वह समाज कहलाने का अधिकारी भी नहीं है। असंगठित या विघठित समाज को तो समाज कहना भी 'समाज' शब्द की भावना का निरादर करना है, क्योंकि जब एक विचार के, एक लक्ष्य के एवं एक भावना के व्यक्ति परस्पर मिलकर एक साथ बैठते हैं, मिलकर मन्त्रणा करते हैं, जिनका चिन्तन एक दिशा में होता है, ऐसे व्यवस्थित, अनुशासित मानव समूह को ही समाज संज्ञा से विभूषित किया जाता है।

सृष्टि के प्रारम्भ में संगठित समाज की भावना के द्योतक ऋग्वेद में संगठन सूत्र के जो मन्त्र हैं वे आज भी विश्व का मार्ग दर्शन करते है। यथा—

सगच्छध्वं संवदध्वं सवोमनांसि जनताम्।
देवाभागम् यथा पूर्वे सजानाना उपासते॥

भवार्थ—हमारा गन्तक (लक्ष्य) स्थान एक हो हमारी आवाज एक हो, पूर्वजों की भांति हमारे चिन्तन की विचार धारा भी एक हो।

दुःख है कि इस सांस्कृतिक देन के पश्चात समाज भी में संगठन को कोई स्थान नहीं है। इसका कारण है यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रायः सभी सामाजिक संगठनों में में कुछ न कुछ गलत व्यक्ति जानकारी के अभाव में घुस ही जाते हैं जो बाद में अपने कुप्रयासों द्वारा संगठन में दरार उत्पन्न करने की चेष्टा करते रहते हैं।

इन विघठनकारी तत्वों में प्रायः वे लोग होते हैं जो अपने स्वार्थों और मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु ही किसी संगठन में प्रविष्ट होते हैं और अपना स्वार्थ सिद्ध न होने पर समाज को विघठित करने पर तुल जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों से संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का परिचय कराना अत्यन्त आवश्यक रहता है, ताकि वह उनकी बातों में न आकर संगठन का सही चुनाव कर उसे नई दिशा दे सके।

असंगठित समाज की दशा उस पतवार विहीन नौका की भांति है, जिसका न कोई खेवय्या है, न कोई मंजिल है। यहाँ तक की उस नौका पर कोई बैठकर उस पार जाने की इच्छा तक नहीं करता। संगठन की कमी के कारण ही गरीबी और अमीरी के बीच की भावनात्मक एकता में कमी आई है। संगठन ही इस कमी को दूर कर सकता है। वस्तुतः न कोई गरीब है, न अमीर है, यह तो मानव मन की हीनता है जो उसे अपनी कमजोरी का अहसास प्रतिक्षण कराती रहती है।

हजारों की संख्या में एक होकर जहाँ व्यक्ति एक कड़ी से जुड़ता है, वहाँ कौन क्या है यह कोई नहीं देखता, नाही उस दृष्टिकोण से कोई सम्मेलन में आता है। जिस प्रकार एक पिता अपने परिवार को देखकर खुश होता है कि उसकी वंश बेलि फल फूल रही है उसी प्रकार संगठन के रूप में हम सभी सामाजिकों को एक मंच पर देखकर समुतल्सित होते हैं। व्यक्ति यदि अपने मन से हीन भावना निकाल दे तो वह बहुत कुछ कर सकता है। अपने समाज में सबका स्थान एक है परन्तु वृद्धतम-लघुतम इकाई का, उमर की ढलान और उठान का अन्तर हमेशा रहता आया है रहा आएगा। वही अन्तर आज गरीबी अमीरी के रूप को लेकर उठाया जाता है। कौन गरीब है? कौन अमीर है? इसकी परिभाषा क्या है? सब अपने अपने प्रारब्ध को लेकर आए हैं, जी रहे है, अगले जीवन का कर्मफल बना रहे हैं। अतः संगठन की आड़ में जो हीनता की भावना है उससे रहित हो प्रत्येक का कर्तव्य है कि वह जैसे भी हो समाज का साथ दे।

संगठन के अर्थ यह कदापि नहीं होता कि उसके पास कोई कारूँ का खजाना है, अन्यथा जादू की छड़ी है जो वह घुमा कर सभी वर्गों में समानता ले आवे। संगठन का अर्थ तो यही है कि हम एक दूसरे से मिले, परस्पर भाइयों की भावना का विकास करें, कुरीतियों, अन्धविश्वास को मिटाकर पूरी वैश्य जाति को एक मंच पर एक बिरादरी घोषित करने की चेष्टा करे। किसी भाई को रोजगार नहीं है तो वह संगठन के मार्फत रोजगार पा सकता है, कोई नारी बेसहारा हैं तो उसे उसके पैरों पर खड़ा किया जा सकता है। कोई मेधावी छात्र पैसे के अभाव में बढ़ नहीं सकता तो उसे शिक्षा वृति दिलाई जा सकती है।

वस्तुतः संगठन का मूल उद्देश्य तो समाज में वर्ग भेद मिटाकर, जरूरत मंदों की सहायता कर, सभी को एक मंच पर लाना है। विशेषकर जो भाई आपस में ईर्ष्या, द्वेष से प्रेरित हो एक दूसरे की प्रतिष्ठा में कीचड़ उछालते हैं उनको भी संगठन की विशेष आवश्यकता है, जहाँ उनकी हीन भावना, परस्पर राग द्वेष की भावना का निराकरण हो सके। संगठन समय की मांग है अब इस सत्य को अधिक नहीं ठुकराया जा सकता।

बेटे-बेटी कोई न बेचे, बाल बृद्ध को करे न शादी।
व्यथा एक की सबकी हो जब, तब हो सामाजिक आजादी।

—त्रिलोक गोयल

"संगठन ही शक्ति है"

असंगठित समाज का ह्रास

—विशनचन्द अग्रवाल, लखनऊ

आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने तथा अपने परिवार में सीमित है। वह उसके बाहर निकलकर कुछ नहीं सोचता है। यही वजह है कि आज अग्रवाल जाति "जाति" के नाम से ऊर्ध्वमुखी न होकर अणुकणों की तरह यत्र-तत्र बिखरी दिखाई देती हैं।

एक समय था जबकि यह समाज सारे भारतवर्ष में एकता व संगठन का अद्भुत उदाहरण माना जाता था। समाज में परस्पर सब एक थे, गरीब-अमीर, ऊँच नीच की भावना तक नजर नहीं आती थी। किन्तु आज वही समाज विशृंखलित हो दुर्गुणों के जाल में फंसा रह गया है। यहां तक कि आज यदि हमारे बराबर में कोई हमारा भाई दुकान खोल लेता है तो वह दुश्मन दिखाई देने लग जाता है। हर प्रकार का प्रयत्न किया जाता है कि उसका व्यापार किसी तरह से बन्द करा दिया जाय। चाहे उसके लिये हमें जायज अथवा नाजायज कोई भी तरीका अपनाना पड़। किसी जाति के पतन की इससे अधिक सीमा क्या हो सकती है और इसका कारण है केवल हमारा असंगठित समाज, जिसके कारण हममें परस्पर भाई-चारे की भावना का अभाव हो गया है।

समाज के कितने ही बन्धुओं ने कुएँ, धर्मशालाएं, मन्दिर, अनाथालय, विधवा आश्रम एवं अन्य धार्मिक स्थानों का निर्माण कराया हैं, कितना ही रुपया हम आयकर एवं अन्य करों के रूप में देकर हम सरकार के हाथ मजबूत करते हैं। फिर भी आज हमारा समाज चोर-उचक्के, कालाबाजारियों आदि अनेक उपाधियों से विभूषित हैं। क्योंकि हमारी आवाज के पीछे कोई ठोस संगठन नहीं हैं।

आज सारी जाति अनेक कुरितियों एवं आडम्बरों से कलुषित है। झुंठा, दिखावा दहेज-प्रथा, निम्न भावनाओं एवं दूसरों की नकल के कारण हम अपने आप को भूल गये और अपने ही व्यवहार से हमने, अपनी ही जाति के संगठनों को जर्जर एवं खोखला कर डाला है। वह जाति जिसे समाज का नेतृत्व करना चाहिये था आज पिछलग्गु एवं भीरू बन गयी है। आज हमारे समाज के नवयुवक कार्य के अभाव में दर-दर की ठोकरें खा रहे है। कितनी ही शिक्षित नवयुवतियाँ अविवाहित जीवन व्यतीत कर रही है इसका मुल कारण है समाज में व्याप्त कुरितियों और निराकरण एवं संगठन की भावना का प्रादुर्भाव। हर्ष की बात हैं की कुम्भकर्णी नींद से जाग रहा समाज आज अखिल भारतीय सम्मेलन के रूप में संगठित होकर अपने पूर्वजीवन को पाने के लिये ललायित हो रहा है यदि हम सब इसमें सम्मिलित हों समुद्र में बूँद की भाँति अपने को घुला दे तो निश्चय ही अग्रवाल जाति राष्ट्रोन्नति में पुनः 'अग्र' बनकर अपने नाम को सार्थक कर सकेंगी।

संगठन की प्रमुख बाधाएँ और उनका निवारण

—बद्रीप्रसाद अग्रवाल, जबलपुर
उपाध्यक्ष अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन
अध्यक्ष म० प्र० अग्रवाल महासभा

कहते हैं संत तुकाराम को स्वर्ग ले जाने के लिए विमान आया। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, जीवन भर मैं तुझे कुछ दे न सका, चल आज तुझे स्वर्ग तो साथ ले ही चलूं जिसमें मानव जीवन का समस्त फल बिना कर्म-भोग के तुझे प्राप्त हो सके। उनकी स्त्री ने कहा—हां-हां जीवन भर तुम मुझे स्वर्ग ही तो दिखाते रहे जो आज मोक्ष दिखाने चले हो, जाओ तुम्हें जहां जाना हो, मैं अपने में ही खुश हूं और तुकाराम पीछे न देखते हुए, स्वयं सदेह स्वर्ग चले गये। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के साथ भी कुछ इसी तरह की बाधाएं जिन्हें हम नादानी अथवा पूर्वाग्रह की संज्ञा दे सकते हैं, सामने आ रही हैं।

राजनीतिक और सामाजिक संगठन में यही अन्तर होता है कि व्यक्ति को जहां राजनीति में, सरकारी अनुशासन में बंधे रहना पड़ता है, वहां सामाजिक संदर्भ में वह एकदम स्वतंत्र रहता है, चाहे जो बोल सकता है, चाहे जो कर सकता है। यहां ऐसा कोई मीसा जैसा मंत्र नहीं होता जिसके भय से व्यक्ति को सही रास्ते पर चलने को सम्मेलन के पदाधिकारी बाध्य कर सकें। अतः असंतुष्ट, असहयोगी लोगों के एक अलग ग्रुप बनते जाते हैं जिनका कार्य केवल जो भी अच्छा कार्य कर रहा हो, उन्हें नीचे गिराना या निरुत्साहित करना ही रहता है। तुलसीदास जी ने ऐसे व्यक्तियों के लिए लिखा है—

पर गुन सुनत दाह, पर दूषन, सुनत हरष बहुतेरो।
आप पाप को नगर बसावत सहि न सकत पर खेरो॥

ऐसे व्यक्ति जो दूसरे के गुणानुवाद सुनकर जलते हैं, सदा रहे हैं और सदा रहेंगे। ऐसी संस्थाएं भी जो स्वयं अपने अस्तित्व को ही सम्पूर्ण मानती हैं रहेंगी और रही आई हैं, परन्तु आज के संदर्भ में यदि ये व्यक्ति और संस्थाएं अपनी अहमियत की नींद से जागने की कोशिश नहीं करेंगी तो स्वर्ग से आया हुआ सिंहासन खाली तो जाएगा नहीं पीछे हटने वाले ही पीछे रह जाएंगे। समय किसी के लिये नहीं रुकता। आज वह समय आ गया है यदि हम संगठित नहीं हुए तो हमारा अस्तित्व ही विलीन हो जाएगा।

संगठन की दिशा में जो प्रमुख बाधाएं समझ में आ रही हैं उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

(१) व्यक्ति का अहंवाद, (२) प्रतिष्ठा पद की भूख (३) संगठन में विश्वास की कमी (४) व्यक्तिगत स्वार्थ की आशा से संगठन में प्रवेश (५) परस्पर ईर्ष्या-द्वेष की भावना।

व्यक्ति का अहंवाद—

सम्मेलन के सर्वाधिक विरोधी ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने संगठन में प्रमुख पदों पर कार्य कर रहे हैं। वे नहीं चाहते कि किसी बड़े सम्मेलन से संबद्धता प्राप्त कर वह सम्मेलन के पदाधिकारियों के नीचे कार्य करे। वस्तुतः यह उनके समझ का फेर है। सम्मेलन से सम्बद्धता प्राप्त करने न करने में उन्हें कोई नीचा नहीं देखना पड़ेगा, ना ही उनके कार्यों में कोई अन्तर आने वाला है, क्योंकि सम्मेलन का मुख्य ध्येय तो एक ही है कि वह बिखरी हुई इकाइयों को एकत्र करे। उनके निजी संगठन में हस्तक्षेप करना, अथवा उन्हें कोई आदेश देना सम्मेलन का ध्येय है ही नहीं। अतः ऐसे सभी नगरीय, प्रान्तीय संगठनों से आशा की जाती है कि वह इस सत्य को समझें और कम से कम एक बार एक झण्डे के नीचे एकत्र होकर अपनी शक्ति का परिचय राष्ट्र को देने में सहयोग देवें।

प्रतिष्ठा पद की भूख—

यह समस्या भी अनेकों अहम् व्यक्तियों को सम्मेलन में प्रवेश का बाधक बनती है। कुर्सी सीमित है, व्यक्ति अनेक हैं, अतः जिन्हें पद चाहिए वह येन-केन प्रकारेण केवल सम्मेलन को दोषी ठहराते हुए उसके दुर्बल पक्ष पर ही आघात करते नजर आते हैं। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति तुरन्त नहीं हो, तो भी ऐसे व्यक्तियों को निराश नहीं होना चाहिए। एक दिन सभी को आना है अपनी पारी का इन्तजार कर यदि व्यक्ति कार्य रत रहे तो निस्संदेह उसकी आकांक्षा पूरी होगी।

संगठन के प्रति विश्वास की कमी—

सम्मेलन चूंकि अभी नया नया ही बना है, अतः लोगों में अभी एकदम विश्वास नहीं आ पा रहा है कि यह संगठन भी अधिक दिनों तक जीवित रह कर कार्य कर पाएगा। क्योंकि लोगों के पुराने अनुभव अत्यन्त कड़वे हैं, अतः वह चाहते हैं कि इस दिशा में जो कार्य करें सोच-विचार कर करें। इसलिये वह 'देखो फिर आगे बढ़ो' वाली नीति पर चल रहे हैं। कुछ होने लगेगा तो हम भी अपना नाम लिखा लेंगे शहीदों में, अभी से क्यों मरने जायें। सम्मेलन का जहाँ तक प्रश्न है, इसे अत्यन्त समर्थ व्यक्तित्व का नेतृत्व मिला है फिर शंका कैसी ? आपका सहयोग ही सम्मेलन की सफलता है। मत भूलिए कि सम्मेलन यदि असफल होगा तो इसलिए नहीं कि कार्यकर्ताओं ने कार्य नहीं किया, बल्कि इसलिये होगा कि आपने सहयोग

नहीं दिया, संगठन पर विश्वास नहीं किया। सम्मेलन की सफलता का रहस्य आपका विश्वास है। इसे अपने विश्वास का सम्बल दीजिए यह सम्मेलन अवश्य पनपेगा।

व्यक्तिगत स्वार्थ की आशा से संगठन में प्रवेश करने वाले व्यक्ति—

प्रायः देखा गया है कि कुछ अवसरवादी तत्व जो केवल नाम व पद के भूखे हैं, पहले तो सम्मेलन के प्रारम्भ में खूब आएंगे, बड़ी-बड़ी बातें करेंगे और जब संगठन में उनको स्थान मिल जाता है तो वह अपनी शक्ल तक नहीं दिखाते। कार्य करने की क्षमता तो उनमें होती ही नहीं। अतः सभी संगठनों का यह उत्तरदायित्व है कि किसी पद पर चुनाव करने के पहले व्यक्ति की पृष्ठभूमि कार्य-क्षमता का पता अवश्य लगा ले, अन्यथा कई संस्थाएं तो ऐसे अवसरवादी व्यक्तियों के कारण ही अपना अस्तित्व खो बैठी हैं।

परस्पर ईर्ष्या राग-द्वेष की भावना—

सगठन व सम्मेलन के लिए प्रमुख बाधा है। क्योंकि किसी का नाम ऊपर आ रहा है, हमारा क्यों नहीं आ रहा है ? यह ईर्ष्या संगठन की तो क्या पूरे समाज की ही अवनति का कारण बनी है। हमारे समाज में पग-पग पर ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो अपने भाई को आगे बढ़ता देख कर खुश नहीं होते। हमें अपने हृदय से हीन भावना को निकालना है। समाज में बैठकर सब भाई एक होते हैं। कोई छोटा बड़ा नहीं होता। जब गरीब अमीर की कृपा का भिखारी नहीं है तो वह गरीब कैसा ? गरीब तो वह है जो दूसरों की कृपा का आकांक्षी है; हमारा आत्म-गौरव तो अभी भी इतना ऊँचा है कि हम अपने बाहुबल से आर्जित रोटी पर ही भरोसा रखते हैं, टुकड़े फेंककर दी गई रोटी के आकांक्षी हम कभी न रहे हैं न रहेंगे।

नवयुवकों को यह शिकायत है कि उन्हें कुछ करने नहीं दिया जाता। अहिंसा की लड़ाई में गाँधी का साथ देने वाले युवक क्या माँ-बाप की आज्ञा से आग में कूदे थे ? करने वाले को कोई बाधा सामने नहीं आती, न करने वाले के लिए अनेक बहाने हैं। हम यदि अच्छा कार्य करने जा रहे हैं तो विश्वास करिए हमें श्रद्धा, कठिन परिश्रम, त्याग भावना के साथ बड़प्पन, उदार परम्परा को त्याग कर ही आगे बढ़ना होगा। यह सत्य है कि यह काम अत्यन्त कठिन है, परन्तु नवयुवकों की डिक्सनरी में कठिन, असंभव जैसे शब्द ही नहीं हैं। अतः भाइयो उपर्युक्त बाधाओं का निराकरण करते हुए अपने मन को स्वच्छ बनाइए और सम्मेलन में सम्मिलित हो अपने उदार हृदय का परिचय दें। इसका फल तो भविष्य ही बतायेगा, परन्तु इतना अवश्य है कि इससे आपको कोई हानि होने वाली नहीं है, लाभांश ही अधिक है। ☼

संगठन और युवा दायित्व

—भरतकुमार अग्रवाल एम. ए. राजनांदगाँव

एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं इससे कोई भी इंकार नहीं कर सकता। आज का युग संगठन का युग है इसमें वही समाज देश या ईकाई प्रगति की दौड़ को जीत सकता है जो संगठित हो। अखिल भारतीय, मध्य प्रदेश अग्रवाल सभा का यह सम्मेलन निश्चय ही इस दिशा में महत्वपूर्ण कड़ी है। जब तक सम्पूर्ण अग्रवाल जाति का हृदय स्पन्दन एक नहीं हो जाता तब तक बाहरी आघातों के लिए हम तैयार नहीं हो सकते। भीतर की एकता, दृढ़ता और संकल्प बद्धता ही हमें बाहर की चुनौतियों के लिए बल दे सकेगी। प्रश्न यह है आज का युवा जातीय संगठन के लिए क्या करे! हमें जातीय संगठन के स्वरूपों एवं उपकरणों के संबंध में विचार करना होगा, हम क्यों और कैसी जाति हैं यह जानकर ही हम जातीय संगठन को मजबूत कर सकेगें।

आज अधिकांश गांव, नगर या महानगरों में अग्रवाल संगठन अस्तित्व में हैं, लेकिन इन संगठनों का समाज को योगदान लगभग नहीं के बराबर रहा है अधिकांश संगठन तो मृतप्रायः हैं। स्पर्द्धाशील नेताओं और शक्तिशाली लोगों के स्वार्थों ने इन संगठनों को हड़कंपी ज्वर में गला डाला है। ऐसे संगठनों में ऐसे व्यक्ति ही पदों पर आसीन हो जाते हैं जो बाद में संगठन या सुधार के कामों के लिए समय नहीं दे पाते। जिनको पद नहीं मिलते वे 'हमें क्या' की भावना से निष्क्रिय तठस्थता धारण कर लेते हैं या संगठन के हर अच्छे बुरे कार्य को गलत की दृष्टि से देखते हैं व संगठन की टांग पकड़कर पीछे खींचते रहते हैं। अधिकाश संगठनों में अच्छे प्रगतिशील बुद्धिजीवी, उत्साही लोग रहते हैं, उनके पास अच्छी योजनाएं भी रहती हैं लेकिन परिस्थितियों वश वह चाहकर भी समाज के लिए कुछ नहीं कर पाते। ऐसे स्थानों पर ही "आदर्श युवा संगठन" पहली आवश्यकता है। जो बड़े लोगों की उन योजनाओं को पूरा करने के लिए प्राण प्रण से भिड़ जाएं। दिशा निर्देशन, कुछ विशेष संशोधन योजना बुजुर्गों की रहे और उसके क्रियान्वयन के लिए 'आदर्श युवा संगठन" कार्य करे।

मैंने "आदर्श युवा संगठन" में आदर्श शब्द का प्रयोग इसलिए किया है, कि ऐसे युवा संगठन उन सभी बुराइयों से मुक्त होने चाहिए जो अन्यान्य संगठनों में सदियों से चली आ रही हैं जैसे पदलोलुपता, भाई भतीजावाद, (जो ऐसे छोटे जातीय संगठनों की कुर्सियों को अवांछित महत्व प्रदान करने के कारण उत्पन्न होते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, नाम बटोरने की अभिलाषा, व्यक्तिगत स्वार्थ और दूसरों के कार्यों या सुझावों में सिर्फ बुराई या गलती ढूंढने की दृष्टि। ऐसे युवा संगठनों में कर्मठ, अनुशासनप्रिय ऐसे युवा होने चाहिए जैसे सिर्फ १०० युवाओं से स्वामी विवेकानंद सारी दुनिया को बदल देने का दावा करते थे।

सीधी सी बात है आज का युवा संगठन धर्म, आध्यात्म, जातीय गौरव, संस्कृति का डंका पीट कर अपने हृदय की आवाज को न दबाये। वह अपनी शिक्षा के बदले जीवन की अंधस्पर्धा और भौतिकता की गर्त से बाहर निकलकर महाराज अग्रसेन के उन महान आदर्शों का प्रकाश दे जिसके लिए वह संगठन स्वयम् बना है। जहां संचय धर्म हो जाएगा वहां आत्मदान के फूल कैसे खिलेगें। जहां चेतन और जागरूक तथा प्रबुद्धमन से हमारे संगठन को सामाजिक हित की उष्मा नहीं मिलती वहाँ अवचेतन के हाथ की कठपुतली बनने से, दिखावे से क्या होगा?

युवा संगठन के पास एक ही मार्ग रह जाता है। अपरिसीम उदारता, अपार सहिष्णुता, उसे नव निर्माण के प्रयत्नों में गहरे उतरना होगा और उन्हें चिन्मय जीवन बोध, करुणा मैत्री और असंग्रह की नींव देनी होगी। आज के युवा को संगठन के आदर्शों के प्रति एक निष्ठा और जीवन की मूल्यगत भावना का विकास करना होगा। उसे भीतर से मुक्त, स्वस्थ, और कल्याणकारी होना होगा।

स्वार्थों की बेड़ियाँ खोलकर आज के युवा खुले आकाश के नीचे खड़े हों और सच्चे अर्थों में आत्मदानी बनें तो संगठन की सफलता निश्चित है। प्रश्न आज भावना का नहीं नैतिक उदारता और सर्वोच्च चारित्रिकता का है। कर्तव्य-हीनता, अर्थ लोलुपता, चारित्रिक विकृति और अनुत्तरदायी अकुशलता ने ही हमें काल की प्रवहमानता में रोक रखा है। बंधुओं गतिरोध हमारे भीतर है और विघटन हमारे चरित्र में है उसे बाहर खोजना व्यर्थ है। संगठन निर्माताओं का ही प्रतिबिम्ब होता है यदि हमारे संगठन समाज धर्म के निर्वाह में असमर्थ हैं तो सच्चे दोषी हम हैं।

भारतवर्ष और महाराजा अग्रसेन की समन्वय साधना अनेकता में एकता को चरितार्थ करती रही है। उपर से लादा हुआ संगठन हमें नहीं चाहिए। भावनात्मक नहीं तात्विक होकर ही हम एक हो सकते हैं हमें आंतरिक जीवन की पवित्रता और आचरण की सभ्यता पर लौटना है फिर कौन हमें काल की प्रवहमानता में रोक सकेगा?

वैश्य समाज

एक विश्लेषण

—मदनमोहन गुप्त, नई दिल्ली

प्राचीन काल में जब आर्यों का चार वर्णों में विभाजन हुआ तब गौ रक्षा कृषि-कार्य तथा व्यापार करने वाली जाति को वैश्य कहा गया। वैश्य का मूल अर्थ है प्रत्येक क्षेत्र में "प्रवेश करने वाला"। इस जाति की प्रतिष्ठा तथा गौरव-मान बहुत था अतः वैश्यों को 'महाजन' अर्थात् जनों में महान कहा गया। बाद में इसका 'श्रेष्ठि' या 'श्रेष्ठ' नाम पड़ गया जिसका रूप बदल कर भारत में सेठ तथा दक्षिण भारत में चेट्टि या चेट्टियर बन गया। प्राचीन पुस्तकों में स्टाक एक्सचेंज के लिए श्रेष्ठि-चत्त्वर (सेठों का चौक) शब्द का प्रयोग हुआ है। वैश्य वर्ण के लोगों को 'गुप्त' भी कहा जाता है जो व्यापारी वर्ग की गूढ़ता का प्रतीक है।

बाद में वैश्य जाति भी अन्य जातियों के समान अनेक उप-जातियों में बँट गई। अग्रोहा में अग्रसेन जी ने वैश्यों के शक्तिशाली गणराज्य की स्थापना की और वहाँ से वैश्य परिवार अग्रवाल कहलाए। अग्रोहा के पतन के पश्चात वे भारत के अन्य भागों में फैल गए और व्यापार में अग्रणी हुए।

यह जाति भारत के इतिहास में सदा बहुत ऊँचे स्थान पर प्रतिष्ठित रही है। देश तथा धर्म के लिए अपनी विशाल सम्पत्ति को अर्पण करने का भामाशाह ने जो उदाहरण रखा था उस पर कोई भी जाति गर्व कर सकती है। साहित्यिक क्षेत्र में इस जाति ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, कविवर रत्नाकर तथा जयशंकर प्रसाद जैसे ज्वाजल्यमान रत्न देश को दिये हैं। राजनैतिक क्षेत्र में महात्मा गाँधी, पंजाब केशरी लाला लाजपतराय, जमनालाल बजाज, डा० राम मनोहर लोहिया आदि अनेक वैश्य वीरों ने देश को उच्चकोटि का नेतृत्व प्रदान किया है। भारतीय दर्शन के क्षेत्र में डा० भगवानदास ने अद्वितीय कार्य किया था जिसको मान्यता देते हुए १९५५ में राष्ट्रपति द्वारा उन्हें सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया गया। न्यायायिक क्षेत्र में जस्टिस सरशादीलाल तथा भारत के भूतपूर्व उच्च न्यायाधिपति जस्टिस महाजन ने अपूर्व ख्याति प्राप्त की है। आज भी वैश्य समाज सेना, इंजीनियरी, शिक्षा, सरकारी सेवा आदि सभी क्षेत्रों में उच्च पदों पर आसीन है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी जाति देश सेवा के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रही है।

दानवीर तो जितने इस समाज में हुए हैं भारत के किसी अन्य समाज में नहीं हैं। किसी भी नगर या तीर्थ पर जाइये, इन लोगों द्वारा निर्मित विद्यालय चिकित्सालय, धर्मशालाएँ तथा मन्दिर आपको मिल जायेंगे। वैश्य वर्ण उदर के

समान है जो भोजन ग्रहण करके उसका स्वयं अपने पास संग्रह नहीं करता, अपितु उसके रक्त एवं रस बनाकर समाज रूपी शरीर के सभी अंगों को यथावश्यक रूप में शक्ति प्रदान करता है। वैश्य धन का अर्जन करता है किन्तु वह उसका उपयोग समाज कल्याण के लिये करता है।

वैश्य के लिये 'बनिया' शब्द भी प्रयोग होता है जिसका अर्थ 'वणिज' करने वाले से है। कई लोग इसका प्रयोग ईर्ष्यावश अपमानजनक रूप में करने लगे हैं किन्तु फिर भी हमें इस शब्द पर गर्व होना चाहिए, लज्जा नहीं। एक बार लोकसभा में 'बनिया सरकार' शब्दों का प्रयोग अपमानजनक रूप में किया गया था जिस पर श्री कमलनयन बजाज ने उसी समय यह कहा था :

> 'श्रीनाथ पाई ने 'बनिया' शब्द का प्रयोग किया है मुझे बनिया होने पर गर्व है। मैं बनिये का अर्थ बताता हूं। बनिया वह है जिसकी सबके साथ बन सकती है, बनिया वह है जो सबको अपना बना सकता है, बनिया वह है जो सब का बन सकता है, बनिया वह है जो सब कुछ बना सकता है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा जी भी बनिया थे। बनिया वह है जो सभी काम अच्छी तरह बना सके। हमारे शास्त्रों में बनिया को महाजन कहा गया है, अर्थात् जनों में जो महान है वह महाजन है। आपका इन्टेंशन अच्छा नहीं है आप इस शब्द को अपमान के साथ नहीं कह सकते हैं।"
>
> (लोकसभा वाद-विवाद १५-३-१९६६)।

अग्रसेन युग—अग्रसेन का युग वैश्य जाति का स्वर्णकाल था। अग्रसेन उन प्रवृत्तियों के प्रवर्तक थे, जिनका स्थान भारत तथा विश्व के इतिहास में बहुत ऊँचा है।

लोकतन्त्र—लोकतन्त्र की स्थापना कोई आधुनिक नई प्रवृत्ति नहीं है। अपितु प्राचीन भारत में तथा यूनान में अनेक गणराज्यों की स्थापना हुई थी। कौटिल्य अर्थशास्त्र में कठ, अरिष्ट्र, मालव आदि अनेक गणराज्यों का वर्णन है जिन्हें जनपद कहते थे। श्री अग्रसेन जी ने भी अग्रोहा गणराज्य की स्थापना करके और सारे अधिकार तथा शक्तियाँ स्वेच्छा से जनता को सौंपकार एक आदर्श उपस्थित किया था। उनके राज्य में जो समृद्धि तथा एकता विद्यमान थी वह अनुकरणीय थी।

समाजवाद— समाजवाद आजकल एक नारा बन गया है, और मार्क्स के समय से अब तक इसके अनेक अर्थ लगाए जाते रहे हैं, परन्तु कहीं भी समाजवाद पूरी सफलता से लागू नहीं किया जा सका है। कई देशों में समाजवाद का अर्थ तानाशाही और व्यक्तिगत अधिकारों का हनन बन गया है तो कहीं धनिकों को निर्धन बनाना ही समाजवाद समझा जाता है। हाँ, प्रत्येक स्थिति में बल प्रयोग ही समाजवाद का आधार होता है। इसके विपरीत श्री अग्रसेन जी ने स्वैच्छिक समाजवाद की स्थापना की थी जिसके अनुसार प्रत्येक नागरिक निर्धन

व्यक्ति की सहायता के लिए यथाशक्ति योगदान देने के लिए स्वयं तत्पर रहता था। एक मुद्रा तथा एक ईंट की परिपाटी एक अद्वितीय पद्धति थी जिसका विश्व के इतिहास में कहीं अन्यत्र उदाहरण नहीं मिलता।

उस समाजवाद में वर्ग-संघर्ष नहीं था, रक्तपात नहीं था, शासन का दबाव नहीं था, आन्दोलन नहीं थे, राष्ट्रीयकरण की आवश्यकता नहीं थी, अपितु ऐसी भावना तथा मनोवृत्ति का विकास हो चुका था जो निर्धनों को धनी बनाने में सहायक होती थी उस समाज में कोई याचक नहीं था, सभी दानी थे। उसी समय के संस्कारों का यह परिणाम है कि आज भी वैश्य सबसे अधिक दानवीर हैं और अपने धन का उपयोग विलासिता में करने की बजाय धर्मशाला, प्याऊ, मन्दिर आदि बनाने में करते हैं। भामाशाह ने इसी भावना से प्रेरित होकर अपनी जीवन भर की अर्जित विशाल सम्पत्ति राणा प्रताप के चरणों में अर्पित कर दी थी जिससे कि वे देश की रक्षा कर सकें।

उपरोक्त कारणों से लोकतन्त्र तथा समाजवाद के आदि-प्रेणता श्री अग्रसेनजी केवल अग्रवालों के ही नहीं बल्कि मानवता मात्र के हैं। आज विभिन्न तन्त्रों तथा वादों में भटकता संसार उनसे प्रेरणा तथा पथ-प्रदर्शन पाकर लाभ उठा सकता है।

दहेज प्रथा तथा वर-मूल्य—जाति का जहाँ भी उल्लेख होता है वहाँ इस दहेज प्रथा की चर्चा अवश्य उठ जाती है। वैसे तो यह प्रथा किसी न किसी रूप में सब जातियों में विद्यमान है और बढ़ती जा रही है परन्तु हमारी जाति में यह पराकाष्ठा तक पहुंच गई है और पुत्र का विवाह मानों व्यापार बन गया है जिसमें अधिक से अधिक धन प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके फल स्वरुप अनेक कन्याऐं अविवाहित ही रह जाती हैं, चाहे वे सुशिक्षित, सुन्दर तथा अन्यथा उपयुक्त हों, अथवा अन्य जातियों में चली जाती हैं।

स्मृतियों के अनुसार कन्या को सुसज्जित तथा सुअलंकृत करके विवाह में दहेज देना कर्त्तव्य माना गया है और प्रत्येक पिता अपने सामर्थ्य के बाहर भी इस कार्य को पूरा करना चाहता है और बारात का सर्वोत्तम आतिथ्य करना चाहता है। इसके अतिरिक्त, उससे धनराशि की माँग वह भी की जाती है जो न दहेज कहला सकती है और न शास्त्रसम्मत है। यह राशि तो वास्तव में वर-मूल्य है जो वर का पिता अपनी अनुकूल स्थिति होने के कारण बेचारे कन्या के पिता से वसूल करता है। यह वर-मूल्य की प्रथा अत्यन्त घृणित प्रथा है और वैश्य जाति के नाम पर एक कलंक है। कहाँ तो श्री अग्रसेन के समय से दान की प्रथा चली थी और कहां अब जाति का इतना पतन हो गया है कि वह दान लेने और पुत्र का विक्रय करने में गौरव मानने लगी है। इस प्रथा के फलस्रूप वैश्य जाति की समृद्धि में कमी होती जा रही है इस कलंक के धब्बे को जिसके कारण आज प्रत्येक वैश्य का सिर शर्म से झुका हुआ है, जितनी जल्दी हम मिटा सकें उतना श्रेयष्कर होगा। तभी हम पुनः सेठ 'श्रेष्ठि' कहलाने के पात्र होंगे।

समाजसेवी एवं लेखक बन्धु

भगवतशरण अग्रवाल
अहमदाबाद

सरस्वती अग्रवाल
राजनादगाँव

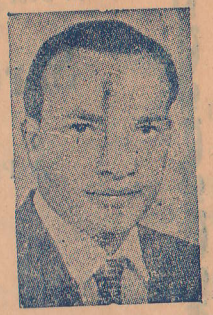

त्रिलोक गोयल
अजमेर

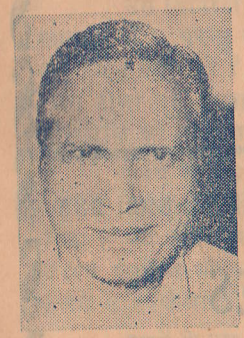

कल्याणजी अग्रवाल
इन्दौर

लक्ष्मीचन्द्र अग्रवाल
जबलपुर

शेखर अग्रवाल
इन्दौर

कु० मालती अग्रवाल
राजनांद गाँव

हरप्रसाद अग्रवाल
रायपुर

कन्हैयालाल अग्रवाल
राजनांदगाँव

With best Compliments from :

Saraswati Offset Printers

A Placc For Quality & Attractive Printing

SARASWATI HOUSE

A-5/II Narayana Industrial Area

New Delhi-*110028*

Phone : Factory : 587210
588438

Tele. : "Camelwala Phone : 392, 892, 283

VIJAY INDUSTRIES

Mfg. 'CAMEL BRAND' Pulses
Gunj Bazar, KHANDWA (M. P.)

Related Concerns—

Ramesh Trading Co. Khandwa.

Madhavlal Laxminaryan Agrawal Knandwa.

Rawdeo Laxminarayan, Khandwa.

कहानी—

लोभ का दुस्परिणाम

—शेखर अग्रवाल पिलानी

बहुत प्राचीन समय की बात है, एक शहर में चार व्यापारी रहते थे। वह चारों धर्म तथा राजनीति पारंगत अपने व्यवसाय में पूर्ण ज्ञान रखते थे।

एक बार देश में वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। लोग देश छोड़-छोड़ कर दूसरे देश में बसने जाने लगे। चारों व्यापारी भी अपना काम काज चलता न देख कर, दूसरे देश के लिए प्रस्थान कर दिए।

चलते-चलते राह में उन्हें एक बड़ा भारी घना जंगल मिला। चारों ने वहीं उचित स्थान देखकर विश्राम करने का निश्चय किया। सब सामान यथा योग्य जमाकार भोजन पकाया तथा खा पी कर सोने की तैयारी करने लगे (उसी समय एक व्यापारी ने कहा प्यास बहुत जोर से लगी है, परन्तु जल कहीं नहीं दीखता पहले जल की व्यवस्था करो फिर सोने की तैयारी करना।

उस व्यापारी की बात सुनकर चारों जल की खोज में जंगल का कोना-कोना छानने लगे। परन्तु जल कहीं नहीं दिखा। थक कर एक स्थान पर वह चारों बैठ गए। अब क्या हो? यह बिकट समस्या उनके सम्मुख थी। अचानक उन्हें सामने ऊंचा टीला सा दिखा। उसके चार भाग थ। वास्तव में वह टीला न होकर बाल्मीकि का एक शिखर था जिसके चार पृथक-पृथक शिखर थे।

उनमें से एक ने हथोड़े से एक शिखर पर प्रहार किया। आश्चर्य? वहाँ से निर्मल जल की धारा फूट पड़ी। चारों खूब खुश हुए। खूब छक कर जल पिया। जब सब तृप्त हो गए तो उन्हें लगा क्यों न दूसरा शिखर भी तोड़ा जाय? शायद इसमें से भी कुछ निकले। लोभ वश उन्होंने दूसरा शिखर भी तोड़ डाला। उसमें से स्वर्ण-चांदी आदि के अमूल्य जेवर मिले। चारों खुशी से नाच उठे।

उनमें से एक ने कहा भाइयों हमें अपने जीवन भर के लिये पर्याप्त धन मिल गया है अब आगे न जाकर हमें स्वदेश लौट चलना चाहिए। किन्तु बाकी तीनों ने कहा नहीं-नहीं हम अभी बाकी के दो शिखरों को और तोड़ कर देखेंगे।

उस व्यापारी बनिए ने कहा ठीक है बन्धुओं, तुम लोग यदि नहीं चलते तो मैं चलता हूं मुझे अब कुछ नहीं चाहिए मेरा व्यापार का ध्येय पूरा हो गया है। जितनी आवश्यकता है उतना संग्रह करना चहिए, अधिक करने से लोगों की बुरी नजर पड़ती है, चोर डाकुओं का भय रहता है तथा सन्तान दुर्गणी हो जाती है। यह कह कर वह अपना सामान उठाकार चल दिया।

थोड़ी दूर गया था कि उसे बड़े जोरों से चीखने की आवाज सुनाई दी। साथियों पर कोई बिपत्ति आई है ऐसा सोच कर वह भागा-भागा पुनः उसी स्थान पर गया। देखा चारों शिखर टूटे पड़े थे, वहीं तीनों व्यापारी भी मृत पड़े थे।

पहिले व्यापारी के जाने के बाद उन तीनों ने तीसरा शिखर तोड़ा। उसमें रत्नादि पाकर वह लोभ से पागल हो गए। और धन की आशा में उन्होने चौथा शिखर तोड़ा उसमे एक साँप का बिल था। उसने तीनों को भयंकर फुफकार से खतम कर दिया। सच है अधिक लोभ का यही दुष्परिणाम होता।

जिनकी याद सताती है—

श्रीकृष्ण जी नेवटिया

मद्रास का हिन्दी भाषा-भाषी समाज बहुत बड़ा है। समाज के समाज-सेवी, उदारचेता, सफल व्यवसायी श्रीकृष्ण जी नेवटिया के आकस्मिक निधन से पूरे का पूरा समाज हतप्रभ हो गया। श्री श्रीकृष्ण जी नेवटिया अपने परिवार के सदस्यों के साथ गंगोत्री से लाये हुए पवित्र जल चढ़ाने रामेश्वरम गये हुए थे। वहाँ से लौटते समय विरूदा-चालम् से चौदह मील दूर एक चौराहे पर से गुजरते समय उनकी कार एक ट्रक से टकरा गई और दुर्घटना-स्थल पर ही श्री कृष्णजी नेवटिया की मृत्यु हो गई। घायल होने वालों में नेवटियाजी की पत्नी, उनका पुत्र एवं पुत्रबधू प्रमुख हैं।

आप सरल एवं सुसंस्कृत व्यक्तित्व के लिये न केवल अग्रवाल समाज में बल्कि अन्य समाज में भी लोकप्रिय थे। मद्रास को शायद ही कोई ऐसी संस्था रही हो जिससे आपका आत्मिक सम्पर्क न रहा हो। श्री अग्रवाल सभा एवं गीता भवन के आप संस्थापक सदस्य थे। अग्रवाल सभा मद्रास के तो आप प्राण थे। आपके असामयिक निधन से हम एक उच्चकोटि के कार्यकर्ता, समाज सुधारक एव प्रथ-प्रदर्शक से वंचित हो गये।

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन की कार्यकारिणी के आप सदस्य सम्मेलन के वरिष्ट उपाध्यक्ष श्री बद्रीप्रसादजी के समधी थे।

श्री नरसिंहदास जी

स्वर्गीय श्री नरसिंहदास जी का जन्म जबलपुर के मारवाड़ी अग्रवाल घराने में ५ नवम्बर १९०० में हुआ था। बाल्यावस्था से ही देश-प्रेम की भावना उमड़ पड़ने के कारण १९१६ में देश-सेवा के लिए निकल पड़े।

'दासजी' सर्वतोमुखी, प्रतिभाशाली, निडर, साहसी एव धुन के पक्के थे।

अपने जीवनकाल में उन्होंने "छात्र सहोदर" नामक पत्रिका का भी प्रकाशन किया। इन सब बाह्यमुखी प्रवृत्तियों के अतिरिक्त 'दास जी' एक अच्छे कवि, वक्ता एवं व्यङ्गकार भी थे।

स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी होने के नाते 'दासजी' को अनेकों बार जेल जाना पड़ा। सन् १९४२ के "सविनय अवज्ञा' आंदोलन में जेल जाने पर पिता जी का निधन हो गया। लेकिन क्षमा माँग कर अन्त्येष्टि करना शान के खिलाफ समझा।

आप हरिजन सेवा संघ के मंत्री तथा अ०भा० हरिजन सेवा संघ के सहमंत्रीएव नगर कांग्रेस के अध्यक्षपद पर चुनेगये थे आपके सामाजिक रूढ़ियों पर अनेकों बार व्यंग समाज के हृदय को बींधकर रख देते थे। श्री दास जी १४ नवम्बर ५५ को हमसे सदा-सदा के लिए बिछड़ गये।

सदाचार-
समाजोत्थान का सार्थक साधन

—राधेश्याम अग्रवाल, कलकत्ता

यों तो प्रत्येक जाति, देश एवं धर्म, अपने-अपने दृष्टिकोण से स्वयं को उन्नत करने के प्रयास में लगे हैं, किन्तु कलिकाल में जागृत जन-जीवन में ज्योति जलाने हेतु सदाचार एवं सहअस्तित्व का प्रचुर प्रचार ही उन्नति का सार्थक साधन बन सकता है। यही बात अग्रवाल समाज की उन्नति के लिये भी लागू होती है। अतएव अग्रवाल समाज का विकास करने के लिये सद्ग्रन्थों के पठन-पाठन एवं समाज सुधार हेतु उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन आवश्यक एवं अनिवार्य कार्य हो जाता हैं। मेरी समाज के बंधुओं से प्रार्थना है कि वंश परम्परा द्वारा प्राप्त इस पथ के पथिक हमारे बन्धु-बान्धव बनें, एवं भौतिकवाद की चकाचौंध से बचकर सत्य सनातन धर्म की भित्ति पर समाज का निर्माण करें जिससे कलिकाल के प्रभाव से बच सकें, जो हर ओर व्याप्त है। तुलसीदास-जी ने लिखा है कि—

तमोगुण बहुत, रजोगुण थोरा।
कलि प्रभाव, विरोध चहुं ओरा॥
बुध जुग जाति धर्म मन माहीं
तजि अधर्म रति, धर्म कराहीं॥

अतएव आधुनिक बालक-बालिकाओं के मन पर धार्मिक विचारों का प्रभाव होना आवश्यक हैं जिससे उनमें सत्य, धर्म एवं गुरुजनों के प्रति आदर एवं सेवा के भाव प्रस्फुटित हों यथा—

सत्य वचन धर्माचरण,
वेद पुराण सो पाठ।
मातु, पिता, गुरु, अतिथि,
हरि, शरण सेव बिन गाँठ॥

यह मानव मात्र का धर्म है कि वह सत्य वचन बोले, धर्म का अचरण करे, वेद पुराण आदि धर्म ग्रन्थों का नित्य प्रति अध्ययन करे, माता-पिता, बन्धु-बान्धवों में पुनीत प्रेम रखें एवं अतिथि अभ्यागत का स्वागत करे। भगवान का यथाशक्ति भजन-पूजन नियमित करते रहें जिससे सद्भावना का उदय हो एवं सामाजिक सन्तुलन बना रहे तथा इहलोक एवं परलोक में अलौकिक आलोक जगमगाता रहे। जैसे कि—

प्रेम परस्पर पूत पुन,
संग शक्ति सनमान।
कृष्ण भजन श्रम शीलता,
उभय लोक कल्याण॥

अठारह पुराणों में वेदव्यासजी ने दो बातें मानव के अत्यन्त हित की एवं समाज सुधार की लिखी हैं—

अष्टादश पुराणेसु, व्यासस्य वचनं द्वयं।
परोपकारः पुण्यायः, पापायः पर पीड़नम्॥

राम चरित मानस में श्री तुलसीदासजी ने सरल शब्दों में लिखा है—

परहित सरित धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।

यदि उपरोक्त आदर्श पर समाज के बन्धु चलें तो समाज का उत्थान अवश्यम्भावी है।

दहेज प्रथा को हटाने में
नारी समाज
का योगदान आवश्यक

—कु० उषा एस० अग्रवाल, गोंदिया

प्रस्तुत वर्ष अतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया है । हम अनेक समस्याओं को या बड़े आकडे पत्रों में विश्व की महिलाओं के बारे में पढते हैं कि महिलायें हर क्षेत्र में कितना आगे बढ चुकी हैं । आज महिलायें भी देश की उन्नति का एक अंग बन गई हैं । महिलाओं का इतना सम्मान होने पर भी भारत जैसे संस्कृति प्रिय देश में दहेज जैसी कुप्रथा के कारण महिलाओं की जिन्दगी से खिलवाड किया जा रहा है ।

दहेज, दहेज जहां देखो वहाँ दहेज की माँग है । दहेज जो कि एक कुरीति है, आज वह इतना पनप चुकी है कि किसी भी समाज के लिये घातक होकर विस्फोट कर सकती है और इसके उदाहरण भी कम नहीं मिलते । दहेज के कारण आज समाज का वातावरण मलिन हो गया है । समाज की बागडोर कुछ इने गिने लोगों के हाथों में रह गई है जो इस जहर को हटाने के बदले उसे बनाये रखने में ज्यादा सहायता करते है । ऐसी स्थिति में वे कर्णधार इस कुप्रथा को हटाने में हमारी कुछ मदद नहीं कर सकते । इसके लिये जब तक हमारा युवा-वर्ग सामने नहीं आयेगा तब तक इनका समाधान नहीं हो सकता । हमारे आज के युवक-युवती यह निश्चय कर लें कि हम दहेज लेने व देने वालों के यहाँ विवाह नहीं करेंगे तो शायद इस समस्या का कुछ समाधान हो सकता है ।

विवाह एक संस्कार है व्यापार नहीं

विवाह एक संस्कार है । दो आत्माओं का मिलन हैं । पर इस मिलन में अगर दहेज माध्यम है, तो वह मिलन, मधुर मिलन नहीं कहलायेगा बल्कि विवाह को, ऐसी स्थिति में हम व्यापार की संज्ञा दे तो ज्यादा अच्छा रहेगा, क्योंकि जिस विवाह में लडके-लडकी की जिन्दगी का सौदा हो, वह पशु व्यापार ही तो है । इंसान तो वह है जिनके मन में इंसान के प्रति कुछ दर्द हो, हमदर्दी हो । आज यह ज्वलंत प्रश्न किसी एक के सामने नहीं खड़ा है, किसी एक माता-पिता का नहीं है बल्कि प्रत्येक माता-पिता व प्रत्येक समाज के सामने अपने विकराल जबडे फैलाये खडा है और न जाने कब, कौन उसकी गिरफ्त में आ जायेगा कुछ कहा नहीं जा सकता ।

प्राचीनकाल से आज तक दहेज की यह प्रथा लडकों को ही मान्यता प्रदान करती आ रही हैं, लडकियों को नहीं । क्या लडकियां समाज का अंग नहीं है ? प्राचीनकाल में भी लोग दहेज देते थे लेकिन आज तो दहेज की स्थिति इतनी बदल गई है कि एक गरीब मां-बाप की लडकी अपने भावी जीवन का सपना सजा ही नहीं सकती, क्योंकि उसके गरीब माँ-बाप के पास दहेज देने के लिये, सिवाय कन्यादान व प्यार के कुछ नहीं है । आधुनिक युग क्रांति का युग है, परिवर्तन का युग है । आज की पढी लिखी लडकी यह कैसे गवारा कर सकती हैं कि उसकी जिन्दगी का सौदा ऐसे युवक से हो जो दहेज का इच्छुक है अर्थात् पैसे के साथ देह का भी सौदा करता हैं । प्रायः सभी पढी लिखी लडकियां किसी न किसी कला में पारंगत होती है या दिलचस्पी रखती हैं । उनकी भावनायें कोमल होती हैं । माता-पिता के प्रति एक अनुराग की भावना होती है । दहेज के कारण वह अपने माँ बाप को दुखी नहीं देखना चाहती वह नहीं चाहती कि उसके कारण उसके माता पिता आर्थिक पतन की ओर बढें और बेटी विवाह के मंगल काम के साथ उनके अपने जीवन में घोर गरीबी का आगमन हो । कितनी दुखदाई है यह कल्पना उस कुमारी लज्जाशील कुलीन कन्या के लिये, न वह विरोध कर सकती हैं, न सहमति दे सकती है, बेबस और लाचार किसी धनाकांक्षी लोलुप का शिकार बनती हैं । उसके छोटे-छोटे भाई होंगे, बहिन होगी और गहन जवाबदारी होगी, उसी थके हारे मां-बाप पर । किन्तु थोथे सामाजिक सम्मान के नाम पर उसे चुप रहना है और अपने एकान्त, विकलता और रूदन को अपने में कहीं छटपटाते छोड़ देना है । भला कब समझेगा देश का गौरव बढ़ानेवाला वह युवक समाज जो माथे पर टीका और हाथों में मेंहदी लगाकर विवाह के लिये कन्या के द्वार पर उत्सुक खड़ा है । उसकी अपनी बुद्धि कुण्ठित है, मूर्छित है तो किसी साहसी कन्या को ही वह काम करना होगा और उस समग्र समाजके सामने विवाह मंडप में ही ललकार देना होगा, उस धन लोलुप वर पक्ष की, उन बुजुर्गों की, तब कहीं नींद टूटेगी और होश में आयेगा वह अल्हड़ युवा समाज । यह कुर्बानी नारी को करनी होगी, इस दहेज राक्षस के नाश करने में ।

देखा जाता है कि किसी तरह दहेज जुटा कर माँ-बाप विवाह भी कर देते हैं तो उस विवाह में वह प्यार नहीं होता जो दहेज की मुक्त भावना से परे विवाह में होता है । इतना ही नहीं दहेज के कारण लडकी की जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं होता. कौन से पल में उसकी जिन्दगी खत्म हो जाय कहा नहीं जा सकता । उदाहरण के लिये अगर लडकी का जीवन बीमा है तो लडके वाले धन के लालच में उसकी जिन्दगी से खिलवाड़ करने में पीछे नहीं हटेंगे फिर दूसरी लड़की से विवाह कर और दहेज पाने का उनका लालच बना ही रहेगा । इस प्रकार न जाने कितनी लड़कियों की जिन्दगी बरबाद होगी । ऐसा हमारे समाज में आज हकीकत में भी हो रहा है अब

आप ही बताइये कि दहेज कितनी हिंसात्मक कुरीति है, जिसका अति शीघ्र इतिश्री होना आवश्यक है।

नौजवान वर्ग भी दोषी

आज दहेज प्रथा को जीवित रखने में उन खूसट बुजुर्गों का उतना दोष नहीं हैं जितना आज के मूर्ख नौजवान वर्ग का है। आज का युवा वर्ग अपने उत्तरदायित्व को भूल गया हैं। उनमें संमाज को बनाने की शक्ति नहीं रह गई है। आज के युवक नपुंसक व कायर हो गये हैं, उनकी अपेक्षा वह लड़की ही अच्छी हैं जो आगे आकर तो कहती है कि मैं आजीवन कुंवारी रह जाऊँगी। लेकिन दहेज के इच्छुक युवक से विवाह नहीं करूंगी। आज नारी अपने दायित्व के प्रति जागरूक हो चुकी हैं। इस समस्या को हटाने में, अगर आज युवक अपने उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक होकर सहयोग प्रदान करे और स्पष्ट रूप से दहेज का विरोध करे तो शायद हल प्राप्त हो सकता है।

दृढता से मुकाविला करें

हमारे अग्रवाल समाज में भी यह समस्या बहुत गंभीर रूप धारण कर चुकी है। अग्रवाल समाज यह न भूले कि हिन्दू जाति की अन्तिम शक्तिशाली पुण्य व्यवस्था जाति प्रथा का नाश, यह दहेज का ही पाप करेगा। जब तक लाचार कन्यायें आयु के प्रबल वेग के प्रभाव में आकर जाति-कुजात, योग्य-अयोग्य किसी को भी अपना सतीत्व दान करेंगी और समाज में कहीं ठौर न पाकर उसी के पंक भरे घोंसले में प्रवेश करेंगी। हाल ही में दिल्ली व नागपुर में हुये अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन में इस समस्या के प्रश्न को उठाया गया और जिसमें महान व्यक्तियों ने अपने विचार भी सामने रखे। इस प्रकार सम्मेलन व सभाओं के द्वारा हम अपने समाज के व्यक्तियों में इस प्रकार की कुरीतियों को हटाने के प्रति कुछ समय के लिये क्रांति की भावना ला सकते हैं लेकिन सफलता तब है जब हम कुछ करके दिखायें। दहेज प्रथा को हटाने के प्रयास कब से चल रहे हैं पर यह दिन पर दिन गंभीर रूप धारण करती जा रही हैं। अगर हमारे समाज की प्रत्येक महिला दृढ़ता के साथ इसका विरोध करे और विरागंना की तरह अपने निश्चय पर अटल रहे तो कुछ किया जा सकता है। पर दुख इस बात का है कि हमारे समाज की अधिकांश महिलायें अपने इस उत्तरदायित्व के प्रति पूर्ण रूप से जागरूक नहीं हैं। वह चाहे तो क्या नहीं कर सकती। नारी ही वह महान शक्ति है जो अपने बच्चे को देवता बना सकती हैं और असूर भी। यदि वह कुललक्ष्मी है तो रंणागंना भी हैं। जल्द ही नारी अपने दायित्व को समझेगी और उसे दहेज की तराजू में तुलवाने वाले को, उसी के पलडे और बाटों से ठीक करके ही रहेगी। ✪

ऐतिहासिक नाटक—

मातृ भूमि से विश्वासघात

—शिवराज शास्त्री

—: प्रथम दृश्य :—

महाराज नन्द का दरबार, अग्रोहा राज्य के सभी सरदार उपस्थित, महाराज सिंहासन पर विराजमान, प्रधान मंत्री अत्यन्त चिन्तातुर, महाराज के आदेश पर खड़े होकर।

प्रधान मंत्री— अग्रकुलावशंश महाराजाधिराज ! राज्य के सिरमौर सरदारों ! आज मुझे आपकी सेवा में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण समाचार सुनाने का आदेश हुआ है।

महाराज नन्द—प्रधान मंत्री ! मेरी प्रजा केवल राजभक्त ही नहीं देशभक्त भी है। आज की सभा को देश पर आए इस नवीन संकट का पूरा समाचार सुनाओ।

प्रधान मंत्री—उपस्थित महानुभावों ! आप यह जान कर आश्चर्यचकित होंगे कि कुछ वर्ष पहले जिस संकट का हमने निवारण किया था वही संकट फिर देश पर छा रहा है।

युवराज इन्द्रसेन— प्रधान मंत्री ! क्या हमारी मातृभूमि को किसी दुष्ट ने पुनः बुरी दृष्टि से ताका है। किसकी मौत उसके सिरपर नाच रही है। क्या हमारे पूर्वजों का वीर रक्त हमारी धमनियों में नहीं बह रहा जो अनायास कोई शेरों के दाँत गिनने चला आया है।

प्रधान मंत्री—युवराज ! हमारा वही पुराना शत्रु विश्वविजेता सिकन्दर का सेनापति विलियम हमारे लोहे की परीक्षा लेने को फिर उतारू हो गया है।

युवराज—विलियम ! क्या वह भूल गया अग्रोहा की सेनाओं के शौर्य और पराक्रम को, क्या वह भूल गया कि एक बार अग्रोहा के वीर सैनिक उसे रणभूमि में धूल चटा चुके हैं और वह बुरी तरह पराजित होकर यहां से भागा था।

प्रधान मंत्रीः—निश्चय ही युवराज ! हमारी तलवार के लोहे से वह सुपरिचित है, परन्तु घर का भेदी लंका ढावे। वह अपनी पराजय के बाद हमारे घर के छिद्र ढूढने में लगा रहा हैं। उसने यह खोज निकाला है कि सिरसा के देशद्रोही गोकुलचन्द व रतनसेन के वंशज अपने जातिच्युत किए जाने का बदला अग्रोहा के राजपरिवार से ले लेना चाहते हैं। अतः विलियम ने उन्हें अपनी ओर फोड़ लिया है। वह उन्हीं के कंधे पर रख कर अपनी बन्दूक चलाना चाहता है।

युवराज इन्द्रसेन—प्रधान मंत्री ! सिरसा के गोकुलचन्द व रतनसेन ने एक

बार पहले भी अग्रोहा के विनाश की ताण्डव लीला योजित की थी। वह तो अग्रोहा के वीर सैनिकों ने उसके स्वप्नों को धूल धूसरित कर के रख दिया था। इसी अपराध में तो गोकुलचन्द व रतनसेन को सारे अग्रवाल समाज ने जाति से बहिष्कृत कर दिया था, क्या सत्ता के लोभ में सारे समाज को विनाश के गर्त में ढकेल देना कुछ कम अपराध है ?

प्रधान मंत्री—सत्य कहा युवराज ने। महाराज अग्रसेनजी ने तो अग्रवाल समाज की आधार शिला ही शुद्ध देशभक्ति एवं भाई चारे के ऊपर रखी थी। वे तो समानता व एकता में विश्वास रखते थे। अपने यहां बसने वाले प्रत्येक नागरिक को एक-एक ईट व एक-एक मुद्रा सहायता देते थे। किसी के प्रति कोई भेदभाव उनके हृदय में नहीं था। रागद्वेष वैर विरोध वे कदापि नहीं पसन्द करते थे। इस पवित्र आदर्श को कलंकित करना कोई साधारण अपराध नहीं माना जा सकता।

युवराज इन्द्रसेन—तो क्या अपने अपराध का बदला सारे समाज से लेने का भयंकर अपराध फिर गोकुल व रतन के वंशधर करने जा रहे हैं।

प्रधान मंत्री—हां यही तो समस्या है कि सिकन्दर के सिपहसालार विलियम ने शत्रुसेना के संचालन का भार भी इन्ही कुल घातकों के व मातृभूमि के द्रोहियों के सिर पर डाला है। इस बार वह बहुत बड़ी तैयारी करके अग्रोहा को नष्ट भ्रष्ट करने का मंसूबा बना कर आया है। उसकी सेना विशेष प्रकार के अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित है।

युवराज इद्रसेन—चिन्ता नहीं अग्रोहा के वीरों की धमनियों में वही पुराना रक्त बह रहा है। इस बार फिर शत्रु को धूल चटाएंगे महाराज अग्रसेन के वंशधर, एक नहीं अनेक गोकुलचन्द व रतनसेन मिलकर भी अग्रोहा का बाल बांका नहीं कर सकते। महाराज ! इस महायुद्ध में सेना का संचालन मैं स्वयं करूंगा शत्रु को वह मार मारूंगा कि उसे अपनी छठी का दूध याद आ जावे।

महाराजनन्द—युवराज ! निःसंदेह तुम वीर वंश की वीर सन्तान हो। इसी लिए हमने सारे राज पाट का भार तुम्हारे कंधों पर डाल दिया है। तुम्हारे पौरुष व बुद्धिमत्ता पर हमें पूर्ण विश्वास है। परन्तु ! इस बार शत्रु हमारे घर में फूट डालकर नष्ट करने की चाल चल रहा है इसलिए हम स्वयं भी रण क्षेत्र में तुम्हारे साथ चलेंगे। तुम्हारे रण कौशल को अपनी आखों से देखकर अपने आप को धन्य मानेंगे। प्रधानमंत्री ! सेनाध्यक्ष को इस विषय में पूरी तैयारी के आदेश दे दिए जाएं। सेना के किसी भी भाग में किसी प्रकार की कोई कमी न रहे। वीरों को नए नए उत्तम अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित करो।

प्रधानमंत्री—जो आज्ञा महाराज।

—: द्वितीय दृश्य :—

रण क्षेत्र में युद्ध के बाजे बज रहे हैं, दोनों ओर से सेनाओं में पूरी तैयारी का कोलाहल हो रहा है, यूनानी सिपहसालार सेना के मध्य में हाथी पर सवार है। युद्ध का प्रधान संचालक गोकुलचन्द व रत्नसेन के परिवार के योद्धाओं को नियुक्त कर दिया गया है। इधर युवराज इन्द्रसेन अग्रोहा के रणबांकुरे सिपाहियों की सेना का स्वयं संचालन कर रहे हैं। सिपाहियों को नए नए अस्त्रों से सुसज्जित कर दिया है। सेना के मध्य में स्वयं महाराज नन्द विराजमान युद्धस्थल की शोभा बढ़ा रहे हैं।

महाराज नन्द—युवराज ! सेना को आदेश दो कि वह पहले आक्रमण में ही शत्रु सेना का सफाया कर दे।

युवराज इन्द्रसेन—जो आज्ञा—महाराज की, परन्तु अभी हमारा गुप्तचर यह सन्देश लेकर आया है कि सेना का जन बल बहुत बिशाल है फिर भी हमारी सेना जान हथेली पर रखकर लडेगी इसमें कोई संदेह नहीं।

(युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। असंख्य सिपाही इस युद्ध क्षेत्र में काम आए)

सिकन्दर—इस समय युद्ध समाप्त करो रात्रि के समय इन्हीं राजवंशी परिवारों को महल में भेजो ताकि द्वारपाल धोखें में आकर दुर्ग का द्वार खोल दे।

विलियम—ठीक सोचा बादशाह सलामत ने। मैं अभी इन राजवंशियों को इन धोखे भरे युद्ध अभियान के लिए तैयार कर देता हूं। (पहरेदार से) जाओ राजवंशी को बुलाकर लाओ, राजवंशी उपस्थित होता है।

राजवंशी—कहिए सेनापति ! क्या आज्ञा है।

विलियम—तुम्हें मालूम है अग्रोहा के वीरों का मुकाबिला करना आसान काम नहीं। इन्हें तो धोखे से ही नष्ट किया जा सकता है। तुम भेष बदलकर किले में घुस जाओं। अपने साथ हमारी सेना के बहादुर सिपाहियों को भी लेते जाओ और किले को ही रण क्षेत्र बनादो। पीछे से मैं एवं स्वयं बादशाह सलामत बहुत बड़ी सेना लेकर किले पर आक्रमण करने आ रहे हैं। (कुल घातक गोकुलचन्द ने अर्ध रात्रि के समय जब सभी अग्रोहा वासी घोर निद्रा में सो रहे थे विलियम को साथ लेकर द्वारपाल को धोखा देकर किले का फाटक खुलवा दिया और स्वयं सेना के साथ अन्दर जाकर मारकाट मचानी प्रारम्भ करदी। अग्रोहा के सैनिक भी तत्काल सचेत होकर गोकुलचन्द व सिकन्दर आजम की सेना पर टूट पडे। कुछ घंटो के भीषण रक्त पात के बाद सिकन्दरे की सेना घबराकर किले के बाहर निकल आई। सिकन्दर ने जब अपनी पराजय का हाल सुना तो बोला—

सिकन्दर—विलियम अब तुम स्वयं सारी सेना लेकर किले में घुस जाओ। फाटक खुल ही चुके है।

विलियम—जो आज्ञा बादशाह सलामत ! लगता है हमारा भेदिया गोकुलचन्द इस युद्ध में अग्रोह के वीर सिपाहियों के हाथों काम आ चुका है।

सिकन्दर—कोई चिन्ता की बात नहीं मैं स्वयं सेना की चुनी हुई कुमक लेकर तुम्हारे पीछे ही पहुंच रहा हूं। (विलियम जाता है घनघोर विनाशकारी

युद्ध प्रारम्भ हो जाता है। पीछे से स्वयं सिकन्दरे आजम अपने चुने हुए महारथियों का प्रबल दल लेकर किले पर भीषण आक्रमण करता है इस युद्ध में महाराज नन्द व युवराज इन्द्रसेन भी बलिदान हो जाते हैं। यह समाचार महलो में पहुंचता है)

महारानी—राजकुमारों से ? मेरे लालों ? तुमने देखा हम घोर संकट में फंस गए हैं अब तो लाज तुम्हारे व भगवान के ही हाथ में है।

राजकुमार—माता जब तक हमारे शरीर में रक्त की एक बूँद भी बाकी है हम शत्रु सेना के आगे सिर नहीं झुकायेंगे हमारे लिए तलवार दो माँ ! हम अभी शत्रुओं को किले से बाहर खदेडकर आते हैं।

महारानी—यह लो तलवार बेटे। हमारा भी अन्तिम समय है मैं अभी रनिवास में सबके साथ सती होने का प्रबन्ध करती हूं।

(बालक राजकुमार घमासान युद्ध मचाते हुए शत्रुसेना पर टूट पडते हैं अन्त में स्वय शत्रुसेना के हाथों पकड़े जाकर सिकन्दर के सम्मुख पेश होते है)

सिकन्दर—विलियम ! हम इन बच्चों की वीरता से बहुत प्रभावित हुए हैं। गोकुलचन्द के वंशजों की देश द्रोहिता से हमने लाभ उठाया अवश्य, परन्तु हम बादशाह हैं। बहादुरी की कद्र करते हैं। इन बच्चों को क्षमा किया जाता है और इन्हें फिर अग्रोहा का राज्य वापिस किया जाता है। यह सच्चे हैं तो इनकी सच्चाई से कभी हमें धोखा नहीं हो सकता है। गोकुलचन्द के वंशधर जो अपने रक्त को धोखा दे सकते हैं वे हमारे कैसे हो सकते हैं समय आने पर कभी हमें भी धोखा देकर हमारे किसी शत्रु से जा मिलेंगे। जाओ ! उन सभी को यमलोक पहुंचा दो। जिससे जातिद्रोहियों का बीज भी बाकी न रहे। और हम अग्रोहा राज का अधिकार इन वीर बालकों को सौंपते हैं। यही यहाँ शासन चलायेंगे। देश द्रोहियों को समुचित दण्ड दिया जावे।

विलियम—जो आज्ञा बादशाह सलामत ? परन्तु अभी अभी महलों से समाचार आया है कि महल की सभी रानियों ने चिताएं बनाकर सती होकर अपने जीवन को बलिदान कर दिया है।

सिकन्दर—धन्य है अग्रोहा के वंशधर ? इन्हें कौन गुलाम बना सकता है। बिलियम ! सेनाओं को वापिस होने की आज्ञा दो।

(सेनाओं का वापिस प्रस्थान)

(अग्रवाल प्रगति से साभार)

समाजिक संगठन एवं विकास हेतु

सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं को अपनाओ

समाजसेवी में कार्यरत

मोतीलाल जी शोरेवाले
प्रमुख समाज सेवी
मथुरा

रामचन्द्र अग्रवाल विधायक
अध्यक्ष अधिवेशन समिति
इन्दौर

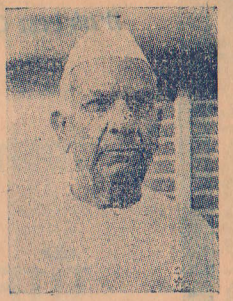

आदिराम सिंघल आगरा
प्रधान संरक्षक
अग्रबन्धु मिलनगोष्ठी

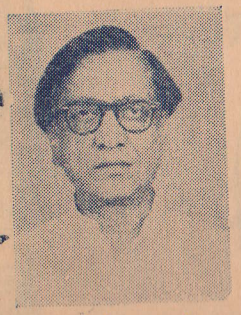

देवीलाल जी
उपाध्यक्ष अधिवेशन समिति
इन्दौर

रतनलाल गर्ग
प्रमुख सचिव अधिवेशन समिति
इन्दौर

खुट्टनलाल जी अग्रवाल
जबलपुर

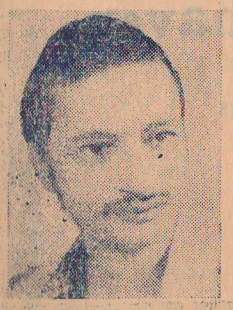

महेशचन्द्र अग्रवाल
अध्यक्ष नवयुवक मण्डल
जबलपुर

श्याम गोयल
प्रचारमंत्री श्री म.भा. अग्रवाल सभा
इन्दौर

शंकरलाल जिंदल
संयोजक रिजर्वेशन-समिति
इन्दौर

With best Compliments from :

Est. 1936

Phone : 20521

Bombay Indra Bhavan

Deluxe Restaurant & Caterers

Sayyaji Rao Road

MYSORE

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

एवं

मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा

के संयुक्त अधिवेशन पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

जेना मेटलस प्रा० लि०

६२/६४ दादी सेठ, अग्यारी लेन

बम्बई ४००००२

ग्राम : JAYTICI

फोन : 250831

शुभकामनाओं सहित :—

फोन : ३५४९२ पी० पी०

गिरधारीलाल एण्ड ब्रदर्स

बिल्डिंग मटेरियल सप्लायर्स

विशेषतायें—

- गोटन का चूना
- टाईल्स, बालूरेती, सीमेन्ट
- गेरू, रामरज, खड़िया

आदि के विक्रेता

दुकान—जवाहर मार्ग (बोम्बे रेस्टोरेन्ट के सामने, इन्दौर

हेड आफिस—२०/२ मल्हारगंज इन्दौर

शुभ कामनाओं सहित :—

मथरालाल नागरमल

तैल एवं उच्च क्वालिटी की "स्वान ब्राण्ड" दालों के निर्माता

भवानी माता रोड, कुन्दी अवार,

खण्डवा (म० प्र०) ४५०००१

तार : ओम

फोन : आफिस ३३८, २५८
घर ३९७

सम्बन्धित फर्म :

सत्यनारायन ट्रेडिंग कं०

भवानीमाता रोड, खण्डवा

संगठन और शक्ति सम्मेलन

—दुलीचन्द 'शशि', हैदराबाद

अग्रबन्धुओं शशि ने पहले भी,
तुम से कुछ बात कही है।
देख रहे हैं अभी मौन हम,
दुनिया कितनी बदल रही है।
आज देश की धरती पर भी,
परिवर्तन की आँधी आयी।
बोस सूत्र हो उठे प्रकाशित,
इन्दिरा ने वह ज्योति जगायी।
ऐसे में हम भी बढ़ आगे,
नए दौर को तिलक लगायें।
करें संघठन को अभिनन्दित,
जन-जन में अपनत्व जगाऐं।
अभी-अभी गत वर्ष संगठन,
नया रूप लेकर उभरा है।
नयी जली है दीपावलियां,
और नया आलोक झरा है।
रामेश्वर गुप्ता की कर्मठता,
मंजिल की ओर बढ़ी है।
हुआ सगठन आज पल्लवित,
ऊँचे इसकी बेल चढ़ी है।
श्रीकृष्ण मोदी के जैसा,
नेता हमको मिला आज है।
गर्वोन्नित है अग्रबन्धु सब,
गरिमामय सारा समाज है।
अग्रसेन का भव्य रूप अब,
डाक टिकिट पर आने वाला।
धन्य दिवस चौबीस सितम्बर,
होगा तोहफा भेंट निराला।
आयेगा इतिहास प्रमाणित,
भी अब हम लोगों के आगे।
अग्रोहे की पुण्य धरा पर,
शायद अब फिर वैभव जागे।
गरिमा के अवशेष मिलेंगे,
वहाँ पर अगर खुदायी होगी।
बजी संगठन का शहनाई,
निश्चित ही सुखदायी होगी।
आज संगठन के सम्बल का,
लोहा अग-जग मान गया है।
महा शक्ति का परिचायक यह,
जन-जन यह पहिचान गया है।
लेखक, कवि और कलाकार,
के साथ जोड़ कर अपना नाता।
"अग्रबन्धु" भी आज संगठन,
की शक्ति का मर्म बताता।
युग के बदले चरण आज पर,
हमने आँखें नहीं उठायीं।
अभी हमारे बीच निहित है,
ऊँच-नीच की गहरी खाई।
अभी सम्पदा की वेणीं में,
गजरा गूंथ रही मजबूरी।
अब भी रिद्धि सिद्धि का स्वामी,
देखो नाप रहा है दूरी।
दहेज विरोधी अंकुश आया,
फिर भी सौदेबाजी होती।
और धनिक के दर्वाजे पर,
आज गरीबी सिरधुन रोती।
अगर संगठन इन बातों पर,
आँख मूँद कर रह जायेगा।
तब तो स्वप्निल महल हमारा,
आँसू बन कर बह जायेगा।

महामन्त्री का प्रतिवेदन—

मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा

—लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता जबलपुर,
महामन्त्री म० प्र० अग्रवाल महासभा

मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा का निर्माण २९ दिसम्बर, १९७४ को जबलपुर में हुआ। यह समस्त अग्रवालों की एक प्रतिनिधि संस्था है जो सामाजिक कार्यों के माध्यम से समाज संगठित कर रही है। अग्रवाल समाज यद्यपि जनसंख्या के आधार पर भारतवर्ष में करीब १ करोड़ से कम नहीं पर संगठन के नाम पर प्राय शून्य सा रहा है। आपसी द्वेष और बिखराव की भावनाओं ने समाज को छिन्न-भिन्न कर रखा है। इसी कमी को महसूस करते हुए इस प्रदेशीय संगठन का प्रारम्भ हुआ है। राष्ट्रोत्थान में हर सम्भव सहयोग देते हुए हमें अपने समाज को संगठित करना है तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम-भाव जागृत करना है। प्रारम्भ में हमने अपने लिये एक विधान प्रस्तावित किया था वह कुछ कमियों के कारण सम्मेलन के दौरान उसे हम स्वीकृत नहीं कर सके। समस्त पहलुओं पर पुन: विचार करने के पश्चात् विधान तैयार कर राजनांदगांव में आयोजित कार्यकारिणी समिति में पारित किया गया जिसमें प्राय: सभी उद्देश्यों को सम्मिलित किया गया है तथा उसके अनुसार कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।

कार्य के सरलीकरण हेतु हमने प्राय: सभी संभागों में उपाध्यक्ष और मंत्री नियुक्त किये हैं जो अपने-अपने संभाग का कार्य बड़ी तत्परता से कर रहे हैं। अपने क्षेत्र के विभिन्न संगठनों के माध्यम से सभी आवश्यक कार्य इनके द्वारा ही सम्पन्न हो रहे हैं। हमने सामूहिक विवाह आयोजनों का निश्चय किया था और हमें प्रसन्नता है कि मध्यप्रदेश ने देश में इन आयोजनों की धूम मचा दी है इस वर्ष में हमारे मध्यप्रदेश में स्थान-स्थान पर अनेक सामूहिक विवाह, सम्मेलन सम्पन्न हुए जिनमें सैकड़ों विवाह सफलतापूर्वक पूर्ण हुए हैं। हमसे ही प्रेरणा पाकर अन्य समाजों ने भी यह परिपाटी अपनाना प्रारम्भ कर दिया है जो कि समाज के लिये विशेष गौरव की बात है। गहोई वैश्य समाज, साहू समाज तथा अन्य कई समाज भी अब इस तरह के सम्मेलनों में दिलचस्पी लेने लगे हैं तथा उन सबमें अब होड़ सी प्रारम्भ हो गई है। यह हमारे लिये प्रसन्नता की बात है कि अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने भी हमारे इस कार्य को बहुत सराहा है तथा इसकी आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए अखिल भारतीय स्तर पर इन आयोजनों को बढ़ावा देना प्रारम्भ कर दिया है।

मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा की कार्यकारिणी की बैठकें पिछले दिनों इन्दौर एवं राजनांदगांव में हुई जो अत्यन्त सफल रही तथा वहाँ के कार्यकर्ताओं ने जिस उत्साह और लगन का परिचय दिया वह अत्यन्त ही सराहनीय रहा।

समाज के उत्थान हेतु संगठन पहली कड़ी है जिसके द्वारा हम समाज के अभावग्रस्त घटकों की सेवा कर सकते हैं। अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता, किसी भी अच्छे कार्य के लिये सभी का सहयोग आवश्यक रहता है। संगठित होकर ही हम कोई ठोस कार्य कर सकते हैं। मध्यप्रदेशीय अग्रवाल सभा अभी अपने गिने-चुने कदम

ही आगे बढ़ा पाई है, परन्तु जो भी कदम बढ़े हैं वह दृढ़ हैं; किसी भी संस्था के प्रारम्भिक कुछ वर्ष बहुत कठिनाई के होते हैं और हमें उन कठिनाइयों से जूझते रहना है। सभा के समस्त कार्यकर्ता अपना कार्य पुर्ण लगन, निष्ठा एवं विश्वास के साथ कर रहे हैं यह सुन्दर भविष्य की निशानी है।

स्थितियों वश सभा अपने उद्देश्यों की ओर शीघ्रता से नहीं बढ़ पा रही है परन्तु हमें इससे हतोत्साहित नहीं होना है। दैवी विपत्ति, अचानक घटनाओं के मोड़ से जो कार्यकर्ता अपने क्षेत्र में कार्य नहीं कर पाये, हमें उनका उत्साहवर्द्धन कर कार्य की ओर प्रेरित करना है।

संगठन का उद्देश्य भाई-चारे को बढ़ाना है। हमें उसी ओर प्रयत्न करना है। मध्यप्रदेश के समस्त कार्यकर्ताओं का आज इस अवसर पर हम हृदय से स्वागत करते हुए अभिनन्दन करते हैं यह उन्हीं के सहयोग का प्रतिफल है कि हम आज इतनी बड़ी संख्या में पुन: नई उमंगों के साथ इकट्ठे हुए हैं।

मैं अपने उन सभी सहयोगियों का हृदय से आभारी हूँ कि जिन्होंने हर दिशा में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर संगठन को दृढ़ बनाया। आप सभी सुख समृद्धि बढ़ाते हुए समाज सेवा में रत रहें, उन्नति करें यही प्रभु से प्रार्थना है।

जय श्री अग्रसेन महाराज की।

अ० भा० एवं प्रान्तिय अग्रवाल सम्मेलन के इन्दौर अधिवेशन पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

तार :RAJ

फोन : 370

राज इण्डस्ट्रीज

निर्माता :
शिव एवं मछली मार्का दालें
भवानी माता मार्ग, खडवा (म० प्र०)

सम्बन्धित प्रतिष्ठान—
शिवजोराम शिवकरन दास एण्ड क०, खडवा

संगठन में समाचार-पत्रों का महत्व

— घनश्यामदास अग्रवाल, महामन्त्री, अग्रवाल सभा इन्दौर

जो समाज जितना ही संगठित रहा है उसने उतनी ही प्रगति की है। जो लोग जितने अच्छे उद्देश्यों के लिये संगठित रहे हैं वे उतने ही श्रेष्ठ लोग माने गये हैं। किसी भी शिक्षित समाज को संगठित रखने में संगठन कर्त्ताओं ने समाचार पत्रों का सदुपयोग किया है और श्रेष्ठ समाचार पत्रों ने अच्छे संगठनों का निर्माण करने के लिए बहुत उपयोगी भूमिका निभाई है समाचार पत्र आज युग में बहुत शक्तिशाली साधन माने जाते है। साक्षरसे लगाकर सुशिक्षित पाठक तो उससे प्रभावित और लाभान्वित होते ही हैं जो केवल सुनकर समाचारों और विचारों को समझते है वे भी समाचार पत्रों से बहुत अधिक प्रभावित होते है। अतः आज के समय में संगठन के लिये पत्र-पत्रिकाओं की अनिवार्यता स्वतः सिद्ध है।

आज कस्बों और नगरों के विचार और समाचार प्रेषता या प्रसारण का सबसे बड़ा साधन समाचार पत्र ही हैं। यह न्यून खर्च से उपलब्ध हो जाने के कारण झोंपड़ी से बंगलों तक और फुटपाथों से बड़े बड़े कार्यालयों तक सर्वत्र सुगमता पूर्वक पहुंच जाते हैं। अतः बेमिसाल बल्कि सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न विचार प्रचार साधन के रूप में प्रयुक्त होते हैं। लिखित सामग्री स्थायी रहती है। मुद्रित सामग्री नयनाभिराम रूप में लोग अधिक पसन्द करते हैं, साज सज्जा और सुन्दर आकृतियों में बने शीर्षक व चित्र और भी लुभावने होते हैं। अतः समाचार-पत्र, विचार-पूर्ण मासिक, साप्ताहिक दैनिक नियतकालिक प्रकाशन हमेशा लोगों के हाथों में दिखाई देते हैं और वे लोगों के मन और मस्तिष्क के निर्माण और विकास में बहुत बड़ा काम करते हैं। अतः अच्छे नियतकालिक प्रकाशन समाज को प्रभावित करने में सबसे अधिक समर्थ होते हैं। लोकप्रिय अधिक संख्या में प्रसारित अखबारों से जितनी जल्दी और जितना विशाल जनमत बनता है उतना और किसी दूसरे साधन से नहीं बनता। अतः आवश्यक है कि अच्छे समाज के सुदृढ़ संगठन के लिये सुरुचिपूर्ण, सुन्दर समाचार-पत्र अवश्य हों।

अनेक समाचार-पत्रों के अधिकाधिक समृद्ध और विकसित होने का रहस्य, ही यह है कि वे अधिकाधिक समाजों के अधिकाधिक लोगों द्वारा पसन्द किये जाते हैं। यद्यपि मूलशक्ति समाज देश और जनता ही है तथापि जनता को रचनात्मक काम में लगाये रखने का श्रेय अच्छे विचारों को ही है और यद्यपि इन अच्छे विचारों के श्रोत चरित्रवान और कर्मठ आदर्श और लोकप्रिय पुरुष नेता महात्मा या नागरिक ही होते हैं तथापि उन विचारों को जनता की आंखो, दिमागों और दिलों तक पहुंचाने का काम समाचार-पत्र ही बखूबी करते हैं। अतः समाज के संगठन के लिये समाचार-पत्रों का महत्व, उपयोगिता तथा आवश्यकता स्वयम् सिद्ध है। आज के समाज में हर संगठन के लिये समाचार-पत्र एक अनिवार्य और उत्तम साधन है। अग्रवाल समाज की विभिन्न स्थानों से निकाली जा रही पत्रिकाएं इस दिशा में बड़ा रचनात्मक कार्य कर रही हैं। आवश्यकता केवल समन्वय की है ताकि इनके माध्यम से कोई मतभेद उभारने के प्रयास न हों तथा समाज को एक संगठित सशक्त स्वरूप मिल सके।

मई ७६ का राशिगत भविष्य

डा० भगवत शरण अग्रवाल
प्रोफेसर क्वार्टस, अहमदाबाद

]मई मास में सूर्य मेष और वृषभ राशि में, मंगल मिथुन और कर्क राशि में, बुध वृषभ राशि में, गुरु मेष में, शुक्र मेष और वृषभ में, शनि कर्क में, राहू और यूरेनस तुला में, केतु मेष में, नेपच्यून वृश्चिक में और प्लूटो कन्या में भ्रमण करेंगे। बुध वक्री दस मई, राहू-केतू, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लेटो मास भर वक्री रहेंगे। गुरु लोप १६ अप्रैल, उदय १४ मई, बुध लोप १२ मई और शुक्र लोप १७ मई को होगा। कर्क राशि में मंगल शनि युति १२ मई को है। सूर्य ग्रहण २९ अप्रैल को हो चुका है और चन्द्रग्रहण १३, १४ मई के मध्य की रात को है। निरयण राशि भ्रमण अनुसार इन तथ्यों को ध्यान मे रखकर मासिक फल प्रस्तुत है।

मेष इस मास में राशिपति मंगल की चौथे भाव में शनि के साथ होने वाली युति व्यापार-धंधे और नौकरी में अड़चनें उत्पन्न करने वाली है। मेष राशि में होने वाला सूर्य ग्रहण स्थानान्तर योग के अतिरिक्त अस्वस्थल का सूचक भी है। गुरु की अस्तावस्था में सूर्य पर पड़ने वाली शनि की दशम दृष्टि संचित धन, मान, यश को धक्का मारने वाली सिद्ध होगी। परिवर्तन अशुभ सिद्ध हो। पत्नी का स्वास्थ्य चिन्ता उत्पन्न कराये। तुला राशि में होने वाला चन्द्रग्रहण अशुभ सिद्ध हो। शत्रू प्रबल हों, किन्तु धीरे-धीरे उन पर विजय प्राप्त हो। १४, १५ मई को विशेष सावधानी बरतें।

वृषभ प्रबल पराक्रमी शत्रु नाशक और सुख कारण योग है। परोपकार धर्म, विवाह इत्यादि के हेतु यात्रा हो, उत्सव हों। धन-व्यय बढ़े किन्तु सुख प्राप्त हो। चमत्कारिक विचार मस्तिष्क में उत्पन्न हों, जिससे व्यवसाय में एक नई दिशा खुले। इस समय किया गया खर्चा भविष्य में सार्थक लगे। सन्तान-स्वास्थ्य की चिन्ता कराने वाला योग है। १६, १७ और १८ मई को सावधान रहें।

मिथुन साढ़े साती का अशुभ प्रभाव चालू है, थोड़ी रक्षा गुरु की मिल रही थी, वह १३ मई तक अस्तावस्था में है। इसलिए १३ मई तक बहुत सावधानीपूर्वक कार्य करना है। गुरु के उदय के पश्चात धन प्राप्ति की आशा की जा सकती है। पराक्रम प्रबल रहे किन्तु शनि मंगल को दूसरे स्थान की युति खर्च भी कराये तथा स्वास्थ्य को भी खराब करे। १९, २० को विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। अग्नि, दुर्घटना तथा चोरी इत्यादि की सम्भावनायें भी कही जा

सकती हैं। पांचवा राहू, गुरु अस्तावस्था में सन्तान की चिन्ता करा सकता है। विवाह, यज्ञ, यज्ञोपवीत, तथा तीर्थ यात्रा की इस वर्ष सम्भावनाएँ हैं।

कर्क इस महीने होने वाली शनि मंगल की युति स्वास्थ्य की चिन्ता उत्पन्न करा ये तथा पत्नी से अनबन के संयोग उत्पन्न करे। सूर्य और चन्द्रग्रहण भी स्वास्थ्य खराब करने वाले हैं। मित्रों, स्नेहीजनों से प्रेम का व्यवहार करें। सम्बन्ध बिगड़े नहीं, इसकी सावधानी रखें। किसी कार्य में जल्दी न करें। दुर्घटनाओं के योग हैं। २१, २२ मई को विशेष सावधान रहें। व्यापार-धंधे-नौकरी में परिवर्तन योग है। एकाध धन-लाभ का संयोग भी है, जो मास के अन्त में है।

सिंह २३, २४, २५ मई को सावधान रहने की आवश्यकता है। पत्नी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहे। शत्रु विजय योग है। इसलिए विजय तथा प्रगति की आशा करी जा सकती है। भाग्योदय, धन-लाभ तथा पराक्रम युक्त कार्य इस मास में हो। १४ मई तक रहने वाला उच्च का सूर्य, ग्रहण से कलुषित होने पर भी, गुरु योग तथा तीसरे राहू-यूरेनस के प्रबल प्रभाव से संकटों में रक्षा करेगा और भी सुन्दर भविष्य की अपेक्षा की जा सकती है, यदि आप खर्चीले हाथ पर संयम रखें और वाणी तथा व्यवहार में मर्यादाओं का ध्यान रखें।

कन्या आर्थिक दृष्टि से कोई विशेष लाभ प्राप्त करने की आशा की जा सकती है। यह लाभ अचानक ही होने की सम्भावना है। राजनीति के क्षेत्र में विफल आशायें फिर से सफल हो सकती हैं। आवश्यकता है दीर्घ दृष्टि से ईमानदारी पूर्वक जनता के हित में सही निर्णय लेने की। स्वार्थ को छोड़कर, परमार्थ में आंतरिक शान्ति प्राप्त करने के योग हैं। २६, २७ तारीख को कोई भी कार्य करने से पूर्व पूरी सावधानी रखनी आवश्यक है। सूर्य और चन्द्रग्रहण स्वास्थ्य की चिन्ता उत्पन्न करा सकते हैं, इसलिए खान-पान में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

तुला मेष राशि में होने वाला सूर्य ग्रहण और तुला राशि में होने वाला चन्द्रग्रहण, दोनों ही इस राशि के जातकों और उनके जीवन साथियों के स्वास्थ्य को हानिकारक हो सकते हैं, यदि जन्म के ग्रह और अच्छी महादशा साथ नहीं दे रही है तो मानसिक स्वास्थ्य के लिए वाणी पर संयम और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भोजन पर संयम रखिये। इष्टदेव की पूजा, व्रत-उपवास, धार्मिक सत्संग लाभदायी होगा। दशम स्थान की शनि मंगल की युति व्यापार, धंधा, नौकरी में परिवर्तन तथा संघर्ष का सूचक है। माता-पिता के स्वास्थ्य की चिन्ता रहे। गुरु की अस्तावस्था धन प्राप्ति में अवरोध उत्पन्न करे। परिवार सुख मध्यम प्रकार का है। १, २, ३, २८, २९, ३० इन छै दिवस विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है।

वृश्चिक शरीर स्वास्थ्य सुधरने की अपेक्षा रखी जा सकती है, किन्तु बुजुर्गों के स्वास्थ्य की, विशेषकर मातुलपक्ष के मामा-नाना इत्यादि की, बड़े भाई की तबियत की चिन्ता हो सकती है। शत्रु नाश तथा परिवर्तन योग भी हैं, साथ ही व्यर्थ की दौड़धाम में पैसा खर्च होने की सम्भावना है, किन्तु उसका लाभ १९७७ के वर्ष में मिलेगा, इस वर्ष नहीं। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको

स्नेहीजनों का वह स्नेह प्राप्त नहीं होगा, जोकि आपका प्राप्य है। वाणी संयम की सार्थकता को समझ लेना आपके हित में होगा। ४, ५ और ३१ मई को अष्टम चन्द्र के समय, विशेष रूप से अग्नि और वाहन दुर्घटनाओं से अपने को बचाये रखें।

धनु ग्यारवें घर में होता चन्द्र ग्रहण और पाँचवें घर में होता सूर्य ग्रहण, शैक्षणिक कार्यों तथा आय के साधनों में विक्षेप उत्पन्न करेंगे। किन्तु यदि आप संयम और मनोबल से काम लेंगे तथा परिश्रम करने में पीछे नहीं हटेंगे, तो आर्थिक हानि से अपने को बचाने में समर्थ हो सकते हैं। राशि पति गुरु की १३ मई तक की अस्ताधस्था, सूर्य की उच्चावस्था में शनि की दृष्टि, सन्तान की चिन्ता कराने वाली सिद्ध हो। सूर्य का राशि परिवर्तन और गुरु का उदय जोकि लगभग साथ-साथ है। अर्थात १४ मई से होगा। आपकी मानसिक तथा शारीरिक संघर्ष की अवस्था में परिवर्तन लाने वाला सिद्ध होनी चाहिए। उदारता की भी सीमा होनी चाहिये और कभी-कभी मित्रों से भी सावधान रहने की आवश्यकता होती है, इसकी प्रतीत ६, ७ मई के समय हो जायेगी।

मकर शत्रुनाशक योग का मंगल अब सप्तम घर में शनि से युति करने वाला है अर्थात सप्तम शनि की उदारावस्था को संघर्ष पूर्व बनायेगा। परिणामस्वरूप जीवन संगी तथा आपके, दोनों के स्वास्थ्य पर एक प्रहार जैसा १२ मई के आस-पास दिखाई दे सकता है। व्यापार-धंधे नौकरी में भी वाणी की असंयमता के कारण कुछ हानि होने की सम्भावना है। व्यापार सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्णय लेने के सम्बन्ध में भूल होने की पूर्ण सम्भावना है। आर्थिक दृष्टि से भी मास मध्यम प्रकार का जायेगा। ८, ९ मई को परिवर्तन, बँटवारा, स्थानान्तर सम्बन्धी निर्णय लेने में सावधान रहने की सलाह है।

कुम्भ शत्रुनाशक योग है। सन्तान तथा विद्याकीय चिन्ताओं से मुक्ति के योग हैं। पराक्रम प्रबल रहे। चन्द्रग्रहण भाग्य में परिवर्तन लाने वाला सिद्ध हो। इस समय किया जाने वाला खर्च भविष्य में नई आशायें सिद्ध करने वाला हो। जमीन, जायदाद तथा अन्य सम्पत्ति के क्षेत्र में लाभ हो। जीवन साथी तथा मित्रजनों से सम्बन्ध सुधरें, बायीं आँख को गर्मी से उत्पन्न होने वाली तकलीफ से सावधान रहें। १०, ११ मई को वाणी तथा व्यवहार में सयम रखें।

मीन परिवर्तन, विभाजन, स्थलान्तर योग हैं। सन्तान की चिन्ता रहे, उसके स्वास्थ्य पर ध्यान रखें। जीवन संगी के साथ व्यर्थ के अहंकार के कारण सम्बन्ध न बिगड़े, इसका ध्यान रखें। आय मध्यम प्रकार की रहे। ग्रहणों का प्रभाव अच्छा नहीं कहा जा सकता। राशिपति गुरु के १४ मई को उदय होते समय तक व्यापार-धंधे में नया कामकाज शुरू न करने की सलाह। १२, १३, १४ मई को शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थता के प्रति सावधान रहें। इष्टदेव का स्मरण, परोपकार तथा बुजुर्गों के आशीर्वाद संकटों से रक्षा करेंगे। इति शुभम्।

मां अहिल्या की नगरी-इन्दौर

✡ कल्याण जी अग्रवाल, प्रचार सचिव, अ० भा० अग्रवाल अधिवेशन इन्दौर

मां अहिल्या की नगरी इन्दौर में आप लोगों को आमंत्रित कर इन्दौर नगर का अग्रवाल समाज अपने को गौरवान्वित अनुभव कर रहा है। १९३२ के बाद अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का पुनः मौका प्राप्त हुआ है।

सम्मेलन के अवसर पर पधार रहे जातिय बन्धुओं का इन्दौर नगर के २५ सौ परिवार स्वागत की तैयारियों में लगे हुए हैं और आशा करते हैं कि आपके मार्ग दर्शन में समाज निश्चित ही उन्नति की ओर अग्रसर होगा। इन्दौर नगर में अग्रवाल समाज का योगदान काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गोविन्दराम सेक्सरिया टैक्नालाजी इन्स्टीट्यूट का स्थान म० प्र० में अद्वितीय है, परसरामपुरिया विद्यालय जहां प्रति वर्ष सैकड़ों छात्र विद्या अध्ययन करते हैं। अग्रवाल कन्या विद्यालय और कमला नेहरू कन्या विद्यालय में प्रतिवर्ष सकड़ों छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। नगर में १४ धर्मशालाओं का निर्माण भी किया गया है।

उद्योग के क्षेत्र में स्व० जगन्नाथ जी अग्रवाल को हमेशा-हमेशा याद किया जावेगा जिन्होंने स्वदेशी काटन एण्ड फलोर मिल्स को बनाया स्व० सेठ जगन्नाथ जी ने मालवा व निमाड़ क्षत्र में अनेकानेक कारखाने प्रारम्भ किये। इनमें से आज भी कई चल रहे हैं। इसी प्रकार से तत्कालीन होलकर सरकार की ओर से मालवा यूनाइटेड मिल्स बनाया गया, जिस पर बाद में प्रसिद्ध उद्योगपति श्री कोड़ीलाल जी ने शेअर्स के आधार पर अधिकार प्राप्त किया। स्वदेशी एव मालवा मिल कुछ ही वर्ष पूर्व बीमार मिल के नाम पर शासन के हाथ में चले गये हैं।

प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ मन्नालाल जी अग्रवाल द्वारा हुकुमचन्द मिल्स को अपने मैनेजमेन्ट में लेने से अनेक जातीय बन्धुओं को सहायता प्राप्त हुई है और आज भी वे दे रहे हैं। श्री कैलाशबाबू अग्रवाल के मार्ग दर्शन में आज हुकुमचन्द मिल्स देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपना नाम रोशन कर रहा है। हाल ही में पोद्दार परिवार ने नन्दलाल भण्डारी मिल का मेनेजमेन्ट अपने अधिकार में लिया है।

१९२३ के अखिल भारतीय अग्रवाल अधिवेशन में सेठ जमनालाल जी बजाज ने भाग लिया और इस अधिवेशन में हरियाणा राज्य के मुख्य मन्त्री श्री बनारसीदास जी गुप्त भाग लेने आ रहे हैं। अधिवेशन के ठोस निर्णयों से समाज को बल मिलेगा ही साथ ही राष्ट्र के निर्माण में भी काफी योगदान करने के अवसर भी प्राप्त होंगे।

इन्दौर नगर में विश्व प्रसिद्ध कांच मंदिर है, अन्नपूर्णा का भव्य मदिर है, गीता भवन है, सुन्दर उद्यान हैं, तरण पुष्कर है पास ही उज्जैन नगर है जहां महाकाल का मंदिर है एवं शिप्रा नदी है महेश्वर, ओंकारेश्वर धार्मिक तीर्थस्थल है, ऐतिहासिक माण्डव एवं राजा भोज की नगरी धार भी है।

प्रारम्भिक कक्षाओं के किये उत्तम पुस्तकें

गणित :-

ग्रेडिड माडर्न मैथिमैटिक्स इन्ट्राडक्टरी भाग एक
ग्रेडिड माडर्न मैथिमैटिक्स इन्ट्राडक्टरी भाग दो
ग्रेडिड माडर्न मैथिमैटिक्स ग्रेड एक से पांच तक

हिन्दी :-

प्रिय भाषा भाग एक तथा भाग दो
बाल भाषा
सरल भाषा प्रवेशिका
सरल भाषा भाग एक से भाग नौ तक

—○—

गुप्ता प्रकाशन

एजूकेशनल पब्लिशर्स

डी-३५, साउथ एक्सटैंशन, भाग-१, नई दिल्ली-११००४९

With best Compliments from :

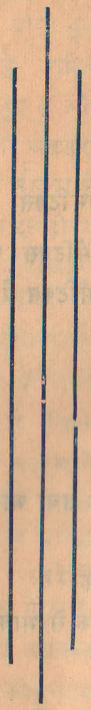

Raman Iron Foundry &
Steel Rolling Mills

Raman Tower, MATHURA-281003

Phon Office : 433
Factory : 133 | Gram : RAMAN

 "संगठन ही शक्ति है,'

संगठन शक्ति

✪ महेश दर्पण, कानपुर

इस बात से कम से कम मैं सहमत नहीं कि 'संगठन में ही शक्ति है।" शक्ति व्यक्तियों में होती है तमाम इकाइयों में बँटी शक्ति जब कहीं संगठित होती है तब उसका स्वरूप विशालता तथा व्यापकता में परिवर्तित हो जाता है। शक्ति का स्रोत व्यक्ति है संगठन नहीं। इसलिए व्यक्ति के महत्व,को कम नहीं समझाना चाहिए। संगठन का आधार भी तो व्यक्ति ही है।

संगठन और शक्ति ने अलग-अलग चीजें हैं। यदि तमाम मूर्खों का एक संगठन बना दिया जा तो उनकी शक्ति और सामर्थ्य क्या होगी ? संगठित होना एक बात है और शक्ति में वृद्धि होना दूसरी बात शक्ति के अनेक रूप होते हैं जैसे—बुद्धि, विवेक, ज्ञान, धन, पूंजी. सम्पत्ति, श्रम, योग्यता, अनुभव आदि। यह सब शक्तियाँ यदि परस्पर जुड जाएँ, मिल जाएँ तो किसी की भी सफलता असंदिग्ध नहीं। किसी भी बड़े उद्योग के लिए यह सभी आवश्यक तत्व हैं। जिस प्रकार श्रम और पूंजी मिलकर उत्पादन क्षमता में वृद्धि करती हैं उसी प्रकार यदि व्यक्तियों की सम्मिलित तथा सगठित शक्ति किसी कार्य में लगे तो उसकी उपयोगिता में निश्चित ही क्षति होगी।

एक बात 'शक्ति' के सम्बन्ध में बड़े महत्व की है। जहां हम 'संगठन' की आवश्मकता पर बल देते हैं तथा यह स्वीकार करते हैं कि संगठन में शक्ति है अन्यथा पानी की बूदों के समान शक्ति का ह्रास हो सब है। वहाँ यह भी ध्यान देने की बात है कि हम जिस शक्ति को संगठित कर रहे हैं उसके पीछे हमारा ध्येय क्या है।

प्रायः देखा जाता है कि शक्ति के साथ अहं भी विकसित होने लगता है। इस अहं को यदि बीजावस्था में ही समूल नष्ट न किया जाए तो यह शक्ति को पराजय की ओर मोड़ देता है। हमारी संगठन शक्ति विजय श्री का वरण करे यदि यह आकांक्षा है तो हमें अहं को निकाल फेंकना होगा। 'संगठन शक्ति' के सदुपयोग के लिए कुछ अन्य महत्वपूर्ण आवश्यकताएँ भी हैं। जब व्यक्ति किसी संगठन में सम्मिलित हो जाता है तो उसका व्यक्तिगत कुछ भी नहीं रह जाता। वह संगठन के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित होता है। सघर्ष प्रायः नेतृत्व को लेकर ही होता है। इस लिए नेतृत्व के प्रति अटूट विश्वास संगठन की सबसे पहली आवश्यकता है। संगठन की दूसरी आवश्यकता है अनुशासन। यदि हम अनुशासन बद्ध नहीं तो 'अपनी ढपली अपना राग' अलापते ही रहेंगे किसी की कोई क्यों सुनेगा ? इसलिए नेतृत्व और अनुशासन संगठन-शक्ति के दो पहिये हैं। एक की भी गड़बड़ी संगठन-शक्ति को कमजोर कर देगी। अतः हमें इस विचार को भी सदैव ध्यान में रखना होगा कि हम 'संगठन-शक्ति के आवश्यक नियमों का कहाँ तक पालन कर रहे हैं।

सम्मेलन की एक वर्ष की उपलब्धियाँ

—रामेश्वर दास गुप्त महामन्त्री अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन

⊖ सम्मेलन की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने महाराजा अग्रसेन के सम्मान में डाक टिकट जारी करना स्वीकार कर लिया है। आशा है आगामी अग्रसेन जयन्ती २४ सितम्बर, १९७६ को डाक-टिकट जारी होगा।

⊖ सम्मेलन ने महाराजा अग्रसेन का प्रमाणिक चित्र तैयार किया। जिसका रंगीन चित्र सर्वश्री एस० एस० बृजवासी एन्ड संस, फतेहपुरी, दिल्ली-६ प्रकाशित रहे हैं।

⊖ सम्मेलन ने अग्रवालों के प्रतीक एक ध्वज को भी तैयार किया है। इस ध्वज का देश-भर की अग्रवाल सभा-संस्थाएँ प्रयोग कर रही हैं।

⊖ सम्मेलन की तदर्थ समिति द्वारा स्वीकृत विधान नागपुर अधिवेशन में पारित किया गया।

⊖ सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत सम्मेलन का रजिस्ट्रेशन हो चुका है।

⊖ सम्मेलन का इन्कम टैक्स में विधिवत रजिस्ट्रेशन हो चुका है आशा है इन्कम टैक्स का एकजम्पशन सर्टिफिकेट भी जल्दी ही मिल जायेगा।

⊖ सम्मेलन ने अग्रोहा को एक तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए, श्री तिलकराज जी अग्रवाल के संयोजन में 'अग्रोहा विकास ट्रस्ट' के विधान का प्रारूप एवम् योजना को इन्दौर अधिवेशन में अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

⊖ सम्मेलन ने स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अग्रसेन ट्रस्ट के विधान का प्रारूप तैयार किया।

⊖ सम्मेलन देशभर की अग्रवाल सभा-संस्थाओं को एक मंच पर संगठित कर रहा है।

⊖ सम्मेलन के प्रभाव से युवा-वर्ग में नव चेतना का संचार हुआ है। स्थान-स्थान पर नवयुवक- संगठन बन रहे हैं।

⊖ सम्मेलन ने दहेज और दिखावे तथा भौंडे नृत्य एवम् अश्लील प्रदर्शनों के विरुद्ध आवाज उठाई और आन्दोलन शुरू किया।

⊖ सम्मेलन की प्रेरणा से सामूहिक-विवाहों का प्रचलन बढ़ा है, स्थान स्थान पर सामूहिक-विवाहों का आयोजन हुआ है।

⊖ सम्मेलन की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए 'अग्रवाल जाति का इतिहास के लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने आगामी अग्रसेन जयन्ती पर इस ग्रन्थ का संशोधित संस्करण प्रकाशित करना तय किया है।

⊖ सम्मेलन ने अपने सदस्यों एवम् प्रतिनिधियों के लिए स्थायी बैज की व्यवस्था की। उपरोक्त उपलब्धियों के अतिरिक्त सम्मेलन को अन्य अनेक महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है।

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन

एवं

मध्य प्रदेश अग्रवाल महासभा

के संयुक्त अधिवेशन पर

हार्दिक शुभकामनाएँ

—⊜०⊜—

नैतिक शिक्षा ही बच्चों के भविष्य का निर्माण करती है।

बच्चों का भविष्य उज्जवल बनायें,

उन्हें अच्छी किताबें पढ़ायें।

सरल नैतिक शिक्षा भाग १	०–८०
सरल नैतिक शिक्षा भाग २	०–८०
सरल नैतिक शिक्षा भाग ३	१–३०
सरल नैतिक शिक्षा भाग ४	१–३०
सरल नैतिक शिक्षा भाग ५	२–००
सरल नैतिक शिक्षा भाग ६	२–००

पूरा सैट मगवाने पर डाक-खर्च नहीं लगेगा।

प्राप्ति स्थान :—

रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थट्रस्ट पब्लिकेशन्स

डी–३६ साउथ एक्सटेंशन भाग–१,

नई दिल्ली–११००४९

अ० भा० एवं प्रदेशीय अग्रवाल सम्मेलन

पर हमारी

शुभ कामनाएँ

बुलबुल ब्रांड

उच्चकोटि के

एल्युमीनियम बर्तन एवं शीट्स

निर्माता :

मित्तल उद्योग

१/२, शिवाजीनगर, इन्दौर—४५२००३

फोन : ७१३९ निवास : ६१३५, ६५७३

(गंगाराम मोहनलाल मित्तल एन्ड सन्स का सहयोगी संस्थान)

प्रकाशक एवं मुद्रक—प्रकाश बंसल सुनिल मुद्रणालय के लिये विमल मुद्रण केन्द्र में छपा

अग्रबन्धु कार्यालय, कोकामल मार्केट, प्रयागनरायन मार्ग आगरा-३